राजभाषा भारती

अंक : 115 वर्ष : 29 अक्तूबर–दिसंबर, 2006

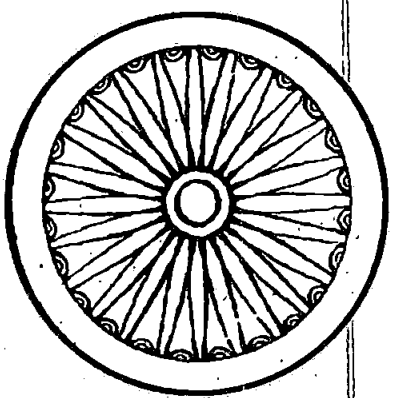

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित हिंदी दिवस समारोह में नराकास मंगलूर को "इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार" से सम्मानित करते हुए माननीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटील जी ।

पंजाब नेशनल बैंक, रांची द्वारा आयोजित राजभाषा समारोह में राष्ट्रीय गान करते हुए महामहिम श्री सैय्यद सिब्ते रजी, राज्यपाल, झारखण्ड एवं राज्य की प्रथम महिला श्रीमती चांद फरहाना ।

भारति जय विजय करे, कनक-शस्य-कमल धरे
–निराला

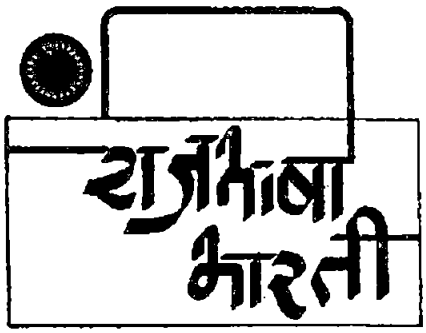

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 29

अंक : 115

अक्तूबर–दिसंबर, 2006

❑ संपादक
बिजय चंद्र मंडल
निदेशक (अनुसंधान)
दूरभाष : 24617807

❑ उप संपादक
गजराज सिंह
दूरभाष : 24698054

❑ संपादन सहायक
शांति कुमार स्याल
दूरभाष : 24698054

❑ नि:शुल्क वितरण के लिए

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

❑ पत्र-व्यवहार का पता :
संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन (द्वितीय तल),
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

ईमेल–ru-ol@mha.nic.in
patrika–ol@mha.nic.in
पोर्टल–www.rajbhasha.gov..in.

विषय-सूची

			पृष्ठ
❑	संपादकीय		(iii)
❖	चिंतन		
	1. वैश्वीकरण के परिवेश में कार्यालीन हिंदी एवं अनुवाद के स्वरूप में परिवर्तन की आवश्यकता	–डॉ. सुरेन्द्र शर्मा	1
	2. वैज्ञानिक लेखन में हिंदी अनुवाद	–ईश्वर चंद्र मिश्र	5
	3. राजभाषा कार्यान्वयन–एक विश्लेषण	–डॉ. आशा कपूर	10
	4. कृषि प्रसार के क्षेत्र में हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका	–संतराम यादव	13
	5. हिंदी साहित्य : विभाजन और विश्लेषण	–दयानाथ लाल	17
	6. वैश्वीकरण और हिंदी का प्रश्न	–अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी	23
❖	साहित्यिकी		
	7. तुलसी भाषा के आदर्श थे वाल्मीकि और हनुमान	–डॉ. पन्ना प्रसाद	26
❖	पुरानी यादें – नए परिप्रेक्ष्य		
	8. छायावाद की अखण्ड ज्योति	–छबिल कुमार मेहेर	29
❖	विश्व हिंदी दर्शन		
	9. अमरीका में हिंदुस्तानी समाचार-पत्र व पत्रिकाएं	–डॉ. संतोष अग्रवाल	33
❖	तकनीकी		
	10. इस्पातन अपशिष्ट	–सुरेश तिवारी	36
❖	पर्यावरण		
	11. वन्य जीवन संरक्षण	–दिलीप कुमार	40
❖	स्वास्थ्य		
	12. एड्स–ज़ानकारी और बचाव	–डॉ. देशराज	43

354 HA/07—1A

विषय-सूची	पृष्ठ

❖ **राजभाषा संबंधी गतिविधियां :**

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 45

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 48

(ग) कार्यशालाएं 51

(घ) हिंदी दिवस 58

❖ **संगोष्ठी/सम्मेलन** 84

❖ **पुरस्कार** 86

❖ **प्रशिक्षण** 89

❖ **आदेश-अनुदेश** 90

❖ **पाठकों के पत्र** 91

संपादकीय

14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ में राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया । भारत के संविधान के भाग-5 (अनुच्छेद 120), भाग-6 (अनुच्छेद 210) और भाग-17 (अनुच्छेद 343) में (350 तथा 351 को छोड़कर) राजभाषा संबंधी प्रावधान किए गए, तत्पश्चात् 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू होने पर हिंदी संघ की राजभाषा बनी । संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत संघ की राजभाषा हिंदी होगी और लिपि देवनागरी होगी, अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा । अनुच्छेद 343(3) में यह अधिकार दिया गया है कि 1965 के बाद भी सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने की व्यवस्था है । 1952 में हिंदी शिक्षण योजना का प्रारंभ हुआ ।

1963 में राजभाषा अधिनियम बनाए गए जो कि 1967 में संशोधित किए गए तत्पश्चात् राजभाषा हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने के उद्देश्य से संसद के दोनों सदनों में राजभाषा संकल्प 1968 पारित किया गया जिसके अनुपालन में प्रति वर्ष वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है । कहने का मतलब है कि इतने वर्षों में हिंदी को लेकर एक-एक कदम बढ़ रहे हैं । अंग्रेजी के हजारों-हजार मैनुअल, संहिताएं व तकनीकी पुस्तकें, वैज्ञानिक व विधि संबंधी अनेक प्रकार के साहित्य तथा प्रपत्र (फार्म), जो केवल अंग्रेजी में थे, न केवल हिंदी में अनूदित किए गए, बल्कि मौलिक रूप से हिंदी में तैयार किए जा रहे हैं । अब आत्ममंथन का समय है कि हम अपने लक्ष्य में कितने सफल हुए हैं ?

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने हिंदी में लाखों पर्यायवाची शब्दों का निर्माण कर हर क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग का मार्ग प्रशस्त कर दिया है । कारखानों में रोमन टाइपराइटर बनाए जाने लगे तथा टेलीप्रिन्टर व कंप्यूटर आदि अनेक आधुनिक मशीनें व तकनीकी सुविधाएं हिंदी सहित अनेक प्रादेशिक भाषाओं में भी उपलब्ध हैं । सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तो हिंदी बड़ी तेजी के साथ प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है । हिंदी बड़ी तेजी के साथ बाज़ार की भाषा बनती जा रही है ।

"राजभाषा भारती" अपने अंकों में समय-समय पर उक्त जानकारी की झलक देती रही है । इसी शृंखला को जारी रखते हुए प्रस्तुत अंक में वैश्वीकरण हिंदी अनुवाद, वैज्ञानिक, राजभाषा कार्यान्वयन, कृषि प्रसार में सूचना प्रौद्योगिकी, तुलसी भाषा, छायावाद के साथ-साथ अमेरिका में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं पर लेख प्रस्तुत हैं । तकनीकी लेखों को भी जगह दी गई है ।

इस अंक में सितंबर माह के दौरान आयोजित हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा आदि से संबंधित रिपोर्टों को अधिकाधिक स्थान देने का प्रयास किया गया है । अन्य नियमित स्तंभ भी हैं ।

उम्मीद है इस अंक को भी पाठक रुचिकर और उपयोगी पाएंगे । प्रबुद्ध पाठकों का सहयोग व उनकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी ।

–संपादक

चिंतन

वैश्वीकरण के परिवेश में कार्यालीन हिंदी एवं अनुवाद के स्वरूप में परिवर्तन की आवश्यकता

—डॉ. सुरेन्द्र शर्मा*

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा था कि "भाषा तो साधन मात्र है । साध्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास है । सड़क पर चलने वाला आदमी क्या बोलता है यह भाषा का आदर्श नहीं होना चाहिए । देखना यह चाहिए कि क्या बोलने या न बोलने से मनुष्य उस उच्चतर आदर्श को प्राप्त कर सकता है संक्षेप में जिसे मनुष्यता कहा जाता है[1] ।"

हिंदी का राजभाषा स्वरूप

निःसंदेह भाषा ही मनुष्य के संस्कारों, संस्कृति और उसकी मनुष्यता को परिष्कृत करती है । लेकिन जीवन के हर अनुशासन में हम एक ही भाषा का प्रयोग नहीं कर सकते हैं । एक भाषा के कई रूप या प्रयुक्तियां हो सकती हैं जैसे साहित्यिक भाषा, मानक भाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा या राजभाषा इत्यादि । जब हम राजभाषा की बात करते हैं तो हमारा अभिप्राय भाषा के उस स्वरूप से होता है जो सरकारी कार्यालयों में पत्राचार के लिए प्रयुक्त होता है । राजभाषा में एक अलग कूट भाषा होती है । उदाहरण के लिए कचहरियों में प्रयुक्त उर्दू मीर या दाग की उर्दू नहीं है । कार्यालयों की अंग्रेजी सलमान रशदी या अरुंधति राय की अंग्रेजी नहीं है । इसी प्रकार सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त हिंदी भी जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा या 'अज्ञेय' की हिंदी नहीं हो सकती है । कूट भाषा की अपनी ही शब्दावली होती है । वास्तव में राजभाषा जनता और सरकार के बीच एक सेतु है । अतः यह आवश्यक है कि सरकारी भाषा की शब्दावली और स्वरूप ऐसा हो कि इसे आम आदमी आसानी से समझ सके । किसी स्थानीय भाषा के राजभाषा होने की उपयोगिता तभी है जब वह वहां की आम जनता की भाषा बन सके । संविधान सभा में राजभाषा हिंदी पर चर्चा के दौरान इसके स्वरूप पर भी चर्चा हुई ।

संविधान के मसौदे पर राजभाषा संबंधी बहस के दौरान डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने यह अपील की थी कि हिंदी को अपने स्वाभाविक ढंग से विकसित होने दिया जाए और संस्कृत के अतिरिक्त दूसरी भारतीय भाषाओं से शब्द, मुहावरे ग्रहण करने की प्रक्रिया में कोई रुकावट न डाली जाए । श्री जवाहर लाल नेहरू का भी मानना था कि हिंदी को परित्यागमूलक के बदले समावेशमूलक बनाया जाए और इसमें भारत के उन सभी भाषाई तत्वों को शामिल किया जाए जिनसे यह भाषा बनी हुई है, कुछ उर्दू के छींटे हों और कुछ हिन्दुस्तानी के । लेकिन यह सब कानून का सहारा लेकर न किया जाए बल्कि हिंदी को स्वाभाविक तरीके से बढ़ने दिया जाए । संविधान के अनुच्छेद 351 में भी यह कहा गया है कि हिंदी अपने रूप, शैली और पदावली के लिए आठवीं अनुसूची में उल्लिखित सभी भाषाओं के अलावा अन्य भाषाओं की भी मदद लें । इस प्रकार विकसित होकर हिंदी क्षेत्रीयता के संकुचित दायरे से बाहर निकलेगी और एक अखिल भारतीय भाषा की गरिमा से मंडित होगी ।

कार्यालयों में प्रयुक्त की गई राजभाषा का स्वरूप

लेकिन हिंदी के विकास और इसकी शब्दावली के निर्माण के लिए जो प्रक्रिया अपनाई गई, वह इस सिद्धांत से ठीक उलटी थी । उस समय चिन्तन यह था कि संस्कृत-निष्ठ हिंदी देश के अधिकांश भागों में रहने वालों की समझ में आसानी से आएगी और जिस हिंदी में उर्दू और फारसी शब्दों का बहुल्य होगा, उसे जम्मू और कश्मीर, पंजाब, उत्तर प्रदेश, दक्षिण के कुछ क्षेत्रों और दिल्ली के आस-पास रहने वालों को छोड़कर बाकी लोगों को समझने में दिक्कत होगी । इसलिए हिंदी के संस्कृतीकरण पर जोर दिया गया और यह सब संविधान के 351वें अनुच्छेद के

*सहायक निदेशक (राजभाषा), कार्यालय, आयकर आयुक्त, केन्द्रीय राजस्व भवन, सैक्टर-17ई, चंडीगढ़-160017

354 HA/07—2.

अनुपालन के नाम पर हुआ । नव-निर्मित शब्दों का इस्तेमाल नहीं हो पाया क्योंकि ये बोझिल लगते थे, इसलिए उनकी प्रभावकारिकता की परख भी नहीं हो सकी । एक बार डॉ. राम मनोहर लोहिया ने यह टिप्पणी की थी कि हिंदी के शब्दों का प्रयोग न होने के कारण इन पर काई जम गई है जो निरन्तर प्रयोग से ही दूर हो सकती है । भाषा शब्द कोशों तथा सम्मेलनों से शक्तिशाली नही बनती बल्कि प्रयोग से बनती है ।

संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट पर बहस के दौरान श्री नेहरू ने लोक सभा में स्वीकार किया था कि जैसी हिंदी बनाई जा रही है वह सचमुच बहुत ही निराली है । वे इसको लेकर परेशान नहीं है बल्कि यह केवल झुंझलाहट पैदा कर रही है । किसी स्लाट मशीन द्वारा धड़ाधड़ हिंदी शब्दों और वाक्यांशों के बनाने का धंधा और इस सिलसिले में मौजूदा रुख बनावटी, ख्याली, बेतुका, ऊंटपटांग और हास्यापद है । जिस ढंग से हिंदी का विकास हो रहा था उस पर श्री दिनकर जी ने भी क्षोभ व्यक्त करते हुए 5 मार्च, 1958 को राजभाषा में विचार व्यक्त किया कि "जिसे हम दफ्तरी हिंदी कहते हैं, वह जरूरत से ज्यादा कठिन होती जा रही है और यह शिकायत सिर्फ उन्हीं की नहीं है जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है, बल्कि उनकी भी है जो हिंदी को अपनी मातृभाषा समझते हैं[2] ।" लेकिन संबंधित व्यक्तियों के कान पर जूं तक नहीं रेंगी और सरकारी एजेसियां पुराने ढंग से ही हिंदी का विकास करती रहीं ।

डॉ. बाबू राम सक्सेना ने 1963 में कहा था कि उर्दू से आए हुए शब्द और संस्कृत से निर्मित शब्द साथ-साथ चलते रहने चाहिएं । जनता अपनी पसंद से खुद ही उपयुक्त शब्द चुन लेगी । उन्होंने यह भी कहा कि जो अंग्रेजी के शब्द गांव में भी चालू हो गये हैं और अपना लिए गए हैं, उन्हें भी रहने देना चाहिए । भारत-रत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने सलाह दी थी कि अन्य भाषाओं के अधिक से अधिक शब्दों को लेकर उन्हें हिंदी का जामा पहना कर ऐसा बना देना चाहिए कि वे हिंदी शब्दावली में घुलमिल जाएं । लेकिन यह कागज पर ही था । कार्यविधि साहित्य, प्रशासनिक आदेशों और दूसरे सरकारी कागजों के अनुवाद में ऐसी अस्वाभाविक और बोझिल भाषा का प्रयोग हो रहा था जिसे हिंदी को भली-भांति जानने वाले भी समझने में दिक्कत महसूस करते थे । केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में काम करने वाले हिंदी अनुवादकों और हिंदी अधिकारियों की हिंदी लोगों के मजाक का विषय बन गई क्योंकि इसकी शब्दावली में रोजमर्रा व्यवहार में आने वाले शब्दों को नहीं रखा गया । वस्तुतः जो कुछ लिखा जा रहा था, वह देवनागरी लिपि में अंग्रेजी थी । अंग्रेजी का वाक्य-विन्यास था, प्रयुक्त शैली अंग्रेजी शैलीके तर्ज पर थी । अभिव्यक्तियां अंग्रेजी अभिव्यक्तियों की भोंडी नकल थी और उन्हें भारतीय परिवेश में फिट करने की तनिक भी चेष्टा नहीं की गई ।

राजभाषा हिंदी के स्वरूप को सरल बनाने के प्रयास

1967 में शिमला में आयोजित एक सेमिनार के बाद जारी किए गए वक्तव्य में कहा गया कि राजभाषा का, जिसे संपर्क भाषा का भी काम करना है, नाम चाहे जो भी रखा जाए, पर उसका स्वरूप वही होना चाहिए जिसकी महात्मा गांधी ने सिफारिश की थी और जो देश के बहुभाषिक शहरी और औद्योगिक केंद्रों में बोली जाती है । यह संपर्क भाषा, अपना रोल अदा करने के लिए विविध बोलियों और भाषाओं से शब्द लेकर स्वयं ही समृद्ध और सज्जित हो जाएगी । सन् 1972 में सरकार ने अपनी चुप्पी तोड़ी और निदेश दिया कि टिप्पण और प्रारूपण में सरल भाषा का प्रयोग किया जाए । आदेश में यह भी कहा गया कि यदि कोई कर्मचारी हिंदी शब्दावली अच्छी तरह से नहीं जानता है तो उसे देवनागरी लिपि में लिखे हुए अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करने देना चाहिए[3] ।

भारत सरकार के 17 मार्च, 1976 के परिपत्र में यह कहा गया कि :

1. नोट लिखने और पत्र लिखने में सरल हिंदी का ही प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि उसे सभी आसानी से समझ सकें । अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने के लिए सिर्फ इतना ही काफी नहीं है कि लिखने वाला खुद समझ सके कि उसने क्या लिखा है, जरूरी तो यह होता है कि पढ़ने वालों की भी समझ में आ जाए कि आखिर लिखने वाला कहना क्या चाहता है ।

2. सरकारी कामकाज में केवल आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग किया जाए । अन्य भाषाओं के आम प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी बेझिझक किया जाए ।

3. जब कभी महसूस हो कि पाठक को कोई खास तकनीकी शब्द या पदनाम हिंदी में समझने में कठिनाई होगी तो उसका अंग्रेजी पर्याय कोष्ठक मे लिखना उपयोगी होगा[4] ।

लेकिन इन आदेशों के बाबजूद कार्यालयों में प्रयुक्त मूल भाषा या अनुवाद की भाषा में कोई अंतर नहीं आया। कुछ हिंदी अधिकारियों का विचार है कि सरलता के नाम पर भाषा के स्तर को गिराया जा रहा है। सरल हिंदी का अर्थ यह कदापि नहीं है कि संस्कृत पर आधारित शब्दावली का बहिष्कार किया जाए ? वैसे यह निर्णय करना कठिन है कि किस तरह की भाषा सरल मानी जाए ? जो भाषा पंजाब में रहने वालों के लिए सरल है, वह तमिलनाडु में रहने वालों के लिए कठिन। राजभाषा आयोग ने मत व्यक्त किया कि सत्य यह है कि हमारे विशाल देश में भाषिक ढांचे बहुत प्रकार के हैं, देश के एक भाग में जो ढांचा सरल और सुबोध माना जाता है वही दूसरे भागों में सचमुच कठिन अपरिचित और दुर्बोध माना जाता है। हो सकता है कि जो भाषा किसी खास विषय पर विचार को बड़ी सुघड़ता से पेश करती हो, वही दूसरे प्रकार के विचारों को व्यक्त करने में असफल हो जाए। असली मुद्दा है आसानी से समझ में आने वाली भाषा का, न कि सरल या कठिन का। संस्कृत से लिए गए शब्दों का प्रयोग निश्चय ही भाषा को कठिन बनाता लेकिन अंग्रेजी के शब्द कौन से सरल हैं, फारसी शब्दों का तो उच्चारण भी बड़ा मुश्किल है। भाषा कठिन या आसान तो वाक्य रचना से बनती है। अंग्रेजी की शैली में लिखी हिंदी निश्चय ही कठिन होगी, चाहे शब्द जो भी प्रयुक्त क्यों न हो। केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित प्रशासनिक और पदनाम की शब्दावलियां यदि देखी जाएं तो पता चलेगा कि उनमें बहुत से प्रचलित अंग्रेजी के शब्द ले लिए गए हैं, जैसे इंजीनियर के हिंदी पर्याय में अभियन्ता के बाद इंजीनियर रखा गया है, उसी प्रकार आफिसर के लिए पदाधिकारी के साथ अफसर और पुलिस वाले के लिए आरक्षी के साथ पुलिस भी माना गया है। लेकिन अनुवादक अक्सर परिचित शब्द छोड़ देते हैं और आभयंता पदाधिकारी और आरक्षी को ही प्राथमिकता देते हैं। इससे अंग्रेजी शब्दावली तथा उसके रूप को इस्तेमाल करने के आदी कर्मचारियों को मुश्किल हो जाती है। वैसे भी आज जन सामान्य में आरक्षी या अभियंता की अपेक्षा सिपाही या इंजीनियर ही प्रचलित हैं और सभी उन्हें आसानी से समझ लेते हैं। अनुवादकों को शब्दों का प्रयोग करते समय यह देखना चाहिए कि सामान्य जीवन में उनका चलन है या नहीं। हमारी भाषा अनुवाद की भाषा नहीं होनी चाहिए। अनुवाद एक कला है। अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि पढ़ने वाले को लगे कि हम हिंदी पढ़ रहे हैं, न कि बार-बार यह पूछना पड़े कि अंग्रेजी में इसका यह रहा होगा और हिंदी में उसका यह अनुवाद किया गया है।

कार्यालीन अनुवाद के स्वरूप की वर्तमान स्थिति

लेकिन आज भी कार्यालयों के अनुवादक ऐसा अनुवाद करते हैं कि जिनके न तो शब्द समझ में आते हैं और न ही भाषा प्रवाहमय होती है। आयकर अधिनियम की धारा 10(6)(ख) के अनुवाद का एक नमूना देखिए :-

"भारत में सेवानिवृत होने के पश्चात् या ऐसी सेवा से पर्यवसान के बाद भारत के बाहर अपने देश के लिए जाने के संबंध में अपनी, अपनी पत्नी या अपने पति और बच्चों के लिए यदि नियोजक या पूर्व नियोजक से प्राप्त या उसके द्वारा देय हो[5]।"

शायद इस भाषा को न तो वह आयकर अधिकारी समझ सकता है जिसने कर निर्धारण करना है और न ही आम नागरिक जिससे यह संबंधित है। इसी प्रकार कुछ नए शब्द इस प्रकार हैं:-

1.	Orientation	अभिविन्यास
2.	Admission	अभिस्वीकृति
3.	Works of irrigation	सिंचन संकर्म
4.	Carpenter Rigger	काष्ठकार सज्जक
5.	Outlying Area	बहिर्वर्ती क्षेत्र

जिन व्यक्तियों के लिए यह अनुवाद या ये शब्द गढ़े गए हैं शायद वे इसके अंग्रेजी रूप को ज्यादा आसानी से समझ सकते हैं। ऐसे शब्दों के प्रयोग से भाषा सहज और सरल नहीं हो सकती है। भाषा का प्रयोग स्वयं में साध्य नहीं, साधन मात्र है। यदि भाषा बोझिल होगी उसमें प्रयुक्त शब्दों का अर्थ जानने के लिए शब्दकोश की आवश्यकता पड़े तो ऐसी भाषा का प्रयोग कोई व्यक्ति नहीं करना चाहेगा। यदि कार्यालयों की हिंदी अंग्रेजी से कठिन और बोझिल होगी तो उसे कोई भी व्यवहार में लाने से पीछे हटेगा। वास्तव में किसी भी देश की स्थानीय भाषा को राजभाषा बनाने के पीछे मंशा यही रहती है कि आम जनता को यह ज्ञात हो सके कि सरकार उनके लिए क्या कर रही है या करना चाहती है और सरकार को यह ज्ञात हो सके कि आम जनता की उससे क्या अपेक्षा है।

राजभाषा के वर्तमान स्वरूप में परिवर्तन की आवश्यकता

केंद्र राज्य संबंधों के बारे में 1983 में गठित सरकारिया आयोग ने भी अपनी रिपोर्ट में यह सुझाव दिया था कि हिंदी भाषा को ऐसे रूप में ढाला जाए जिससे इसे आम आदमी समझ सके। इस संदर्भ में गांधी जी द्वारा विकसित की गई हिंदुस्तानी का भी जिक्र किया गया। आयोग का कहना था कि शुद्ध हिंदी को आम आदमी ग्रहण नहीं कर सकता और इससे हिंदी का नुक्सान होगा । संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित सभी भाषाओं के शब्दों को हिंदी को अपनाना होगा। संविधान की धारा 351 के आदेश का शब्दशः और आशय के साथ अनुपालन करने से ही हिंदी का चहुँमुखी विकास होगा[6]।

उदारीकरण, वैश्वीकरण और कंम्प्यूटरीकरण के वर्तमान परिवेश में आंज भारत में विकसित या आयातित प्रौद्योगिकी को जन-सामान्य तक पहुंचाने का प्रश्न महत्वपूर्ण है। हिंदी को प्रौद्योगिकी का माध्यम बनाने के प्रति किसी भी प्रकार की उदासीनता से न केवल ज्ञान-विज्ञान और तकनीक के लाभ से हिंदी भाषा जन-सामान्य वंचित होगा अपितु इससे हिंदी का आधार भी धीरे-धीरे समाप्त होगा। लेकिन बदलते हुए आर्थिक परिवेश के अनुसार हिंदी के स्वरूप में भी परिवर्तन अनिवार्य है। हिंदी को न केवल अपने देश की विभिन्न भाषाओं के शब्दों को अपनाना होगा बल्कि विभिन्न विदेशी भाषाओं के अन्तरराष्ट्रीय पारिभाषकों को भी अपनाना होगा तथा विभिन्न शब्दों का भारतीयकरण करना होगा। इसी से हिंदी का विकास होगा और उसका आधार बढ़ेगा। किसी भी भाषा को आधुनिक बनाने का यह भी एक आधार है। जो भाषा नए आविष्कारों और खोजों से आए देशी-विदेशी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की जितनी क्षमता रखती है उतनी ही वह व्यापक होती है और जन-सामान्य में स्वीकार्य होती है। नए शब्द गढ़ने की अपेक्षा यह ज्यादा उपयुक्त है कि विदेशी भाषाओं के शब्दों को वैसे ही अपना लिया जाए। ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के नवीनतम संस्करण में हिंदी के सैंकड़ों शब्दों जैसे अच्छा, बनिया, समोसा, नाटक, भद्रलोक, मस्ती, चड्ढी इत्यादी को शामिल किया गया है। इसी प्रकार हिंदी में भी भारत में प्रचलित विदेशी भाषाओं के शब्दों को स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। आज हिंदी समाचार पत्रों की संख्या निरंतर बढ़ रही है और अंग्रेजी समाचार पत्रों की प्रसार संख्या कम हो रही है। भारतीय समाचार पत्र उद्योग के विकास पर पैरिस के स्कॉलर तारा नायर के सर्वेक्षण के अनुसार पिछले तीन दशकों में हिंदी अखबारों की प्रसार संख्या अंग्रेजी अखबारों की प्रसार संख्या से अधिक हो गई है। 1964 से लेकर अब तक हिंदी अखबारों की प्रसार संख्या 29 फीसदी बढ़ गई है जबकि अंग्रेजी के प्रकाशनों की प्रसार संख्या 15 फीसदी घट गई है[7]। इसका मुख्य कारण यही है कि हिंदी के समाचार पत्रों में हिंदी के संस्कृतनिष्ठ, कठिन, शुद्ध पण्डित-रूप की भाषा के बजाए प्रचलित अंग्रेजी शब्दोंयुक्त सहज भाषा का प्रयोग किया जाता है जिसे हर वर्ग का पाठक आसानी से समझ सकता है। लेकिन प्रशासनतंत्र की भाषा में कोई बदलाव नहीं आया है। हिंदी आज भी अनुवाद की ऐसी कठिन भाषा बनी हुई है जो आम आदमी की समझ में नहीं आती है। प्रशासन की इस भाषा को हिंदी भाषी व्यक्तियों को समझने में ही खासी कठिनाई होती है तो अहिंदी भाषी इसका कहाँ प्रयोग कर सकते हैं।

अतः आज यह आवश्यकता है कि कार्यालयीन भाषा में सरल और आम प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जाए। विज्ञान और तकनीक के नए शब्दों के लिए हिंदी पर्याय गढ़ने की अपेक्षा अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं के शब्दों को हिंदी में रूपांतरित करके प्रयोग में लाना ज्यादा सहज एवं स्वीकार्य होगा। ऐसे शब्दों को गढ़ने से कोई लाभ नहीं है जिनका उपयोग ही न हो सके। अनुवाद में आम प्रचलित शब्दों का ही प्रयोग किया जाए। इसके लिए अनुवादकों को विशेष तौर पर निर्देश दिए जाएं अन्यथा उनका अनुवाद कार्य एक औपचारिकता बन कर रह जाएगा और सारा प्रयास व्यर्थ ही जाएगा।

[1] द्विवेदी श्री हजारी प्रसाद : विश्वभाषा हिंदी संस्कृति और समाज, प्रभात प्रकाशन, 1992, नई दिल्ली. पृष्ठ 77 ।
[2]द्विवेदी श्री सुधाकर : हिंदी अस्तित्व की तलाश, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1982 नई दिल्ली : पृष्ठ 232 ।
[3]द्विवेदी श्री सुधाकर : हिंदी अस्तित्व की तलाश, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1982 नई दिल्ली : पृष्ठ 234 ।
[4]विभाग राजभाषा : का.ज्ञा.सं. 11/13034/23/75-रा.भा.(ग) दिनांक 17-3-1976, नई दिल्ली : राजभाषा ।
[5]अधिनियम आयकर 2002, धारा 10(6)(ख), आयकर निदेशालय (गं.सा.प्र. व ज.सं.) नई दिल्ली : पृष्ठ 152।
[6] आयोग सरकारिया की रपट, भाग-2, धर्मयुग, 23 अप्रैल, 1989, पृष्ठ 684 ।
[7]चावला प्रभु, संपादक, इंडिया टुडे, 15 जून, 2004, इंडिया टुडे, हेमिल्टन हाऊस, नई दिल्ली : पृष्ठ 17 ।

वैज्ञानिक लेखन में हिंदी अनुवाद

—ईश्वर चंद्र मिश्र*

विज्ञान एक व्यापक संकल्पना है और वैज्ञानिक लेखन उस व्यापकता को भाषा में समेटने का गंभीर एवं रचनात्मक प्रयास है । भारत में विज्ञान संबंधी चिंतन-मनन की अपनी परंपरा रही है, किंतु विश्व के बहु संदर्भी वैज्ञानिक अवदानों को आत्मसात करने के लिए, उसे भारतीय भाषाओं में दर्ज करने के लिए अनुवाद के अलावा दूसरा विकल्प नहीं है । इसलिए वैज्ञानिक लेखन में हिंदी अनुवाद अथवा हिंदी में वैज्ञानिक लेखन की समस्याएं अलग-अलग नहीं हैं । इस विषय पर विचार करने के लिए आवश्यक है कि पहले 'विज्ञान' की संकल्पना को समझने का प्रसास करें । अगर लोहे की जानकारी को ज्ञान कह लें तो उससे चुंबक तक पहुंचना विज्ञान होगा और इस जानकारी के आधार पर कंपास बना लेना विज्ञान पर आधारित प्रगति कहलाएगा । यह विदित ही है कि कंपास एक यंत्र है जिसका उपयोग समुद्र यात्री दिशाओं का ज्ञान प्राप्त करने के लिए करते हैं । यह ठीक है कि किसी विषय का विशिष्ट ज्ञान 'विज्ञान' है। हिंदी में इसकी मूल अवधारणा दार्शनिक रहस्यों और ब्रह्मांड के गूढ़ार्थों को अपने में समाहित किए हुए प्रतीत होता है । किंतु अपने पारिभाषिक अर्थ में 'विज्ञान' अंग्रेजी शब्द साइंस का प्रतिशब्द है, अर्थात् Science का 'जो आशय है, उसकी जो संकल्पना है वह सब 'विज्ञान' के लिए भी लागू है । अत: हिंदी में साइंस को समझना और विज्ञान को समझना एक ही बात है । यहां ध्यान देने योग्य बात है कि हिंदी में काफी समय तक राजनीतिशास्त्र, इतिहास और समाज तथा संस्कृति में संबद्ध अध्ययन को विज्ञान नहीं मानते थे, जबकि यूरोप में इन विषयों से संबद्ध अध्ययन को 'साइंस' मानने का प्रचलन था । यह तथ्य 'साइंस' के कोशगत अर्थ से भी स्पष्ट है जो इस प्रकार है'

1. ब्रह्मांड के रहस्यों का ज्ञान,
2. विभिन्न प्रकार की सूचनाओं अथवा तथ्यों का संग्रह,
3. ज्ञान की कोई शाखा, और
4. किसी अकादमिक अध्ययन का विषय क्षेत्र ।

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि विज्ञान अनंत को बांधने की साधना है । ब्रह्मांड के अनेक रहस्य अब भी रहस्य बने हुए हैं, जबकि हम विज्ञान के एक उन्नत युग में जी रहे हैं । जिज्ञासा विज्ञान की जननी है, ज्ञानकी भूख मनुष्य में सहजात है । किसी में होती है, किसी में जगानी पड़ती है । जब दृष्टि अनवेशी हो, वस्तुपूरक हो, पर्यवेक्षण के प्रति ईमानदारी और लगनशीलता हो, अपने पर्यवेक्षण को प्रयोग द्वारा साबित करने का माद्दा हो, विचार प्रक्रिया और निष्कर्ष को व्यक्त करने में मानसिक खुलापन और साहस हो तब समझना चाहिए कि हममें विज्ञान के मूल्यों के प्रति आस्था है अथवा हम वैज्ञानिक चेतना संपन्न मनुष्य हैं । जिस समाज में वैज्ञानिक लेखन पिछड़ा होगा, निश्चय ही वहां वैज्ञानिक चेतना के लिए वातावरण उत्साहविहीन होगा ।

जिसे हम प्रयोगशाला में परख सकें, विज्ञान वहीं तक सीमित नहीं है । विज्ञान पूर्णत: मानवीय विवेक और उसकी तर्क प्रवणता की परिणति है । विज्ञान मनुष्य के बुद्धि वैभव का प्रकाश है । अपने परिवेश के प्रति जागरूकता, वस्तुओं के रहस्य और घटनाओं के कारण तत्वों का अन्वेषण मनुष्य का वैज्ञानिक व्यवहार है । जो व्यक्ति प्रचलित मान्यताओं पर प्रश्नाकुलता से विचार नहीं करेगा, किसी विश्वास को तर्क की कसौटी पर परखने को उद्यत नहीं होगा तथा खोज और अविष्कार की हरेक घोषणा को यथानुरूप मान लेगा उसे

*अनुवाद तथा प्रशिक्षण अधिकारी, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, पाँचवा तल, डी विंग, केंद्रीय सदन, कोरमंगला, बैंगलूर-560034

354 HA/07—3A

लिए गए हैं, क्योंकि शुद्धतावादी दृष्टि से उनका पर्याय गढ़ना अत्यंत कठिन है, दूसरे अगर गढ़े भी जाएं तो उनकी स्वीकार्यता संदिग्ध होगी ।

इस दृष्टि से एक अन्य स्थिति यह है कि भारत की भाषाई विशेषताओं और संस्कृत के विपुल साहित्य की अर्थगत सक्षमता को ग्रहण कर अंग्रेजी के हजारों वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों का पूर्णता संप्रेष्य पर्याय बनाए गए हैं । Climate के लिए जलवायु, Atmosphere के लिए वातावरण, Environment के लिए पर्यावरण, Airforce के लिए वायुसेना, Missile के लिए प्रक्षेपास्त्र, Aircraft के लिए विमान, Pollution के लिए प्रदूषण आदि ऐसे ही कुछ उदाहरण हैं । हिंदी में विज्ञान की संकल्पनाओं के लिए पारिभाषिक शब्द विकसित करना सबसे बड़ी समस्या है । यहां कोशगत अर्थ अपनी विशिष्ट भंगिमा लिए रहता है । फिर कोश में उपलब्ध शब्दों की पूंजी से यहां काम नहीं चलता, नए शब्द गढ़ने पड़ते हैं । कई स्थलों पर परंपरा के शब्दों को अर्थ का नया संस्कार देना पड़ता है । रामायण में विमान अथवा पुष्पक विमान का प्रकरण सर्वविदित है । बाद में विज्ञान की संकल्पना Aircraft के लिए "विमान" को लिया गया जिससे गढ़े गए पारिभाषिक शब्द इस प्रकार हैं :

(1) Aeronautical Development = वैमानिकी विकास

(2) Department of Aeronautics = वैमानिकी विभाग

(3) Civil Aviation = नागर विमानन

"भारती" शब्द हिंदी में विद्या की देवी सरस्वती के लिए पर्याय है । "भारत भारती" नाम गढ़कर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने "भारती" शब्द का अर्थविस्तार कर दिया । यह भारत की सांस्कृतिक एवं भौगोलिक विशिष्टताओं का बोधक बन गया । कुछ वर्ष पहले भारत सरकार के Broadcasting तथा Telecasting संबंधी निगम का नाम "प्रसार भारती" रखा गया है । यहां उल्लेखनीय है कि 80 के दशक में सरकार के समक्ष इंडियन एअरलाइन्स और एअर इंडिया के लिए क्रमशः विमान भारती और आकाश भारती नाम रखने का प्रस्ताव आया था । अंग्रेजी शब्द Monsoon जिसे हिंदी में फिलहाल मानसून ही लिखते हैं, वस्तुतः मौसम का बदला हुआ रूप है । कोश में ऋतु और मौसम अंग्रेजी के Season के पर्याय हैं किंतु मानसून वर्षा की स्थिति से, समुद्र से चलने वाली हवा की परिस्थितियों से संबद्ध है । इसलिए विज्ञान संबंधी लेखन में अर्थ की भिन्न तथा आपवादिक स्थितियां होती हैं । इसलिए विज्ञान के पारिभाषिक शब्दों के अपने संदर्भ होते हैं ।

हिंदी में विष और जहर हैं, जबकि अंग्रेजी में Poison, Toxin और Venom हैं और इनके अपने सुनिश्चित अर्थ संदर्भ हैं जिन्हें हिंदी में अंतरित करते हुए ये पर्याय बनाए गए हैं :–

Poison = विष

Toxin = आविष

Venom = जीविष

ऐसे पदार्थों हेतु Toxin एक रासायनिक नाम है जो नशा उत्पन्न करते हैं, (जैसे कि चाय अथवा कॉफी में Toxin होता है) सांप और बिच्छू जैसे जीवों में प्राप्त जहर Venom है, इसे जैव विष कह सकते हैं । जीव-विष अर्थात् जीविष, लोपीकरण से बना हुआ पर्याय है । वैज्ञानिक लेखन में अनुवाद की भूमिका भाषा को आधुनिक और अर्थ-सक्षम बनाने से जुड़ी हुई है। अंग्रेजी Geometry के लिए हिंदी में ज्यामिति अथवा रेखागणित पारिभाषिक शब्द हैं । ग्रीक शब्द Geo का अर्थ है पृथ्वी और Metron का अर्थ है मापना । अतः Geometry एक विज्ञान के रूप में भूमि को मापने की आवश्यकता से बना हुआ है । यह निश्चय ही रेखाओं का, परिधि (ज्या) की माप का मामला है । अतएव हिंदी में Geometry का पर्याय अपनी परंपरागत संकल्पना का नवीन अर्थ में प्रयोग के आधार पर है । किंतु Geology और Geography के लिए प्रचलित हिंदी पर्याय भू-विज्ञान तथा भूगोल में Geo का मूल अर्थ अर्थात् भू अथवा भूमि सक्रिय है । अंग्रेजी Hyper से अनेक संयुक्त शब्द बने हैं । जब उनका हिंदी पर्याय बनाते हैं तो कभी "उच्च और कभी अति" की सहायता लेनी पड़ती है, जैसे–

Hypertension = उच्च रक्तचाप

Hyperaesthesia = अति संवेदिता

Hyperbolic expressions = अतिशयोक्ति पूर्ण अभिव्यक्ति

इससे स्पष्ट है कि वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दों का निर्माण अध्ययन और सृजन

का मौलिक क्षेत्र है जिसके लिए व्यक्ति को विज्ञान और भाषा का अधिकारी होना चाहिए जो कि प्रायः अत्यंत कठिन होता है। हर देश वैज्ञानिक संकल्पनाओं की व्याख्या अपनी भाषाई परंपरा में करता है और उसका लक्ष्य विषय को बोधगम्य बनाना होता है। कई बार अगली खोजें पहली खोजों के नाम और उसकी व्याख्या को संदिग्ध एवं निरस्त बना देती है। तथापि, पहला नाम चलता ही रहता है, क्योंकि तब तक वह रूढ़ हो चुका होता है, जैसा कि अणु और परमाणु शब्द के साथ हुआ है। वस्तुतः वैज्ञानिक सिसृक्षा में अनुवाद वैज्ञानिक वादों का प्रतिचाहत स्थापित करता है।

वैज्ञानिक लेखन में हिंदी अनुवाद समर्पण और सृजनात्मकता का मौलिक क्षेत्र है तथा इसकी संभावनाएं अनंत हैं। यह कार्यक्षेत्र भारत में फिर भी उपेक्षित है और इसके कारणों की तरफ यहां ध्यान दिलाना अप्रासंगिक नहीं होगा। भू-विज्ञान के संदर्भ में "भूभाग विश्लेषण प्रणाली और उसकी उपयोगिता" शीर्षक लेख राजभाषा भारती (अक्तूबर-दिसंबर, 1995) में छपा था। लेख के बारे में संपादकीय टिप्पणी देते हुए श्री राजकुमार सैनी ने लिखा है : "विज्ञान के क्षेत्र में नित नए अनुसंधान होते रहते हैं लेकिन इनसे सभी व्यक्ति लाभान्वित नहीं हो पाते। इसका एक कारण यह है कि ये अनुसंधान कार्य हिंदी माध्यम से नहीं किए जाते हैं।" उक्त लेख के लेखक डॉ. रा.अ. चांसरकर (पूर्व निदेशक, रक्षा भू-भाग अनुसंधान प्रयोगशाला, पुणे) ने अपने अनेक शोधपत्र हिंदी में प्रस्तुत किए। यहां उल्लेखनीय है कि डॉ. चांसरकर हिंदीतर मातृभाषा के भू-वैज्ञानिक हैं। हमारे देश में ऐसे लोगों के कार्य को समुचित प्रोत्साहन नहीं दिया जाता। यह युग अर्थ की प्रधानता का है और इस दृष्टि से हिंदी में वैज्ञानिक लेखन करने वालों के समक्ष स्थिति निराशाजनक है। इसका आशय यह है कि हिंदी में वैज्ञानिक लेखन के लिए सक्षम व्यक्ति यदि स्वयं से पूछे कि यह कार्य क्यों करें तो स्वांतः सुखाय व्यक्तिगत उत्साह और निष्ठा को छोड़कर दूसरा आश्वस्तकारी उत्तर नहीं मिलेगा। यहां तक कि वैसे लेखकों को प्रकाशक भी जल्दी नहीं मिलते। यदि वैसी किताबें हिंदी में छप गईं तो उसको खरीदने वाला नहीं मिलता। ऐसी निराशाजनक परिस्थिति में उत्तम कोटि की प्रतिभाएं अपना योगदान करने इस दिशा में नहीं आतीं। 1950 से 1970 के बीच ऐसे लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए प्रांतीय प्रकाशन अकादमियां गठित की गई थीं। आज उनकी गतिविधियों का पता नहीं चलता। इस राष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी से बड़ा मंच नहीं हो सकता जहां इस बारे में सकारात्मक सोच विकसित करने के लिए सुविचारित कार्य योजना तैयार की जाए और उन पर अमल हो। अनुवाद वैसे विवाद की विधा है। हो सकता है, वैज्ञानिक लेखन में इसे निर्विवाद बनने का वैज्ञानिक आधार मिल सके। ■

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं है। मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।

—लोकमान्य तिलक

354 HA/07—4A

राजभाषा कार्यान्वयन : एक विश्लेषण

—डॉ. आशा कपूर*

वर्तमान शिक्षा में हिंदी का स्थान नगण्य-सा है और अपेक्षा यह की जाती है कि राजभाषा के रूप में प्रशासनिक कार्यों में हिंदी को अपनाया जाए। राजभाषा प्रयोग में अपेक्षित प्रगति दिखाई नहीं दे रही है। मेरे विचार से निम्नलिखित कारण उत्तरदायी कहे जा सकते हैं–

1. शिक्षा में हिंदी का स्थान

प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर बाल हृदय पर यह छाप छोड़ दी जाती है कि हिंदी अपनी भाषा है, इसे सीखने का कोई महत्त्व नहीं है। परिणामत: न तो वर्णमाला का सही ज्ञान कराया जाता है और न हिंदी में गिनती सीखना आवश्यक समझा जाता है। इसी कारण तीस से आगे हिंदी के अंक जानने वालों की संख्या अत्यन्त विरल है। अभिभावक सहित शिक्षक भी इसे आधुनिकता की ओर बढ़ते कदम मानकर आनंदित होते हैं।

राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग करने की अनिवार्यता बताई जाती है उसे शिक्षा में कहीं भी सम्मान नहीं दिया जाता है। इतना ही नहीं उच्च शिक्षा के लिए तो हिंदी को अक्षम सिद्ध कर दिया गया है। प्रश्न उठता है कि जब सम्पूर्ण शिक्षा में हिंदी का स्थान महत्त्वहीन हो गया है तो वह राजभाषा के रूप में कैसे स्थापित हो सकती है ?

जीवन के पच्चीस वर्षों तक अंग्रेजी की अनिवार्यता, तदनन्तर हिंदी में प्रशासनिक कार्य करने की बाध्यता। दोनों में कोई सामंजस्य नहीं है। मुख्य रूप से यही कारण है कि उच्च पदासीन होने के उपरान्त राजभाषा अपनाने के प्रति दायित्व बोध जागृत नहीं होता।

इस संबंध में श्री हरिबाबू कंसल के शब्दों में कहना उचित होगा—"प्रशासनिक क्षेत्र में अंग्रेजी का वर्चस्व है इसलिए नहीं कि हिंदी दुर्बल है अपितु इसलिए कि भारतवासियों को अपनी सामर्थ्य पर विश्वास नहीं था, तथा उन्होंने इस क्षेत्र में हिंदी अपनाने का निश्चय नहीं किया। इसी प्रकार संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में अंग्रेजी का प्रश्न पत्र अनिवार्य है " किंतु हिंदी का नहीं, इस प्रकार हिंदी पढ़ने की अनिवार्य आवश्यकता नहीं रह जाती है और अंग्रेजी का वर्चस्व बना रह जाता है। यही सचिव स्तर पर प्रशासनिक अधिकारी बनकर राजभाषा हिंदी को यथोचित स्थान प्रदान करने में प्राय: असमर्थ रहते हैं।

2. भाषा की कठिनता

भाषा विचारों के परस्पर आदान-प्रदान का माध्यम होती है। भाषा जितनी सरल एवं सुबोध होगी, संप्रेषण में उतनी ही सफल और सशक्त होगी। राजभाषा विषयक पारिभाषिक शब्दों का निर्माण प्रचलित शब्दों से हटकर किया गया है जिससे वे जटिल और बोझिल बनकर कृत्रिम प्रतीत होते हैं, पूर्व प्रचलित शब्दों को भी बदल दिया गया है जैसे–

रसीद के स्थान पर पावती, टेंडर के स्थान पर निविदा, शिकायत—परिवेदना, निदेशक व निर्देशक—डायरेक्टर के लिए दो शब्दों का प्रयोग, फार्म—प्रपत्र, सिफारिश—अनुशंसा इत्यादि। इस प्रकार के शब्दों की सूची बहुत लम्बी है। यदि प्रचलित शब्दों का व्यवहार करने की छूट दी जाए तो राजभाषा हिंदी का प्रयोग आगे बढ़ जाए।

इतना ही नहीं शब्दकोष से विभिन्न पर्यायों में से कठिनतम शब्द का प्रयोग किया जाना एक कारण है।

किसी वैज्ञानिक लेख में Ventilation के लिए 'संवातन' शब्द का प्रयोग किया गया, जबकि शब्दकोष में वायु संचार भी दिया गया था। क्या ऐसे लेख को रुचिपूर्वक पढ़ा जाएगा ? नहीं, हिंदी पर कठिनता का आरोप अवश्य लगा दिया जाएगा।

*प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिंदी कक्ष, मानविकी विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की (उत्तरांचल)

354 HA/07—4B

इसके अतिरिक्त यूरोपीयन, अंग्रेजी तथा जापानी भाषाओं के वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में जो पारिभाषिक शब्द आते हैं, उन सभी शब्दों को रूपान्तरित करने की आवश्यकता नहीं है बल्कि जो अतिप्रयुक्त या अंतर्राष्ट्रीय शब्द हैं उनका अनुवाद करने या पर्याय खोजने की अपेक्षा इन्हें यथावत् ग्रहण करना चाहिए इससे भाषा में प्रवाह बढ़ेगा ।

सरकारी पत्राचार आदेश, फाइलों पर टिप्पणियां जिस भाषा में लिखी जाती हैं, व्यावहारिक अर्थों में वह राजभाषा होती हैं किंतु इसे समझना हिंदी का सम्यक् ज्ञान रखने वाले के लिए भी दुरुह होता है । प्राय: यह कहा जाता है कि ऐसी हिंदी से तो अंग्रेजी ही ठीक है । तो यहां हिंदी के प्रति दूरी किसने बढ़ाई? हम हिंदी वालों ने ही ऐसे शब्द गढ़ दिए जिससे अपनी भाषा से विराग हो गया ।

आरम्भ से ही राजभाषा के संबंध में स्पष्ट दिशा-निर्देश नहीं दिए गए थे कि भाषा सरल एवं स्वाभाविक होनी चाहिए, दुरुह एवं बोझिल नहीं । कृत्रिम एवं क्लिष्ट शब्दों से भाषा लोकप्रिय नहीं बनती ।

सरकारी कार्यालयों में प्रयोग की जाने वाली हिंदी के संबंध में जो निर्देश दिए गए हैं वे निम्न प्रकार हैं–

1. टिप्पणी लिखने या पत्र लिखने में सरल हिंदी का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, ताकि उसे आसानी से समझा जा सके । अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने के लिए सिर्फ इतना ही पर्याप्त नहीं है कि लिखने वाला खुद समझ सकें कि उसने क्या लिखा है, आवश्यक यह है कि पढ़ने वाले को भी समझ में आ जाए कि लिखने वाला कहना क्या चाहता है?
2. जहां यह प्रतीत हो कि पढ़ने वाले को हिंदी में लिखे किसी तकनीकी शब्द या पदनाम को समझने में कठिनाई हो सकती है वहां उस शब्द को कोष्ठक में अंग्रेजी रूपान्तर देना उपयोगी होगा ।

वस्तुत: राजभाषा को सरल एवं सुग्राह्य बनाए जाने पर बल दिया जाना चाहिए । कुछ वर्षों पूर्व ब्रिटेन की भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती मारग्रेट थैचर ने अपने सरकारी कर्मचारियों को सरल भाषा प्रयोग करने के निर्देश दिए थे ।

"Let the speech be short, avoid long sentences and endless paras, use shorter words, write try for attempt, about for 'concerning' more for additional. Use abbreviations only when you are sure, the reader knows what they mean, otherwise explain them."

प्राय: हिंदी भाषी क्षेत्रों में मूल पत्र अंग्रेजी में ही तैयार किए जाते हैं उनका अनुवाद हिंदी में कर दिया जाता है इससे द्विभाषिकता के नियम धारा 3(3) का अनुपालन हो जाता है । इस प्रकार राजभाषा हिंदी अनुवाद की भाषा बनकर रह गई है उसमें स्वाभाविकता, प्रवाह एवं मौलिकता का अभाव दिखाई देता है ।

3. राजभाषा का प्रयोग किस स्तर पर हो ?

राजभाषा अधिनियम के अंतर्गत प्रतिवर्ष चार कार्यशालाएं आयोजित की जानी आवश्यक हैं । इनमें विशेष रूप से ख तथा ग वर्ग के कर्मचारी भाग लेते हैं और उनकी किसी सीमा तक हिंदी प्रयोग करने की मानसिकता भी बन जाती है किंतु 'क' वर्ग के अधिकारीगण अंग्रेजी प्रयोग के अभ्यस्त होने के कारण व्यामोह को छोड़ नहीं पाते हैं और स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होता है । वस्तुत: राजभाषा का प्रयोग निचले स्तर से नहीं ऊपर के स्तर से करना होगा ।

केवल निचले स्तर के कर्मचारियों को हिंदी में काम कराने का पाठ पढ़ाना हिंदी को दूसरे दर्जे की भाषा बनाना होगा । जब ऊपर स्तर के अधिकारी अपना काम हिंदी में करने का आदर्श प्रस्तुत करेंगे तब नीचे स्तर के कर्मचारियों को प्रोत्साहन मिलेगा और हिंदी अपने राजभाषा के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगी ।

कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रतिभागियों का अधिकतर ध्यान स्थान, भ्रमण, दी जाने वाली सामग्री के प्रति रहता है । उन्हें भलीभांति ज्ञात है कि बिना अधिकारी वर्ग की इच्छा के राजभाषा का रथ तीव्र गति नहीं पकड़ सकता है । थोड़ी बहुत आंकड़ों में वृद्धि अवश्य हो जाएगी ।

4. मीडिया में हिंदी का स्वरूप

एक ओर राजभाषा के रूप में हिंदी का क्लिष्ट एवं असहज किंतु शिष्ट स्वरूप दिखाई देता है, दूसरी ओर मीडिया की हिंदी में इस भाषा के केवल छींटे दिखाई देते हैं या फिर अमर्यादित, अप्रचलित शब्दों की भरमार रहती है । यह सच है कि लिखित एवं बोलचाल की भाषा में अन्तर

रहता है किंतु शिष्टता एवं मर्यादा का निर्वाह सर्वत्र किया जाता है ।

दूरदर्शन के सभी चैनलों पर समाचार में चलताऊ हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है—भारत ने पाकिस्तान को पटखनी दी, अमुक ने अमुक को लताड़ा, जमकर बरसे, घमासान इत्यादि शब्दों से भाषा को सामर्थ्य नहीं अपितु फूहड़पन झलकता है । इतना ही नहीं प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति के नामों के पूर्व आदर सूचक शब्दों का प्रयोग लुप्त हो गया है—कलाम ने कहा, मनमोहन बोले, अटल ने चुटकी ली इत्यादि ।

विदित है भाषा सीखने के लिए समाचार पत्रों तथा रेडियो से प्रसारित समाचारों को सशक्त माध्यम समझा जाता था, किंतु आज ऐसा नहीं है । भाषागत एवं वाक्यगत त्रुटियों को देखकर आश्चर्य होता है ।

एक अन्य उदाहरण, ख्यातिप्राप्त दैनिक समाचार पत्र "दैनिक जागरण" (30 दिसंबर 2005 कानपुर संस्करण) में प्रकाशित समाचार का एक नमूना देखें, जिसमें हिंदी के शब्द केवल सर्वनाम एवं क्रिया तक सीमित हैं—"लाल गुब्बारों का डेकोरेशन । हर वीकेंड पर रेव थ्री स्थित डिस्कोथेक फिलिक्स में आयोजित होने वाली वीकेंड पार्टी इस शनिवार पूरी तरह क्रिसमस के रंग में रंगी नजर आई ।" अन्य उदाहरण—"अपने नाती की फर्स्ट बर्थ डे पर . . . .माम, नेहा, नॉटी लुकिंग बर्थ डे ब्वॉय, फ्रेंड विकास, डेकोरेशन आइटम्स" इत्यादि ।

क्या इसे हिंदी कहा जाए या देवनागरी लिपि में अंग्रेजी शब्दों को हिंदी मान लिया जाए—यह निर्णय सुधीजन करेंगे ।

राजभाषा के सफल क्रियान्वयन में मीडिया में प्रयुक्त हिंदी की भी बड़ी भूमिका है—एक ओर तत्सम् शब्दों से युक्त भाषा प्रयोग करने की अनिवार्यता है, वहीं मीडिया में धड़ल्ले से अंग्रेजी तथा चलताऊ भाषा के शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है । विचार करें—दोनों रूपों में कितना विरोधाभास है?

यह पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्तमान शिक्षा में हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान नहीं है । सम्पूर्ण दिवस में केवल कुछ समय के लिए प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग किया जाना है वह भी उत्साहपूर्वक नहीं, अपितु बाध्यतावश, फिर मीडिया में प्रयुक्त हिंदी को सुनना अथवा पढ़ना । कैसे राजभाषा के अनुपालन के लिए स्वयं को तैयार करें परिणामतः स्मरण नहीं रहता है—

हिंदी में हस्ताक्षर करना

पत्रों में हिंदी में पते लिखना, तथा

हिंदी में द्विभाषी फार्म भरना ।

उपर्युक्त विश्लेषण का अर्थ यह नहीं है कि राजभाषा क्रियान्वयन की स्थिति निराशाजनक है अपितु यह स्पष्ट करना है कि जिस निष्ठा से हिंदी को राजभाषा का पद प्रदान किया गया था वह सर्वत्र दृष्टिगत नहीं हो रही है । ऐसा समझा जाने लगा है कि केंद्रीय उपक्रमों, संगठनों, संस्थानों तथा मंत्रालयों में स्थित केवल हिंदी प्रकोष्ठ अथवा इनसे संबद्ध अधिकारियों-कर्मचारियों के लिए ही राजभाषा का अनुपालन करना आवश्यक है । अपनी भाषा प्रयोग करने पर प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार, पदक मानपत्र, वेतन वृद्धि इत्यादि प्राप्त करना उचित नहीं प्रतीत होता है, ऐसा उदाहरण विश्व में कहीं नहीं मिलता है ।

भाषा केवल प्रयोग से आगे बढ़ती है जैसे कि अंग्रेजी भाषा । हिंदी में सर्वत्र श्रेष्ठ वाक्यों अथवा नारों के बोर्ड लगा देने को प्रयोग नहीं कहा जा सकता है अपितु प्रत्येक नागरिक को हिचकिचाहट, हीन मानसिकता अथवा प्रलोभन के बिना इसे उन्मुक्त हृदय से अपनाना होगा, तभी हम अपने दायित्व निर्वाह में सफल हो सकेंगे । ■

भारतीयता का दूसरा नाम हिंदी है ।

—भगवती चरण वर्मा

कृषि प्रसार के क्षेत्र में हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका

—संतराम यादव*

भारत एक विशाल देश है । देश के विस्तृत भू-भाग में फैले हुए क्षेत्रफल में विभिन्न भाषा-भाषी लोग यहां निवास करते हैं । भारत के सभी अट्ठाइस राज्यों और आठ संघ शासित प्रदेशों में भिन्न-भिन्न भाषाएं बोली जाती हैं । संविधान की अष्टम अनुसूची के अनुच्छेद 344(1) और 351 में वर्णित राज्यों की बाईस राजभाषाएं इस प्रकार हैं--असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलुगू, पंजाबी, बंगला, मराठी, मलयालम, संस्कृत, सिंधी, हिंदी, नेपाली, कोंकणी, मणिपुरी, बोड़ो, संथाली, मैथिली, डोगरी इत्यादि । सभी राज्य सरकारी कामकाज अपनी-अपनी भाषाओं में करने के लिए स्वतंत्र हैं परंतु केंद्रीय स्तर पर अर्थात् केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में केवल हिंदी को ही राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है ।

हिंदी भाषा के विकास के लिए संविधान में यह स्पष्ट निर्देश है कि हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके । प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी के ओर आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत के अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से, शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें । सूचना प्रौद्योगिकी के कारण जिस गति से विकास के नए आयाम जुड़े हैं उससे पूरी दुनियां ने एक गांव का स्वरूप ले लिया है । बाजार के बदलते परिवेश तथा बदलती हुई अर्थ-व्यवस्था ने भारत जैसे देश को उदारीकरण और वैश्वीकरण की नई अवधारणा दी है ।

आज के परिवेश में विश्व व्यापार और गांव की भाषा का स्थान भले ही अंग्रेजी ने ले लिया हो लेकिन सवाल यह उठता है कि किसी भी राष्ट्र का कितना प्रतिशत कारोबार विश्व बाजार से संबंधित है । विश्व बाजार से संबंधित कार्यों को यदि छोड़ भी दिया जाए तो अन्य देशी बाजार के व्यवहार को तो हम कम-से-कम देशीय भाषा में कर ही सकते हैं आज भले ही सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का प्रभुत्व हो, लेकिन नैतिक व सामाजिक शिक्षा, सामान्य व्यवहार, धार्मिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में भारतीय भाषाएं ही अभिव्यक्ति का एक अच्छा माध्यम सिद्ध हो रही हैं । भावनात्मक, सांस्कृतिक एकता में हिंदी व भारतीय भाषाओं की अहम् भूमिका है । भले ही सरकारी आदेशों की पालनार्थ ही सही हिंदी का प्रयोग हमें एक बोझिल कार्य लगता हो, फिर भी अपने देश की संस्कृति की अभिव्यक्ति के रूप में हमें हिंदी को एवं अन्य भारतीय भाषाओं को जीवंत रखना ही होगा ।

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है एवं संपूर्ण देश में इस भाषा को समझा जा सकता है । सामान्य जन संपर्क माध्यम के रूप में बोचचाल की हिंदी प्राय: देश के सभी प्रदेशों में प्रचलित है । जहां तक बोलने व लिखने का प्रश्न है, उसमें कठिनाई हो सकती है परंतु हिंदी समझना शायद इतना कठिन नहीं है । इसके साथ-साथ एक फायदा यह भी है कि बहुत से शब्द ऐसे भी हैं जो हिंदी , अंग्रेजी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में समान रहते हैं या सामान्यत: प्रयोग किए जाते हैं । कुछ ऐसे भी शब्द हैं जो समान नहीं हैं किंतु समझ में आ जाते हैं । इसमें संस्कृत का बहुत बड़ा योगदान है क्योंकि आधुनिक भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत ही है और सभी भाषाओं में समानता का इस भाषा को सूत्रधार कहा जा सकता है ।

आज मानव-जीवन के समस्त कार्यकलाप एवं क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी की उपस्थिति साफ नज़र आती है । सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक और यहाँ तक कि धार्मिक पत्र आदि कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जो इसके प्रभाव से अछूता रहा हो । आज सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न साधन-उपकरण अपरिमित क्षमता से संपन्न हैं-व्यक्ति

*सहायक निदेशक, केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, संतोषनगर, हैदराबाद-500 059

354 HA/07—5A

इनका जितना चाहे उपयोग अथवा दोहन कर सकता है । परंतु यह तभी सार्थक सिद्ध हो पाता है जब यह हमारी अपनी मातृभाषा के माध्यम से उपलब्ध हों । देश में हिंदी का प्रसार हो रहा है और इसे हम अनेकानेक क्षेत्रों में अनुभव कर सकते हैं । उदाहरणस्वरूप इलैक्ट्रानिक मीडिया, प्रिंट मीडिया, सरकारी, अर्थ-सरकारी, निजी क्षेत्र व गैर-सरकारी संगठनों, अनुसंधान संस्थानों, वाणिज्य-व्यापार और जनसंपर्क के स्तर पर इसका यथार्थ अनुभव किया जा सकता है ।

सरकार की ओर से राजभाषा के प्रचार-प्रसार में बहुत अधिक धनराशि खर्च किए जाने के बावजूद भी जिस कार्य को हम इतने वर्षों में नहीं कर पाए उसे संचार क्रांति ने पलक झपकते ही कर दिखाया । इसका श्रेय मीडिया को जाता हैं । इसमें भी प्रिंट मीडिया के स्थान पर श्रेष्ठता का सेहरा इलैक्ट्रानिक मीडिया के सिर पर बंध गया है । यह कार्य इतना आसान नहीं था । आरंभ में संचार क्रांति के समय किसी ने राजभाषा हिंदी का प्रयोग करने में कोई विशेष रुचि भी नहीं दिखाई । परंतु चूंकि उन्हें अपने व्यापार का विस्तार करना था तो इसे उनकी विवशता कहें या फिर समय की मांग कहिए । उदारीकरण का युग आया । सरकार ने दिल खोलकर इसमें सहयोग दिया । भारत में विदेशी व्यापार केवल उच्च वर्ग के बल पर संभव नहीं था । मध्यम और निम्न वर्ग को आकृषित करना परमावश्यक था । यही वह दुखती रग थी जिसे इलैक्ट्रानिक मीडिया ने समय पर पकड़ लिया और हिंदी चैनलों की भरमार हो गई । आज बच्चों के लिए हिंदी में कार्टून के अनेक चैनल उपलब्ध हैं, स्टार समूह के अनेक चैनल धड़ाधड़ चल रहे हैं, जी.टी.वी. भी पीछे छूटना नहीं चहता था तो सोनी भी इस भागदौड़ से दूर क्यों रहता । डिस्कवरी ने मज़बूरी वश इसे अपनाया तो भारतीय चैनलों में सहारा ने भी एक ओर कदम आगे बढ़ाया । आज टी.वी. ऑन करते ही हिंदी भाषा के रूप में अपनी मनचाही इच्छा पूरी करते हैं । इससे जहाँ एक ओर उनके व्यापार में वृद्धि हुई, वहीं राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार भी हो रहा है । जो कार्य भारत सरकार इतने दिनों तक नहीं कर पा रही थी उसे इलैक्ट्रानिक मीडिया ने पूरा कर दिखाया है ।

अब यह जानना भी आवश्यक है कि बोचचाल की हिंदी कौन सी है या किसे कहते है । जब संपर्क में आने वाले दो व्यक्तियों में से एक की भाषा हिंदी हो और दूसरे की हिंदी से अलग भाषा हो और हिंदी में बात की जाती हो तो उसे हम बोलचाल की भाषा कहते है । दूसरे, जहां संपर्क में आने वाले दो व्यक्तियों की भाषा हिंदी से अलग हो और एक दूसरे की भाषा न जानते हों तथा वे हिंदी में काम चलाते हैं तो वह बोलचाल की हिंदी कहलाती है ।

अंतर्क्षेत्रीय हिंदी

अंतक्षेत्रीय हिंदी की बोलियाँ जो संख्या में दूसरी सभी भाषाओं से अधिक हैं, जैसे-खड़ी बोली, हरियाणवी, ब्रज, कन्नोजी, बांगरू, बुंदेली, अवधी, छत्तीसगढ़ी, मैथिली, भोजपुरी, मारवाड़ी, मेवाती, कुमायूनी, गढ़वाली, हिमाचली, जयपुरी, भागड़ीया, राजस्थानी, कौरवी, निमाड़ी, बघेली, मगही, दूढ़ारी, हाड़ोती, मेवाती, मालवी, जौनसारी, भद्रवाही, कलुई, आदि । वास्तव में ये ऐसी बोलियाँ हैं जो भौगोलिकता के आधार पर वर्गीकृत हैं और ये हिंदी क्षेत्र के अंतर्गत मुख्य रूप से बोलचाल के रूप में प्रचालित है । ये प्रदेशिक या स्थानीय बोलियाँ अलग-अलग भाषाएं नहीं है अपितु एक ही भाषा के विविध रूप हैं (जिस भाषा का प्रादेशिक विस्तार जितना विस्तृत होगा, उसमें ऐसी प्रादेशिक बोलियाँ अधिक संख्या में पाई जाती हैं ।) यह भी कहना गलत न होगा कि हिंदी का व्यवहार क्षेत्र काफी विस्तृत है और इसलिए उसकी बोलियाँ अधिक संख्या में पाई जाती हैं । कहना न होगा की हिंदी का व्यवहार क्षेत्र काफी फैला हुआ है और इसलिए उसकी बोलियों की संख्या भी अधिक है । बोलचाल में प्रचलित सामान्य हिंदी और उर्दू में बहुत ही कम अंतर है । लेकिन साहित्यिक हिंदी और साहित्यिक उर्दू में बहुत अंतर है । हिंदी संस्कृत की ओर जाती है तथा उर्दू अरबी, फारसी की ओर जाती है । अभी तक हमने हिंदी या बोलचाल की हिंदी का ही परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास किया है किंतु अब हम अपने वास्तविक क्षेत्र में आ रहे हैं कि कार्य क्षेत्र में अहिंदी भाषी अनुसंधानकर्ताओं द्वारा हिंदी भाषी क्षेत्रों में कैसे काम किया जाए ।

प्रसार क्षेत्र में भाषा प्रयोग

देश में केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों व कार्यालयों, राज्य सरकार के कार्यालयों, सरकारी व गैर-सरकारी संस्थानों जैसे—भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR), वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (CSIR), भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (ICMR), भारतीय सामाजिक-विज्ञान अनुसंधान परिषद् (ICSSR), भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (ICCR), भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद् (ICHR), राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान

354 HA/07—5B

(NIRD), कुटीर उद्योग, गैर सरकारी संस्थाएं, जैसे अचार व मुरब्बे, जैम, जैली आदि बनाने वाली कंपनियां, जल प्रबंधन से जुड़े कार्यालय, पर्यावरण, खाद्य प्राधिकरण आदि-आदि संस्थाएं अनेक कार्यों में अनुसंधान व प्रसार कार्यों से संलग्न हैं। इसलिए हमारे अनुसंधान विकास और प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु यह परमावश्क है कि वे द्विभाषी जानकर व्यक्तियों की सहायता से प्रसिद्ध स्थानीय शब्दों का प्रयोग करना सीखें।

हम जब भी अपने अध्ययन या अनुसंधान कार्य के लिए अपनी मातृभाषा वाले राज्यों को छोड़कर अन्यत्र राज्यों में जाते हैं तो कुछ कठिनाइयां हमारे समक्ष उभर कर आती हैं। इसी प्रकार जब अहिंदी भाषी अनुसंधानकर्ता हिंदी बोलने वाले प्रांतों में जाते हैं तो उन्हें भी अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है। ऐसी स्थिति में अहिंदी भाषी अनुसंधानकर्ताओं को कुछ मुख्य शब्द, जो बोलचाल में सहायक सिद्ध होते हैं, उन्हें अपनाकर प्रयोग करना चाहिए। अंग्रेजी के भी कुछ शब्द ऐसे हैं जो आजकल ग्रामीण इलाकों में काफी प्रचलित हैं और आम आदमी आसानी से समझ सकता हैं। इतना ही नहीं, कुछ ऐसे भी समान शब्द हैं जो हिंदी, संस्कृत, तेलुगू, बंगला, उड़िया आदि भाषाओं में प्रयोग किए जाते हैं। यह आवश्यक है कि जब कि हम ऐसे प्रांत में अनुसंधान कार्य के लिए जाते हैं तो ऐसे शब्दों की एक सूची बना लेनी चाहिए जिससे कि जब हम गाँव वालों से वार्तालाप करते हैं तो ऐसे शब्द उनके साथ ही उच्चारित करें ताकि हम अपनी बात आसानी से उन्हें समझा सकें।

गांवों में प्रचलित अंग्रेजी शब्द

पार्लियामेंट, प्रेजीडेन्ट, प्राइम मिनिस्टर, मिनिस्टर, मैंबर, इलैक्शन, पंचायत, विलेज पंचायत, कोरम, प्रेजिडेन्ट, सूपर सीड़, रिजर्व कैन्डीडेट, कमेटी, रिजर्व सीट, सैड्यूल कास्ट, बैकवर्ड क्लास, एग्रीकल्चर, बी.डी.ओ., एस.डी.ओ., डी.एम., सी. एम., कलैक्टर, पुलिस, एस.पी., डी.एस.पी, लीडर, असैम्बली, एम.एल.ए., कैबीनेट, एम.पी., प्राइम., मिनिस्टर, एग्रीकल्चर ऑफिसर, डेयरी डॉक्टर नर्स, हॉस्पीटल, स्कूल, टीचर, स्टाफ, इलैक्ट्रीसिटी, रोड़, मार्केट, बस स्टाफ(स्टेशन), बस सर्विस, रेलवे स्टेशन, ड्राईवर, कन्डक्टर, ट्रैक्टर, रूरल डेवलपमैंट, आर.डी.स्कीम, डी.आर.डी.ए., आई.आर.डी.पी., बैंक लोन, सबसिड़ी, कोऑपरेटिव सोसाइटी, सर्विस गवर्नमेंट, सेन्टर गवर्नमेंट, स्टेट गवर्नमेंट, इम्पलीमेंट, टी.वी., रेडियो प्रोग्राम आदि बहुत सारे ऐसे शब्द हैं जिनकी सहायता से हम बोल व समझ सकते हैं।

समान शब्द

इसी तरह से कुछ ऐसे भी शब्द हैं जो कई भाषाओं में समान रूप से प्रचलित हैं, जैसे-कृषि विभाग, वाणिज्य, मत्स्य विभाग, शिक्षा विभाग, शिक्षण, साक्षरता, उद्योग, उद्योग प्रणाली, राष्ट्र, देशम, विज्ञान, पुस्तक, भोजन, जल, जन्मभूमि, शासन, नीलू, नीरू, बंधु, कुटुंब परिवार, स्त्री, कुटीर उद्योग इत्यादि। इतने ही नहीं, अनेक ऐसे शब्द हैं जिनके सहारे हम कार्य क्षेत्र में काम चला सकते हैं।

वास्तविक कार्य क्षेत्र आरंभ करना

इस कार्य की प्रक्रिया काफी लम्बी है। राज्य सरकार से आरंभ होती है, जिला स्तर पर पत्र व्यवहार एवं विचार-विमर्श होता है, खण्ड स्तर एक तरह से हमारा मुख्य बिंदु बन जाता है और प्रायः खण्ड से सारा कार्यक्रम चलाया जाता है। किंतु खंड स्तर पर भी प्रायः अहिंदी भाषी शोधकर्ताओं को कठिनाइयाँ आती हैं क्योंकि अंग्रेजी समझना और बोलना उनके लिए कठिन होता है। इसलिए यह परमावश्यक है कि वहां पर किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश की जाए जो आपकी भाषा कुछ समझ सके और खुद कुछ मिश्रित भाषा के माध्यम से अपनी बात आप तक पहुँचा सकें। जो आपका यहाँ आने का मुख्य उद्देश्य है, वह सरल भाषा में अपने पास उपलब्ध शब्द सूची की सहायता से उन्हें समझाएं। वहां से पूरी सूचना एकत्र करनोपरांत हमें गांवों की ओर जाना पड़ता है क्योंकि वही वास्तविक रूप में हमारे कार्य की मुख्य धुरी है।

अनुसंधान सहायकों की आवश्यकता

प्रायः जब भी हम अध्ययन हेतु जाते है तो अन्वेषणकर्ता की आवश्यकता पड़ती है, किंतु अनुसंधान सहायकों की नियुक्ति के समय हमें काफी आवश्यक पहलूओं को मद्देनजर रखना चाहिए और खासकर ऐसे स्थान पर, जहाँ आपको भाषा की समस्या हो। पहली बात ध्यान में रखने की है कि जब आप जिस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, वहां की बोली क्या है (रीजनल डायलैक्ट)। उसी के आधार पर जो उस बोली को समझ सके और बोल सके ऐसे व्यक्ति को ही रखना चाहिए, क्योंकि अक्सर हम शहर के लड़कों को नियुक्त कर लेते है। और उनके लिए भी स्थानीय भाषा एक समस्या बन जाती है। योग्यता, व्यवहार, कार्य कुशलता, ईमानदारी आदि बहुत सारे ऐसे गुण हैं जो अनुसंधान कार्य के लिए अनिवार्य होते हैं। अतः इन सभी योग्यताओं को हमें ध्यान में रखना चाहिए। अगर उसी क्षेत्र के पढ़े लिखे लड़के, लड़कियाँ उपलब्ध हो

सकें तो यह सबसे अच्छा होगा । क्योंकि भाषा की परेशानी नहीं होगी और स्थानीय होने के नाते सभी एक दूसरे को जानते पहचानते रहेंगे जिससे काम करने में आसानी होगी । अनुसंधान सहायकों को प्रशिक्षण देना भी इसी काम का एक हिस्सा है । उन्हें यह बताना चाहिए कि पहले मित्रता का माहौल बनाइए फिर अपना उद्देश्य समझाइए, सरल भाषा का प्रयोग करें, जवाब देने वाले के जवाब को सही समझना, साफ-साफ लिखना, अर्थ सही रूप में आना, आदि ।

लाभार्थियों से मिलना

एक और आवश्यक बात हमें ध्यान में रखनी चाहिए कि हम जब भी उत्तरदाता के पास जाते हैं तो हमारा व्यवहार कुशल होना बहुत ही आवश्यक है । उससे कहिए कि हमें आपकी सहायता की जरूरत है और यदि आप समय निकाल सकें तो हमें आपसे कुछ सवाल पूछने हैं । यदि उत्तरदाता कहता है कि मुझे खेत में जाना है तो आपको भी उसके साथ खेत पर जाने को तैयार रहना चाहिए । सभी लाभार्थियों को या उत्तरदाताओं को कभी भी एक जगह पर इकट्ठा नहीं करना चाहिए । यदि उत्तरदाता औरतें हैं तो महिला अन्वेषणकर्ता (इन्वैस्टीगैटर) को नियुक्त करना चाहिए । प्रश्नावली में सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए । यदि कोई बात समझ में नहीं आती है तो उत्तरदाता को उदाहरण देकर समझाना चाहिए । कभी-कभी अनुसंधानकर्ता अपना कार्य शीध्र पूरा करने के चक्कर में किसानों को झूठा आश्वासन दे आते हैं कि हम तुम्हें पैसे दिलवाएंगे या फिर अन्य आर्थिक सहायता से संबंधित वायदे कर आते हैं । इसका परिणाम यह होता है कि यदि उन्हें इसका लाभ नहीं मिलता है तो अनुसंधानकर्ता की साख गिर जाती है और अगली बार जब हम उनके पास जाते हैं तो कोई भी किसान सहयोग देने के लिए तैयार नहीं होता । यदि भाषा की समस्या है तो हमें सरल से सरल भाषा प्रयोग में लानी चाहिए । मिश्रित भाषा के प्रयोग से काम आसानी से लिया जा सकता है । अनुसंधान अधिकारियों की प्रश्नावली संक्षिप्त व सरल होनी चाहिए । उसे स्थानीय भाषा में अनुदित होना काफी लाभकारी सिद्ध हो सकता है । कई बार उत्तरदाता स्वयं प्रश्नावली पढ़कर जवाब लिखता है ।

अहिंदी भाषी अनुसंधान अधिकारी को कुछ मुख्य-मुख्य बातें हिंदी में बोलने का प्रयास करना चाहिए । यह आवश्यक नहीं कि कोई गैर हिंदी भाषा अधिकारी शुद्ध हिंदी में ही बात करें । जैसा कि हमारा अभ्यास बताता है कि यदि आप अपनी भाषा से अलग भाषा में यदि कुछ शब्द भी बोल सकें तो दूसरी भाषा वाला व्यक्ति प्रायः उसका अर्थ समझ लेता है, कभी इशारों से भी काम सरल हो जाता है । ये कुछ ऐसी बातें हैं जिसके माध्यम से अहिंदी भाषा अधिकारी हिंदी भाषी प्रान्तों में तथा हिंदी भाषा अधिकारी अहिंदी भाषी क्षेत्रों में जाकर अपना अनुसंधान कार्य आसानी से कर सकता है ।

अब तो भारत सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा एक अरब से भी अधिक बहुभाषी भारतवासियों को परस्पर एक-दूसरे के समीप लाने हेतु भाषा तकनीकी के विकसित उपकरणों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए दिनांक 20 जून, 2005 को निःशुल्क हिंदी सॉफ्टवेयर जारी किया है । इसमें फॉन्ट, कोड परिवर्तक, वर्तनी संशोधक, ओपन ऑफिस, मैसेंजर, ई-मेल क्लायंट, ओ.सी.आर., शब्दकोश, ब्राउज़र, ट्रांसलिटरेशन, कॉर्पोरा, शब्ध संशाधक अदि सुविधाएं उपलब्ध हैं । इस सॉफ्टवेयर को या तो उपरोक्त विभाग से सीधा संपर्क स्थापित कर प्राप्त किया जा सकता है या फिर www.idlc.gov.in और www.idlc.in वेबसाइटों पर पंजीकरण करनोपरांत निःशुल्क सी.डी. के रूप में मंगाया जा सकता है ।

अंत में यही कहा जा सकता है कि यदि वास्तव में हमें अपनी वैज्ञानिक उपलब्धियों को सामान्य जन तक पहुंचाना है तो हमें उन्हीं की भाषा व बोली को अपनाना होगा जो कि हमारे ज्ञान के प्रसार के साथ-साथ विकास कार्य में भी सहायक होगी । हमें किसान के समक्ष प्रस्तुत की जाने वाली पाठ्य सामग्री उनकी समझ में आसानी से आ जाने वाली भाषा में ही प्रस्तुत करनी होगी । यदि ऐसा संभव न हो सके तो क्षेत्रीय भाषाओं के चर्चित शब्दों का चयन करते हुए उन्हें प्रयोग में लाना होगा । विशेषकर किसान मेला, किसान दिवस, प्रदर्शनी, प्रशिक्षण कार्यक्रमों आदि में न केवल हिंदी-अंग्रेजी का प्रयोग करना होगा अपितु क्षेत्रीय भाषाओं को समाहित करते हुए त्रिभाषी शब्दों का प्रयोग करना पड़ेगा, जिससे कि अधिकाधिक लोग उससे लाभान्वित हो सके । हिंदी न केवल पढ़े-लिखे लोगों को ही सिखानी पड़ेगी अपितु अनपढ़ या ग्रास रूट तक के लोगों को भी वैज्ञानिक उपलब्धियां प्रदान करने हेतु हिंदी समझानी पड़ेगी । कृषि प्रसार के क्षेत्र में वैज्ञानिकों के लिए यह कार्य जटिल अवश्य है परंतु असंभव नहीं । हमें विचारों के आदान-प्रदान या संप्रेषण हेतु अधिकाधिक हिंदी शब्दों अथवा वाक्यों को ही प्रयोग में लाना होगा तभी हम अपनी अनुसंधान उपलब्धियों को भारत के जन-जन तक पहुंचाने में सफल हो सकते हैं । ■

हिंदी साहित्य: विभाजन और विश्लेषण

—दयानाथ लाल*

प्राय: सभी जानते हैं कि किसी भी भाषा के साहित्य का विभाजन और विश्लेषण करना एक अति ही कठिन कार्य है; क्योंकि किसी साहित्य की आदिकालीन सीमा के निर्धारण को लेकर विद्वानों में काफी मतभिन्नता पाई जाती है। हिंदी साहित्य के साथ भी ये ही बातें लागू होती हैं।

अब तक हिंदी साहित्य के फलक पर जितने भी अनुसंधान हुए; उससे प्रमाणित होता है कि शालिभद्रसूरि कृत भरतेश्वर बाहुबलीरास ही कालक्रम तथा भाषा विकास की दृष्टि से हिंदी संसार की सर्वप्रथम उपलब्ध कृति है; जिसका रचनाकाल है–सन् 1184 ई.। डा. गणपति चन्द्रगुप्त इसी को हिंदी का पहला साहित्य मानते हैं; तथा इसके लेखक को हिंदी का प्रथम कवि डा. वासुदेव सिंह ने अपनी पुस्तक–**"हिंदी साहित्य का उद्भव काल"** में प्रतिपादित किया है कि सूरि से पहले हिंदी के सात कवि हो चुके थे; और उनमें योगीन्दु मुनि सबसे पहले आते हैं। अत: इनके अनुसार योगीन्दु को हिंदी का प्रथम कवि या लेखक माना जाना चाहिए; लेकिन इस स्थापना पर पानी फेरते हुए डा. नामवर सिंह का कहना है कि योगीन्दु की भाषा हिंदी की अपेक्षा अपभ्रंश के अधिक निकट है। इसलिए इन्हें अपभ्रंश का कवि माना जा सकता है; हिंदी का नहीं।

दरअसल हिंदी साहित्य के आदिकाल की प्रारम्भिक सीमा का मूल्यांकन हिंदी भाषा के उद्भवकाल से जोड़कर जो किया जाता है उसी की बदौलत ये सारे वाद-विवाद उत्पन्न होते हैं। राहुल सांकृत्यायन तथा आचार्य शुक्ल जैसे कुछ विचारक अपभ्रंश को पुरानी हिंदी या प्रकृताभाष हिंदी मानते हैं। विद्वानों का एक वर्ग ऐसा भी है; जो अपभ्रंशकालीन लोक भाषा के प्रथम प्रयोक्ता सरहपा को हिंदी का आदि कवि मानकर इसके साहित्य का उद्भवकाल सन् 700 ई. से मानता है। डा. माधव कहते हैं–" साहित्य चेतना की दृष्टि से भी सरहपा की देन अधिक महत्वपूर्ण है। उनकी भावधारा सिद्धों और नाथों से होती हुई कबीर तक अपनी परम्परा बनाती है। शालिभद्र सूरि की देन इस संदर्भ में नगण्य है। अत: सरहपा को हिंदी का प्रथम कवि मानने के लिए पर्याप्त मात्रा में प्रमाण हैं; और इसी आधार पर हिंदी साहित्य के आदिकाल का आरम्भ आठवीं शताब्दी (ई.सं. 769) माना जा सकता है।"[1] यदि माधव सोनटक्के के इस मत को मान लिया जाए तो जैन, सिद्ध तथा नाथसाहित्य को भी हिंदी साहित्येतिहास के भंडार में सम्मलित करना होगा; जबकि ये सभी शुद्ध रूप से अपभ्रंश साहित्य की धरोहर हैं। यहाँ मैं खुले शब्दों में रेखांकित करना चाहूँगा कि जिस प्रकार हिंदी साहित्य के आदिकाल की आरम्भिक और अन्तिम सीमा अभी तक विवादग्रस्त रही है; उसी प्रकार इसके प्रत्येक काल की आरम्भिक तथा अंतिम सीमा आज तक रही है–वाद-विवाद के कटघरे में ही। मेरी दृष्टि में, हिंदी साहित्य के आदिकाल का आरम्भ लगभग 1180 ई. से मानकर; इस साहित्य को कालक्रम के आधार पर चार भागों में विभक्त करना अत्यधिक उचित होगा –

(क) आदिकालीन साहित्य (1180-1350 ई.)

(ख) पूर्व मध्यकालीन साहित्य (1600-1870 ई.)

(ग) उत्तर मध्यकालीन साहित्य (1870-1990 ई.)

(घ) आधुनिक कालीन साहित्य (1350-1600 ई.)

(क) आदिकालीन साहित्य (1180-1350 ई.):

इस काल के साहित्य को हम दो भागों में बांट सकते हैं–रासोसाहित्य तथा गद्यसाहित्य।

(i) **रासोसाहित्य:** इसकी चर्चा करने के पहले यह जान लेना जरूरी है कि रस, रसिक, रसिया, रास, रासक और

* कृष्णा इन्क्लेव, हाउसिंग कालोनी, राजेन्द्र नगर, भाया: जमगोरिया, चास, जिला बोकारो -827013

354 HA/07—6A

रासों का अर्थ क्या है? क्योंकि रासोसाहित्य का उद्भव व विकास शालिभद्र सूरि द्वारा रचितग्रंथ–'भरतेश्वर बाहुबलीरास' से ही हुआ; जिसे अपभ्रंश तथा पुरानी हिंदी के बीच की कड़ी माना जाता है; और रास की निष्पत्ति का कारण है–रस। रस का अर्थ है–आनन्द और रस या आनन्द लेने वाले को कहा जाता है–रसिक अथवा रसिया। अब प्रश्न उठता है–रास शब्द का। रास का मूल अर्थ है–"गोपियों के साथ घेरा बांधकर कृष्ण द्वारा किया गया अभिनय" और जब उस अभिनय का प्रदर्शन होता है; तो उसे हम कहते हैं–रासलीला या कृष्णलीला। रास शब्द के और भी अनेक अर्थ हैं। जैसे– शब्द, ध्वनि, नृत्यक्रीड़ा, लोकगान, कोलाहल इत्यादि। अब रही बात रासक तथा रासो की। तो रास से ही बना है–रासक और रासो। रास करने वाले को कहा जाता है–रासक और जहां अथवा जिस ग्रंथ में रास का वर्णन अथवा चित्रण डिंगलभाषा में हो; तो उसे अलंकृत किया जाता है–रासो के नाम से। हमारी हिंदी के आदिकालीन साहित्य में रासोसाहित्य की संख्या अधिक है। रासोसाहित्य में चन्दबरदायी का पृथ्वीराजरासो, जगनिक का परमालरासो, नरपतिनाल्ह का बीसलदेवारासो तथा शारंगधर का हम्मीररासो वैगरह अति अधिक विख्यात हैं। यदि हिंदी साहित्य के आदिकाल को रासोसाहित्य–सृजनकाल कहा जाए तो सम्भवतः अनुचित न होगा; चूँकि तत्कालीन साहित्य में कहीं वीरता को वाणी मिली है; तो कहीं प्रकृति और शृंगार को। वीरगाथाकाल इसे नहीं कहा जाना चाहिए; जैसाकि आचार्य शुक्ल ने कहा है। वैसे इस काल को वीर शृंगार काल भी कहा जा सकता है।

(ii) **गद्यसाहित्य :** साहित्यसृजन के दृष्टिकोण से यह काल गद्यसाहित्य का सृजनकाल भी रहा है। तत्कालीन कवि रोड़ा के 'राउलबेल' में गद्य के कुछ सरस प्रयोग मिलते हैं। दामोदर शर्मा के 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' भी इस शैली से अछूता नहीं रहा। ज्योतिरीश्वर ठाकुर को भी हम यहां भूल नहीं सकते। इसलिए कि उनका 'वर्णरत्नाकर' मैथिलीहिंदी की गद्य पुस्तक है। आदिकालीन हिंदी साहित्य की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए डा. सभापति मिश्र ने लिखा है कि–"अनेक काव्य रूप तथा शैलीशिल्प आदिकाल के हिंदी साहित्य में आविर्भूत हुए और पुष्ट हुए हैं। सच्चे अर्थ में, हिंदी साहित्य का आदि, आदिकाल में भव्य एवं विराट् है; जिसका आदि सत्यं, शिवम, सुन्दरम् से हुआ है। उसका अंत तो कभी होगा ही नहीं।"[2] वस्तुतः इस काल में सरस शृंगार की जो धारा फूटी; वह भक्ति काल व रीतिकाल से गुजरती हुई; आधुनिककाल तक पहुंची; जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि आदिकालीन हिंदी साहित्य में प्रकृति और शृंगार का रिश्ता अटूट था।

(ख) पूर्वमध्यकालीन साहित्य (1350-1600 ई.)

इस काल के साहित्य को भक्ति साहित्य भी कहा जाता है। कारण, हिंदी साहित्य का यही एक ऐसा काल है; जिसमें भक्त और भगवान का अटूट सम्बन्ध दृष्टिगोचर होता है। भक्ति शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग महाभारत के गीता में मिलता है। भारतीय धर्मसाधना में भक्तिमार्ग का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है; क्योंकि यह वह मार्ग है; जिसके माध्यम से भक्त और भगवान एकाकार हो जाते हैं। अध्ययन की सुविधा से पूर्व मध्यकालीन साहित्य को तीन भाग में विभाजित किया जा सकता है– निगुण भक्ति साहित्य, सगुण भक्ति साहित्य तथा गद्यात्मकसाहित्य।

(i) **निगुण भक्तिसाहित्य :** इसके दो रूप हैं-संत साहित्य (ज्ञानाश्रयी) और प्रेमाख्यानक या सूफीसाहित्य (प्रेमाश्रयी)। संतसाहित्य परम्परा मराठी से उठकर हिंदी जगत् में आई। इसे हिंदी में प्रचलित करने का श्रेय महाराष्ट्रीय संत नामदेव को है; लेकिन सुप्रतिष्ठित करने का श्रेय महात्मा कबीर को। प्रेमाख्यानक साहित्य का प्रारम्भ हिंदी में मुल्लादाऊद के चन्दायन से अवश्य माना जाता है; पर इसकी प्रौढ़तम रचना है- मलिक मुहम्मद जायसी का पद्मावत। आचार्य शुक्ल ने पद्मावत को प्रेमागाथा परम्परा की सबसे प्रौढ़ और सरस रचना बताई; जिसकी व्याख्या करते हुए डा. रामकुमार वर्मा ने बताया-"अभी तक के सूफी कवियों ने केवल कल्पना के आधार पर प्रेमकथा लिखकर अपने सिद्धान्तों का प्रकाशन किया था; पर जायसी ने कल्पना के साथ-साथ ऐतिहासिक घटनाओं की श्रृंखला सजा कर अपनी कथा को सजीव कर दिया। यह ऐतिहासिक कथावस्तु चितौड़गढ़ के हिंदू आदर्शों के साथ थी; जिससे हिंदू जनता को विशेष आकर्षण था। यही कारण था कि जायसी की कथा विशेष

354 HA/07—6B

लोकप्रिय हो सकी।"[3] आज भी भारतीय साहित्य में जायसी प्रिय हैं और प्रिय है- उनका पद्मावत।

(ii) **सगुणभक्तिसाहित्य:** जिस प्रकार निगुर्ण भक्ति साहित्य के दो पहिए हैं; उसी प्रकार सगुण भक्ति साहित्य के भी दो पहिए हैं- रामभक्तिसाहित्य और कृष्णाभक्तिसाहित्य। रामभक्तिसाहित्य की सशक्तधारा, सच कहा जाए तो हिंदी साहित्य के पूर्व मध्यकाल में जो फूटी; वह हिंदी के इस नवलेखन काल में भी आकर वेगवती ही दिखाई देती है; चाहे इसकी भाषाशैली का जो स्वरूप हो। रामभक्तिधारा के प्रमुख प्रवर्त्तक रामानन्द थे; लेकिन सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व इस क्षेत्र में जो विश्वमहाकवि तुलसी का है; उसे विश्व का भला कौन साहित्य-मनीषी नहीं जानता? उनका रामचरितमानस इस परम्परा का अमूल्य असबाब है। और अब इसे प्रमाणित करने की कोई आवश्यकता दिखाई नहीं देती। क्योंकि जब हाथ के कंगन में ही अपनी छवि देखी जा सकती है; तो फिर किसी दर्पण की क्या आवश्यकता? दूसरी बात जब आसमान में इन्द्रधनुष उगे हों और रिमझिम बारिश की बूंदें टपक रही हों; तब क्या मोर के लिए किसी प्रमाण की जरूरत होती है कि वर्षाऋतु आ गई? उत्तर होगा-कभी नहीं। कहने का मतलब है- "हाथ कंगन को आरसी क्या?" जहां तक कृष्णभक्तिसाहित्य का प्रश्न है; तो इसकी विषय-वस्तु का मूल आधार है- कृष्णचरित्र का सांगोपांग-चित्रण। यदि रामभक्ति साहित्य के सर्वश्रेष्ठ चित्रकार तुलसी थे; तो नि:संदेह कृष्णभक्ति साहित्य के सर्वश्रेष्ठ शिल्पीकार थे- अंधे विश्वमहाकवि सूर। सम्पूर्ण कृष्णभक्तिसाहित्य में सूर का सूरसागर सर्वोपरि है। राधा के वियोगवर्णन के हिंदी जरिए प्रेम का परिमार्जित रूप जैस सूर ने उपस्थित किया; शायद ही वैसा विश्व का किसी साहित्यकार ने किया हो। वात्सल्य रस के वे सम्राट थे; चूँकि इस रस का कोना-कोना उन्होंने झांका था। इसी प्रकरण में विरह की सफल साधिका मीराबाई की सुधि ताजी हो जाती है; प्रेम तत्व को लेकर। सभी कृष्णभक्तों ने अपने भक्तिभाव को अवश्य प्रदर्शित किया; परन्तु अनुभूति की जितनी तीव्रधारा मीरा के साहित्य में है; उतनी अन्य साहित्यकारों के साहित्य में नहीं। "मेरो तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई" - रटते-रटते वे कभी कृष्ण के साथ होली खेलती है; तो कभी सुनसान महल में उनके साथ एकाकार होने की तैयारी करती है। उनकी कविताओं में गीतिकाव्य की उतकृष्ट अभिव्यक्ति है।

(iii) **गद्यात्मकसाहित्य:** हिंदी साहित्य के पूर्व मध्यकाल में अवधी के अतिरिक्त शेष सभी भाषाओं में गद्यसाहित्य का कुछ न कुछ निर्माण जरूर हुआ। नामदास कृत अष्टयाम, ध्रुवणदासकृत सिद्धान्तविचार, बैकुण्ठमणि कृत वैसाखमहातम एवं अगहनमहातम ब्रजभाषा की गद्यात्मक रचनाओं में प्रमुख हैं। जटमल कृत गोराबादल की कथा के बारे में क्या कहना? यह तो खड़ीबोली गद्य का उल्लेखनीय साहित्य है। जिस गद्यलेखन परम्परा का बीज हिंदी के आदिकाल में कविरोड़ा ने बोया; वह पूर्वमध्यकाल में आकर अंकुरित हुआ। और जब उत्तर मध्यकालीन साहित्यकारों ने इसे हरीझंडी दिखाई तो आधुनिक काल में आकर यह पूर्णरूपेण पुष्पित एवं पल्लवित हुआ।

(ग) उत्तरमध्यकालीन साहित्य (1600-1870 ई.)

इस काल के साहित्य को रीतिकालीन साहित्य के नाम से भी जाना जाता है। रीति का अर्थ है-रस्म-रिवाज, परिपाटी, नियम, कायदा इत्यादि। साहित्य में इसका अर्थ है- "वह विशिष्ट पद-रचना जिसके कारण ओज, प्रसाद या माधुर्य की स्थिति उत्पन्न हो।" रीतिकाल के साहित्य में नायिकाभेद, नखशिख वर्णन, बारहमासा, अलंकारों आदि का विवेचन उदाहरण सहित प्रस्तुत किया गया। पं. विश्वनाथ प्रसाद ने हिंदी साहित्य के इस काल को श्रृंगारकाल कहा तो डा. रमाशंकर 'रसाल' ने कलाकाल। उत्तरमध्यकालीन साहित्य को पांच भागों में बांटा जा सकता है। यथा- रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त, नीतिविषयक तथा गद्य।

(i) **रीतिबद्धसाहित्य:** इसे लक्षणबद्ध साहित्य भी कहते हैं। यह वह साहित्य है; जिसमें सिर्फ काव्यांगों के लक्षण पद्धात्मक शैली में देखने को हमें मिलते हैं। इसे यदि शास्त्रीय बन्धनयुक्त साहित्य कहा जाए; तो शायद गलत न होगा । इसलिए कि यही वह साहित्य है; जो शास्त्रीय बन्धनों से जकड़ा हुआ होता है। चिन्तामणि सर्वश्रेष्ट रीतिबद्ध साहित्यकार थे। रसविलास, काव्यप्रकाशन, छंदविचारपिंगल, काव्यविवेक, जितनी भी इनकी रचनाएं हैं; वे सभी रीतिबद्ध साहित्य के नमूने हैं।

(ii) **रीतिसिद्धेसाहित्य:** रीतिकालीनसाहित्य का यह एक ऐसा खण्ड है; जिसका सृजन सिर्फ रीतिअनुकरण सिद्धान्त के आधार पर न होकर; रीति और श्रृंगार यानि दोनों प्रवृत्तियों के आधार पर हुआ। रीतिसिद्ध साहित्यकार रीतिज्ञाता थे; तथा उनमें महाकवि बिहारी का नाम सर्वोच्च है। रीतिबद्ध साहित्य और रीतिसिद्ध साहित्य में मौलिक अन्तर यही है कि रीतिबद्धसाहित्य सृजन सिर्फ रीतिअनुकरण सिद्धान्त (शास्त्रीयबन्धनसिद्धान्त) के आधार पर आधारित थे; जबकि रीतिसिद्धसाहित्य सृजन, रीति ओर श्रृंगार दोनों ही के अनुकरण-सिद्धान्त के आधार पर आधारित था। इसके अलावे रीतिबद्ध साहित्यिक धारा की भाषा में न तो कहीं लचकता है और न तो कहीं लपकता ही; पर रीतिसिद्ध साहित्यिक धारा को निश्चित रूप से ठीक इसके विपरीत माना जा सकता है।

(iii) **रीतिमुक्तसाहित्य:** इसे पूर्णत: स्वच्छन्द साहित्य कहा जा सकता है। रीतिमुक्तसाहित्य, उसी साहित्य को हम कह सकते हैं; जिसमें स्वच्छन्द-प्रेम-भावाभिव्यक्ति का प्रस्फुटन हो। रीतिमुक्त का अर्थ ही है- किसी भी प्रकार के नियम, परिपाटी या रस्म-रिवाज के बन्धन से मुक्त। हिंदी साहित्य के उत्तरमध्यकाल में रीतिमुक्त साहित्यकारों के लिए प्यार और मुहब्बत तलवार की धार थी; जबकि रीतिबद्ध तथा रीतिसिद्ध साहित्यकारों के लिए चौगान का खेल। रीतिबद्ध और रीतिसिद्ध साहित्य में रीति की प्रीति को वाणी मिली; तो रीतिमुक्तसाहित्य में प्रीति की रीति को। रसखान, आलम, धनानन्द इस वर्ग के यशस्वी कृतिकार हैं; पर घनानन्द की भाषा के चलतापन का अगर बखान करना हो; तो आचार्य शुक्त के शब्दों में यों किया जा सकता है- "भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था; वैसा और किसी कवि का नहीं। भाषा मानों इनके हृदय के साथ जुड़कर ऐसी वशवर्तिनी हो गई थी कि ये उसे अनूठी भावभंगी के साथ-साथ जिस रूप में चाहते थे; उसी रूप में मोड़ सकते थे। इनके हृदय को योग पाकर भाषा को नूतनगतिविधि का अभ्यास हुआ; और वह पहले से कहीं अधिक बलवती दिखाई पड़ी। जब आवश्यकता होती थी; तब ये उसे बंधी-प्रणाली पर से हटा कर अपनी नई प्रणाली पर ले जाते थे। भाषा की पूर्व अर्जित शक्ति से ही काम न चलाकर, इन्होंने अपनी ओर से नई शक्ति प्रदान की।"[4] जो हो, परन्तु इतना सही जरूर है कि रीतिमुक्तसाहित्यलेखन की जो धारा हिंदी संसार के उत्तरमध्यकाल में फूटी; वह आधुनिक काल में आकर और मज़बूत हुई। जिसे हम आज गद्यकाव्य कहते हैं; वह मूलत: उसी की देन है और इस परम्परा को दृढ़ता के साथ आगे बढ़ाया - महाप्राण निराला ने । अभी इस परम्परा की बाड़ है।

(iv) **नीतिविषयक साहित्य :** नीति का अर्थ है- व्यवहार की रीति। अत: जिस साहित्य में व्यवहारिकरीति का दिक्दर्शन हो; उसे हम कहते हैं; नीतिविषयकसाहित्य। नीतिविषयक साहित्य लेखन की परम्परा प्राचीन है; और अमीर खुसरो इसके प्रथम लेखक माने जा सकते हैं; लेकिन यह परम्परा हिंदी साहित्य के उत्तरमध्यकाल में अत्यधिक कुसुमित हुई। उत्तरमध्यकालीन नीतिविषयक साहित्य के जितने भी सृष्टा हैं; उनमें बिहारी सबसे आगे हैं । किन्तु घाघ, बैताल, वृन्द आदि के भी नाम कम उल्लेखनीय नहीं हैं।

(v) **गद्यसाहित्य :** गद्यसाहित्य वह साहित्य है; जिसमें पद्यात्मकरचनाएं न हों। गद्यलेखन का प्रचलन भक्तिकालीन साहित्य की तुलना में रीतिकालीन साहित्य में अधिक बढ़ा हुआ अवश्य दीखता है; लेकिन अपने विकास के चरमोत्कर्ष पर वह पहुंचा; हिंदी के आधुनिक काल में ही आकर उत्तर मध्यकालीन गद्यसाहित्य में ब्रजभाषा के गद्यात्मक साहित्य अत्यन्त प्रौढ़ एवं परिष्कृत तो हैं ही; साथ-साथ अवधी भाषा के गद्यसाहित्य में रसविनोद, व्यवहारपाद, मानसटीक, उड्डील वगैरह भी कम प्रौढ़ और परिष्कृत नहीं हैं। जहां तक हिंदी गद्य के विविधरूपों के अंकुरण का प्रश्न है; तो निश्चित रूप से इसके विविध रूपों का भरपूर अंकुरण हिंदी साहित्य के उत्तर मध्यकाल में ही हुआ।

(घ) आधुनिक कालीन साहित्य
(1870-1990 ई.)

इस काल के साहित्य को नवलेखनसाहित्य भी हम कह सकते हैं; जिसकी मान्यता डा. नगेन्द्र ने भी प्रदान की है। नवलेखानसाहित्य के दो भाग हो सकते हैं-नवशैलीकाव्यसाहित्य तथा गद्यसाहित्य।

(i) **नवशैलीकाव्यसाहित्य:** नवशैलीकाव्य का अर्थ है- काव्य रचना के क्षेत्र में नई-नई शैलियों का प्रयोग। अत: नवशैलीकाव्यसाहित्य वह साहित्य है; जिसमें काव्य की नई-नई शैलियों का या काव्य के क्षेत्र में नए-नए विचारों का समावेश हो। इस प्रकार के साहित्य-सृजन का श्रीगणेश सन् 1870 ई. के इर्द-गिर्द यानी भारतेन्दुयुग से होता है। भारतेन्दु हिंदी साहित्य के एक ऐसे संधि धरातल पर खड़े थे; जहां एक और प्राचीन रूढ़िवादिता का समापन हो रहा था; तो दूसरी ओर शंखनाद हो रहा था- नए-नए विचारों के, नई-नई शैलियों के समावेश का। इनके भाव और भाषा पर प्रकाश डालते हुए डा. माधव सोनटक्के ने बहुत अच्छी समीक्षा प्रस्तुत की- "भारतेन्दु का काव्य एक नए भावबोध को अपनाता जरूर है; लेकिन भाषा शैली में परम्परा का ही अनुकरण करता है। काव्यभाषा के रूप में वे ब्रजभाषा का ही चयन करते हैं। 'खड़ी बोली का काव्य' उनके चित्तानुसार नहीं बन सका।"[5] नवशैली काव्यसाहित्य को मुख्यत: चार खण्डों में बांटा जा सकता है। जैसे-राष्ट्रवादी, छायावादी, प्रगतिवादी और प्रयोगवादी। नवशैली काव्यसाहित्य के कृतिकारों में विख्यात हैं- प्रतापनारायण मिश्र, श्रीधर पाठक, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्राकुमारी चौहान, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर', गोपालसिंह नेपाली, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, डा. हरिवंशराय 'बच्चन', नरेन्द्र शर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन', प्रभाकर माचवे, डा. धर्मवीर भारती, गजानन माधव 'मुक्तिबोध', रघुबीर सहाय, शमशेर बहादुर सिंह, सव्रेश्वरदयाल सक्सेना, डा. कुंअर बेचैन, कविता किरण, अवधेश कुमार 'अभिनव दिनकर', डा. ब्रजेन्द्र अवस्थी, राजेश श्रीवास्तव, श्रीमती महाश्वेता आदि।

(ii) **गद्यसाहित्य** : विकास के दृष्टिकोण से आधुनिककालीन गद्यसाहित्य अपने विकास की चरमसीमा पर है। इसका भविष्य कैसा होगा? दृढ़तापूर्वक कुछ कहा नहीं जा सकता। पर - "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" को ध्यान में रखते हुए; इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इसका भविष्य उज्ज्वल तो है ही। इस काल के गद्यसाहित्य को कम से कम सात भागों में विभक्त किया जा सकता है। जैसे- नाट्यसाहित्य, कहानीसाहित्य, उपन्याससाहित्य, निबन्धसाहित्य, जीवनीसाहित्य, साक्षात्कारसाहित्य एवं यात्रावृतांतसाहित्य। आधुनिककालीन गद्यसाहित्यकारों में हरिशंकर प्रेमी, मोहनराकेश, सुरेन्द्रवर्मा, डा. शिवप्रसाद सिंह, शैलेश मटियानी, फणीश्वरनाथ रेणु, डा. विद्यानिवास मिश्र, डा. रामदरश मिश्र, लक्ष्मीकान्त वर्मा, डा. नगेन्द्र, डा. रामविलास शर्मा, भगवतीशरण मिश्र, डा. कुमार विमल, विवेकीराय, प्रो. शिवबालक जैसे सैकड़ों साहित्यकारों का नाम आता है।

हिंदी निबंध और डा. नगेन्द्र : इसी विषयानुक्रम में मैं स्पष्ट करना चाहूंगा कि सम्पूर्ण हिंदी साहित्यिकविधाओं में निबंध का स्थान सर्वश्रेष्ठ है; जिसे स्वीकार किया है - आचार्य शुक्ल ने भी । उनके मुताबिक-"यदि काव्य की कसौटी गद्य है; तो गद्य की कसौटी- निबंध।"[6] निबंध कई प्रकार के हो सकते हैं; और उनमें आलोचनात्मक निबंध ही सर्वोपरि होता है। लेकिन कुछ लोग ऐसा स्वीकारने से कतराते हैं। और ऐसे वही लोग हैं; जिन्हें कविता, कहानी अथवा उपन्यास से अधिक लगाव है। अलोचनात्मक -निबंध-लेखकों में अभी डा. नगेन्द्र और डा. नामवर सिंह के नाम अत्यधिक उल्लेखनीय हैं। नगेन्द्र का कोई खेमा नहीं; परन्तु डा. नामवर सिंह मार्क्सवादी खेमे के बंधन में जकड़े हुए सर्वत्र दिखाई देते हैं। जितने भी मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थक हैं; वे सभी डा. नामवर सिंह को आलोचनात्मक साहित्य का सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार घोषित करते हैं; लेकिन यह उन लोगों की भूल है। पानी से ऊपर बर्फ दिखाने से क्या फायदा? आज विश्व के लगभग 80% हिंदी साहित्यकार डा. नगेन्द्र को आलोचनात्मक साहित्य का सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार मानते हैं। डा. नामवर सिंह ने मार्क्सवादी आलोचना को अवश्य विकसित किया; पर भारतीय साहित्य में यह उनकी बहुत बड़ी देन नहीं कही जा सकती। भारतीय साहित्य की अपनी अलग विशेषताएँ हैं। डा. नगेन्द्र का तो सैद्धान्तिक एवं रसवादी याने दोनों प्रकार की आलोचना के क्षेत्र में काफी काम किया। आज सैद्धान्तिक एवं रसवादित आलोचनात्मक साहित्य का जो विकसित रूप दीखता है; वस्तुत: वह डा. नगेन्द्र की देन है। डा.सभापति मिश्र कहते हैं- "सैद्धान्तिक समीक्षा के क्षेत्र में डा. नगेन्द्र का शुक्लोत्तर युग में सर्वोच्च स्थान सिद्ध होता है।"[7] डा. माधव का कथन है कि- "सैद्धान्तिक आलोचना के क्षेत्र में डा. नगेन्द्र का

योगदान सर्वाधिक उल्लेखनीय रहा है।"[8] अभी तक उतनी ख्याति हिंदी आलोचना साहित्य के आकाश में डा. नगेन्द्र को मिली है; उनती ख्याति डा. नामवर सिंह के नसीब में कहां? इनके साहित्य में राजनीति का दंगल देखने का अत्यधिक मिलता है। और जिस साहित्य में राजनीतिक विचारों का स्थान सर्वोच्च हो; भला वह साहित्य समाज को क्या देगा? यह विषय सोचनीय अवश्य है। डा. विजयेन्द्र स्नातक ने ठीक कहा- "साहित्य को शुद्ध साहित्य तक ही सीमित रखना चाहिए; उसे समाज के वैचारिक विकास के लिए प्रस्तुत करना चाहिए। परन्तु दुर्भाग्य है कि साहित्य में राजनीति आ गई है। जो राजनीतिक विचारधारा से जुड़े लेखक हैं; वे समाज के समक्ष भ्रष्ट साहित्य रख रहे हैं। इसमें वामपंथी विचारधारा के लेखक तो वर्ग-संघर्ष पैदा करते हैं। इस विचारधारा के लेखकों के पास अपना कुछ नहीं होता। जो चीन या रूस कहता है; उसी में दो-चार बातें और जोड़कर वे भारत में प्रस्तुत कर देते हैं। हम तो प्रत्येक वर्ग की बात सोचते हैं; उसे साथ लेकर चलते हैं। उससे भी बड़ा दुर्भाग्य यह है कि अब साहित्य में जातिवाद भी जड़ पकड़ लिया है।"[9]

खैर, अन्त में हिंदी के आदिकालीन साहित्य की जड़ों के सम्बन्ध में चन्द शब्दों को मैं यहां प्रस्तुत करना चाहूंगा कि हिंदी आदिकालीन साहित्य की जड़ें बहुत मजबूत और गहरी हैं। तभी तो उसकी भीत्ति पर पूर्व मध्यकालीन साहित्य का सुन्दर और सुडौल महल बना। और इसकी भीत्ति पर खड़ा हुआ - उत्तरमध्यकालीन साहित्य का एक ऐसा आलीशान भवन; जिसे लाकर हमारे सामने रख दिया- आधुनिक कालीन साहित्य का एक चमकता हुआ ताजमहल। जिसे आज विश्व के अनेक विद्वान अपनी आंखों से निहार रहे हैं और भरपूर प्रयास कर रहे हैं- इससे लाभ उठाने का। इति ■■

संदर्भ-सूची:

1. हिंदी साहित्य का इतिहास
2. पृष्ठ-91, हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास।
3. हि.सा. का आलोचनात्मक इतिहास, पृष्ठ.308
4. पृष्ठ-322, हि. सा. का इ.
5. हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-249
6. हिंदी साहित्य का इतिहास
7. पृष्ठ-356, हि.सा. का प्रवृत्तिपरक इतिहास
8. नवलेखन तथा जनचेतना काल
9. 3 अगस्त 1997, पांचजन्य, पृष्ठ-8

हिंदी केवल राजभाषा नहीं है, बल्कि विश्व भाषा बन रही है ।

-राजीव गांधी, पूर्व प्रधान मंत्री

354 HA/07-7B

वैश्वीकरण और हिंदी का प्रश्न

—अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी *

वैश्वीकरण जिसे अंग्रेजी में हम ग्लोबलाइजेशन कहते हैं, ने अचानक हिंदी को चर्चा के केंद्र में ला खड़ा कर दिया है। यह कोई नई बात नहीं है। नए विचार जब सामने आते हैं तो कुछ व्यवहार प्रासंगिक तो कुछ अप्रासंगिक हो ही जाते हैं। शुक्र है वैश्वीकरण के युग में विश्व की एक प्रमुख भाषा, हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी, चर्चा के केंद्र में आ गयी है। वरना स्वाधीनता की प्राप्ति के बाद के वर्षों में हिंदी को जिस उपेक्षा का दंड झेलना पड़ा था, उससे हिंदी स्मृतिशेष ही होने को अभिशप्त थी। आठवें दशक के आखिरी वर्षों में जब कम्प्यूटर आया और देश 21वीं सदी में छलांग लगाने को प्रस्तुत हुआ तो हिंदी का प्रश्न हाशिये पर जाता दिख रहा था। विश्व हिंदी सम्मेलनों की श्रृंखलाएँ आयोजित करके ही हमने मान लिया था कि हिंदी तो अब विश्व मंच पर आसीन हो ही गई, राष्ट्रीय जीवन में उसको हम महत्व दें या न दें।

वैश्वीकरण के कायाकल्पोत्सव में हिंदी को चर्चा में आने का अवसर दो कारणों से मिला है। पहला कारण तो यह कि भारत वर्तमान विश्व की अर्थव्यवस्था में अपनी प्रभावी भूमिका निभाने को प्रस्तुत हो गया है। विश्व की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है निर्माण उद्योग। अब इस क्षेत्र में यूरोपीय देशों का एकाधिकार जाता रहा है और सेवा क्षेत्र में एशियाई देश अपनी बढ़त बनाते हुए दिख रहे हैं। विश्व प्रसिद्ध सर्च एंजिन गूगल में एक चौंकाने वाला तथ्य सामने आया है। भारत को मदारियों, महाराजाओं और हाथियों का देश समझा जाता रहा है। गूगल के शोध से पता चला है कि भारत को अब मात्र रहस्य-रोमांच-के प्रतीकों के सन्दर्भ में ही नहीं खोजा जा सकता है। भारत अब औद्योगिक प्रगति, सेवा क्षेत्र सम्बन्धी नवोन्मेषों के लिए विश्व का जाना-पहचाना ब्राण्ड माना जा रहा है।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के संगठन सी.आई.ए. की एक सहयोगी संस्था द्वारा किए गए एक शोध में बताया गया है कि भारत तथा चीन भावी विश्व की आर्थिक शक्तियों के रूप में उभर रहे हैं। भारत सरकार के विभिन्न संगठनों द्वारा प्रस्तुत की जा रही रपटों और शोधों से भी यह संकेत मिल रहा है कि भारत अब विश्व बिरादरी में अपनी महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज कराने को तैयार है। आठ प्रतिशत की विकास दर हासिल करने के सम्बन्ध में हमारे वित्त मंत्री जी ने तो आशावादिता दिखाई है, उसमें उनका बड़बोलापन नहीं है। विदेशी मुद्रा भण्डार की मजबूत स्थिति और भुगतान सन्तुलन की अनुकूल दशा देखकर हमारी आशाएं बलवती हो रही हैं कि भारत अब शीघ्र ही विश्व मंच पर फिर से अपनी सार्थक भूमिका निभाने का अवसर पाने वाला है।

दुनिया के शीर्ष खरबपतियों में भारतीयों की गणना अब शान से की जाने लगी है और इसे आकस्मिक नहीं समझा जा रहा है। टाटा समूह ने विश्व प्रसिद्ध चाय ब्रांण्ड टेटली को खरीद कर विश्व बाजार में चाय व्यापार पर अपनी पकड़ मजबूत की है। यहां यह बात ध्यान देने की है कि टाटा ने स्विट्जरलैण्ड की बहुराष्ट्रीय कम्पनी नेस्ले को पछाड़कर यह बाजी जीती। श्रीनिवास मित्तल ने स्टील ज़ार की उपाधि पाकर विश्व लौह-इस्पात उद्योग में भारतीय उद्यमिता कौशल के झण्डे गाढ़ दिए हैं। कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर उद्योग तथा कंसल्टेंसी सेवा की दुनिया में भारतीय उद्यमियों ने संयुक्त राज्य अमेरिका के तत्सम्बन्धी व्यवसायियों को सकते में डाल दिया। एक समय था जब स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान विधानमंडलों और न्यायपालिका में प्रतिनिधित्व पाने के लिए हमें अपने देश में ही संघर्ष करना पड़ता था। आज विश्व के अनेक राष्ट्रों के प्रधान भारतीय मूल के हैं और अनेक राष्ट्रों की विभिन्न विधायिकाओं में भारतीयों को प्रतिनिधित्व करने का गौरव प्राप्त हुआ है। विश्व बिरादरी में हमें जो भी स्थान मिलने वाला है, उसका आधार अर्थनीति ने तय कर दिया है। पर उस आधार पर सफलतापूर्वक टिके

* सहा. मुख्य अधिकारी (राजभाषा), यूको बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय शिलपुखरी, गुवाहाटी-781003

रहने के लिए हमें एक समन्वित राष्ट्रीय विकास नीति की आवश्यकता है । इस विकास नीति का आधार राष्ट्रीय गौरव की स्थापना के सक्रिय अभियान से रखा जा सकता है । आत्महीन जनता की सरकारें या उनका कोई प्रतिनिधि संस्थान देश को गौरवपूर्ण अभियान के लिए प्रेरित नहीं कर सकता । हमने अपने देश के लिए प्रजातांत्रिक व्यवस्था का वरण किया है । यह वर्तमान युग के लिए सर्वोत्तम शासन व्यवस्था है क्योंकि इसमें व्यक्ति की गरिमा को उचित सम्मान देने की प्रवृत्ति पाई जाती है ।

प्रजातंत्र में वाद-विवाद और संवाद के महत्व को हमेशा ही महसूस किया गया है । पर भारत में इस विषय में अपेक्षित अवधान नहीं दिया गया । राष्ट्र को वाणी प्रदान करने के लिए हिंदी को समर्थ बनाने का प्रण हमारे राष्ट्रपुरुषों ने लिया था और इस हेतु उन लोगों ने आजीवन कार्य किया । यह अभियान आज हमारे लिए महत्वहीन हो गया है । हिंदी को चर्चा के केंद्र में आज हम, प्रथमतः इसीलिए देख पा रहे हैं कि भारत अपनी आत्मा की अभिव्यक्ति के लिए आतुर है । हिंदी का उत्थान देश को अपनी अभिव्यक्ति करने की स्वाभाविक इच्छा से होता है । इस इच्छा का समादर सभी नहीं कर सकते । अपनी मां की इच्छा का समादर अपनी जान की बाजी लगाकर कोई सपूत ही कर सकता है । आज समय आ गया है । देश अंगड़ाइयाँ लेकर उठ खड़ा होने को तत्पर है । बस उसे एक हुँकार भरने की आवश्यकता ही तो है । उसे उठना और दृढ़ता पूर्वक अपने समक्ष उपस्थित अवसरों का लाथ उठाना है ।

विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है । ग्लोबलाइजेशन के युग में शिक्षा के साथ सूचना और संचार के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तन और नवाचार के साथ ताल से ताल मिलाकर चलना होगा । डिजिटल डिवाइड के इस असन्तुलित विश्व भर को यदि कम समय में कुछ कर गुजरना है तो प्रतिभा के उन्मेष की सभी सम्भावनाएँ उसे तलाशनी होंगी । क्रियाशील मस्तिष्क का निर्माण करना आज, इसीलिए, भारत के समक्ष सबसे बड़ा कार्य है । हमें नए युग के लिए ऋषियों की आवश्यकता है । ये ऋषि हमारे पथप्रदर्शक होंगे । इनकी मनीषा अपने परिवेश के गहन परीक्षण से प्रकट होगी । इसके लिए अपनी स्वाभाविक भाषा में अपने मौलिक चिंतन को जगाने की आवश्यकता पड़ेगी । यह कार्य स्वभाषा के बिना सम्भव नहीं । हिंदी आज इस अपेक्षा के कारण भी चर्चा में है ।

हिंदी के प्रति आज सारा भारत आकर्षण महसूस कर रहा है । लोगों में हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ी है । यह सब मैं किसी भावातिरेक में नहीं कह रहा हूँ । विगत 20 वर्षों में एनसीईआरटी पाठ्यक्रम तथा टेलीविजन संजाल ने भारत में हिंदी का अभूतपूर्व प्रसार किया है । हिंदी सिनेमा ने वह सब कर दिखाया है । जिसके लिए हिंदी प्रचारकों की पूरी पीढ़ी लग जाती । इस प्रकार हिंदी प्रचार की पीठिका तैयार हो गई है । हिंदी में ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों तथा समाजशास्त्र एवं जन संचार के ग्रंथों की आवश्यकता अनुभव की जा रही है । हिंदी में पढ़ने को तत्पर उच्च शिक्षार्थी अपने लिए स्तरीय और मानक पोथियों की मांग लेकर पुस्तक विक्रेताओं के पास जाते और निराश लौट आते हैं । यह सही है कि इस क्षेत्र में मांग अभी उतनी नहीं बढ़ी है । पर आखिर आपूर्ति हो तभी तो मांग और बढ़े । ज्ञान की समस्त विधाओं का वाहक हिंदी बने यह अब भी एक अपूर्ण कामना ही है । विज्ञान की प्रगति और प्रौद्योगिकी के सहारे वैश्वीकरण ने पूरे विश्व को एक अवसर उपलब्ध कराया है । अब यह हम पर है कि हम इस अवसर का लाभ किस प्रकार और किस सीमा तक ले सकते हैं ।

विज्ञान ने एक सारणि का निर्माण कर दिया है । याद कीजिए तार और टेलीप्रिंटर युग की बातें । आपको अपने सन्देश भेजने के लिए रोमन में लिखने की प्रायः बाध्यता थी । पाने वाला चाहे भी तो रोमन लिपि सीखे बिना पढ़ नहीं सकता था । पर आज फैक्स या ई-मेल के जरिए आप हिंदी में कुछ भी कहीं भी भेज सकते हैं । एक समय था जब अखिल भारतीय विज्ञापन समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं में सिर्फ अंग्रेजी में ही छपते थे । आज हिंदी ही नहीं क्षेत्रीय भाषाएं तक टेलीविजन के माध्यम से घर-घर में पहुंच रही हैं । विज्ञान सम्पदर्शी होता है । वैज्ञानिक प्रगति ने हमारे लिए वह सब आसान कर दिया है, जिसके लिए हम कभी सोच भी नहीं सकते थे । आज आवश्यकता है वैश्वीकरण के युग के योग्य हिंदी-कर्मियों की । ऐसे आत्मविश्वासी हिंदी-कर्मी हमें चाहिए जो इस भाषा के माध्यम से सारे राष्ट्र की मनीषा को जगा दें और ध्येय को समर्पित नेताओं, पत्रकारों, योजनाविदों, तकनीकिविदों की पीढ़ी तैयार करें । आसेतु हिमालय संवाद के लिए सर्वोतम भाषा हिंदी में आज एक श्रेष्ठ समाचार पत्रिका की आवश्यकता अनुभव की जा रही है । ऐसी पत्रिका जो अनुवाद की बैसाखी पर न चल रही हो । क्या हम ऐसी कोई पत्रिका अपने राष्ट्र को दे सकते हैं, जिसकी हिंदी

में भारतीय जनजीवन की धड़कनें गिनी जा सकें। इन सभी कारणों से हिंदी आज चर्चा में है।

जिस दूसरे कारण से हिंदी चर्चा में आज है अब हम उसकी ओर देखें। हमारा प्रिय देश आज भारत तथा इंडिया नामक दो पहचानों में बंट गया है। एक तरह से कह सकते हैं कि एक विरोधाभास हमारे देश में तेजी से पनप रहा है। इससे हमारे राष्ट्र का व्यक्तित्व खण्डित होता हुआ मालूम पड़ता है। हमारे जीवन में कभी-कभी भारत और इंडिया की दुविधा आ खड़ी होती है। भारत इंडिया को देखकर हीन भावना पालने लगता है और इंडिया भारत की ओर उपेक्षा की दृष्टि डालते हुए अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी में बैठने की जुगत भिड़ाने में लगा रहता है। विदेशी व्याख्याओं के सहारे स्वदेश को समझने में लगे हमारे बुद्धिजीवी इंडिया की रचना करने में लगे हैं। ये मेधावी तो हैं पर हृदय शून्य। संवेदनाहीन। इनके लिए मानव भी एक संसाधन है। फिर समझ में नहीं आता कि संसाधक कौन है। इस समूह को विरासत से कुछ भी ग्रहण करना अपमानजनक लगता है। वन्दे मातरम् इन्हें आउट आफ फैशन लगा तो इन्होंने 'आई लव माई इंडिया' नामक फड़कता नारा गढ़ लिया–इंसटैंटली। पर बन्दे मातरम् की कालातीत गूँज तो व्यापती रही। फिर उन्होंने इस गीत को पॉप शैली में गाया। ऐसे ही इंडियाबाजों की एक टोली ने 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला' की सौदेबाजी की।

हिंदी के माध्यम से आज एक और पुनर्जागरण की आवश्यकता है। स्वाधीनता आन्दोलन में और उससे पूर्व भारतीय जन-जीवन में व्याप्त रूढ़ियों को तोड़ने और कुरीतियों की दिशा मोड़ने के लिए धर्म और नैतिक जीवन के सिद्धांत को लेकर अनेक व्रती महात्माओं ने राष्ट्रीय जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का आव्हान किया। राजाराम मोहन राय से लेकर स्वामी विवेकानंद और श्री अरविन्द तथा उनसे आगे महर्षि रमण आदि तक इस परम्परा का प्रवाह बलवती रूप में देखा गया। वैश्वीकरण के युग में भारत को जहाँ इंडिया ग्रसने की ओर बढ़ रहा हैं हमें हिंदी के प्रबल आग्रही मनसा-वाचा-कर्मणा समर्पित मनस्वियों की आवश्यकता है ये हिंदी को विश्व मंच तक ले जाएँगे। हिंदी के माध्यम से ये भारतीय प्रतिभा जो उपेक्षित-सी पड़ी है, जगाएँगे। हिंदी के माध्यम से देश का सोया स्वाभिमान जागेगा इन्हीं के प्रयत्नों से। इंडिया को बताना है कि भारत उसके ड्राईंग रूम की शोभा की वस्तु मात्र नहीं। इंडिया भारत को अपनी प्रतिछाया या उपछाया मानने की भूल न करे। उसे यह समझ लेना चाहिए कि भारत ही है जो इंडिया को अपनी जर्जरित देह की पीठ पर लादे घूम रहा है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने एक स्थान पर कहा है कि अभावग्रस्त मनुष्य अपनी अनिवार्य आवश्यकता की संतुष्टि के लिए कुछ निषिद्ध कार्य कर बैठता है पर अपराध की श्रेणी में आने वाले कार्य साधन सम्पन्न बिगड़ैल मानसिकता के लोग ही करते हैं। हिंदी साधनहीन लोगों की भाषा है। उसे आज अपनी अस्मिता की रक्षा करनी है। साधन संपन्न और बिगड़ैल इंडिया भारत को नकलची बनाने के प्रयास में है। हिंदी के माध्यम से स्वतंत्र भारत की सांस्कृतिक अस्मिता को जगाना और उसे प्रतिष्ठित करना है। भारतीय मनीषा पश्चिमी जीवनशैली और अप्रासंगिक मान्यताओं की नकल उतारने में अपनी ऊर्जा बर्बाद करने पर तुली है। हिंदी के माध्यम से उसे दिशा-बोध करना जरूरी है। भाषा सिर्फ सार्थक ध्वनि संकेतों की प्रणाली ही नहीं है। यह एक जीवन्त इकाई है। इससे हमारी और हमसे इसकी पहचान बनती है और इस प्रकार राष्ट्रीय पहचान की अभिव्यक्ति होती है।

आर्थिक समृद्धि के पथ पर अपनी सांस्कृतिक पहचान को बचाए रखकर ही हम वैश्वीकरण की प्रक्रिया में स्वयं को प्रासंगिक बनाए रख सकते हैं। आर्थिक जगत में जो अवसर उपलब्ध हुए हैं, भारत उसका लाभ उठाए। इसके लिए भारतीय नागरिकों को उनकी भाषा, जो प्रधानतः हिंदी है, में सभी प्रकार का ज्ञान और संवाद प्राप्त हों। भारत की युगों पुरानी संस्कृति में कुछ शास्वत तत्व विद्यमान हैं। इनकी उपेक्षा करने से हमारी निजता संकटग्रस्त हो सकती हैं। हिंदी की डोर पकड़कर ही हम उस निजता से जुड़े रह सकते हैं और प्रगति-पथ पर स्वाभिमान के साथ बढ़ सकते हैं।

भारत के प्रति विश्व का नजरिया बदल रहा है। हमें भी उपनिवेशकालीन इतिहास-बोध से उबरना होगा। हमारे उपकरण ही सफलता के सिंहद्वार को जाने वाले राजमार्ग के निर्माण में हमारे काम आएँगे। हिंदी एक ऐसा ही उपकरण है। इसे हमने अपनी आवश्यकता के अनुरूप गढ़ा है। हमने अपनी साझी संस्कृति का रूपायन भी इसी उपकरण (हिंदी) से किया है। हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम अपना भविष्य भी इसी से गढ़ेंगे। ■

तुलसी भाषा के आदर्श थे वाल्मीकि और हनुमान

—डॉ. पन्ना प्रसाद*

तुलसीदास के भाषा के दो आदर्श पुरुष हैं- वाल्मीकि और हनुमान। वाल्मीकि ने छांदस् से इतर लौकिक संस्कृत में रामायण का सर्जन किया । तुलसीदास ने संस्कृत से इतर लोकभाषा में रामचरित मानस की रचना की। वाल्मीकि ने रामकथा के बिखरे सूत्रों को समेटकर रामायण में जो सुव्यवस्था और सुसंगति प्रदान की, वह कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर कवियों का प्रेय रही है। इसलिए यह अकारण नहीं कि रामचरितमानस के आरंभ में तुलसीदास "कवीश्वर कपीश्वरौ" की एक साथ वन्दना करते हैं- कवीश्वर वाल्मीकि की और कपीश्वर हनुमान की भी।

हनुमान ने तुलसीदास के लिए भाषा का मार्ग कैसे प्रशस्त किया। स्मरण करें, वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड का प्रसंग। हनुमान अशोक वाटिका में शीशम वृक्ष पर पत्तों में छिपे बैठे हैं। अभी-अभी रावण सीता को धमका कर गया है कि दो माह के अन्दर मेरी बात मान ले अन्यथा मैं तेरा विनाश कर दूँगा। हनुमान के पास कहने के लिए राम का संदेश है और जानकी को सान्त्वना देने के लिए ढेर सारी बातें। लेकिन संकट है अभिव्यक्ति का। वह सीता से किस भाषा में बात करें, संस्कृत में? नहीं। क्योंकि संस्कृत पढ़ने-लिखने वाले द्विजों की भाषा थी और जानकी स्त्री होने के कारण हो सकता है संस्कृत न जानती हों । क्योंकि स्त्रियों को पढ़ने का अधिकार नहीं था- स्त्रीशूद्रोनाधीयताम्। और, वानर के मुख से संस्कृत संभाषण सुनकर कहीं सीता जी हनुमान को रावण का ही कोई मायावी रूप समझकर डर न जाए । फिर तो उन्हें सान्त्वना भी नहीं दी जा सकेगी। हनुमान अनेक व्याकरणों के ज्ञाता, वेदांगविद् और ज्ञानियों में अग्रगण्य थे। .... "निगमागम व्याकरण करण लिपि", "वेदांतविद विविध विद्या विशद, वेद वेदांग विद ब्रह्मवादी", "ज्ञानिनामग्रगण्यम्"। उन्हें संस्कृत बोलने में कोई कठिनाई नहीं थी। किन्तु उन्होंने संस्कृत को नहीं चुना। उन्होंने निश्चय किया कि मैं उत्तर भारत में अयोध्या के आस-पास बोली जाने वाली अर्थवान् जनभाषा का प्रयोग करूँगा क्योंकि सीता को सांत्वना प्रदान करने के लिए इसी भाषा में सार्थक अभिव्यक्ति हो सकती है:-

यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति।।
अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत्।
मया सान्त्वयितुं शक्या नान्यथेयमनिन्दिता।।

-वा. रा.

भाषा के प्रति हनुमान की यह लोकोन्मुखता ही मानस की भाषा को शास्त्रभाषा से इतर जनभाषा की प्रेरणा प्रदान करती है। अन्यथा, तुलसीदास तो रामचरितमानस की रचना संस्कृत में करने में समर्थ थे। अपनी इस सामर्थ्य का परिचय उन्होंने अनेक स्थलों पर दिया भी है। उन्होंने रामचरितमानस की रचना के उपजीव्य ग्रंथों का उल्लेख करते हुए "नानापुराण निगमागमसम्मतम्" कहा है। ये सभी ग्रंथ संस्कृत के हैं। स्वाभाविक ही इनके आधार पर रचा जाने वाला ग्रंथ संस्कृत में ही होता। मानस के सात कांडों के आरम्भ में लिखे गए मंगलाचरण के कुल तेईस श्लोक, मानस के अन्तिम दो श्लोक एवं रुद्राष्टक के साथ सुतीक्ष्ण, अत्रि आदि मुनियों की श्रीराम-स्तुति सभी संस्कृत में ही हैं। इनके अतिरिक्त जटायु, चारों वेद, शिव और नारद द्वारा की गई भगवान श्रीराम की स्तुतियाँ भी संस्कृतनिष्ठ हैं।

तुलसीदास संस्कृत में पारंगत थे। उनका विद्याध्ययन संस्कृत में ही हुआ था। उन्होंने वाराणसी में श्री शेषसनातन के यहाँ पन्द्रह वर्षों से अधिक समय तक वेदांग का अध्ययन किया था। वेदांग में शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष सभी आते हैं। इनमें कल्प और ज्योतिष के

*कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन, जनपथ, युनिट-9, भुवनेश्वर-751022 (उड़ीसा)

354 HA/07—8B

अतिरिक्त शेष सभी भाषा की अभिव्यक्ति - विधाओं से संबंधित हैं। "शिक्षा" को ही लें। वर्तमान समय में भी पाणिनीय शिक्षा, शौनकीय शिक्षा, याज्ञवल्कय शिक्षा, लोमश शिक्षा आदि चालीस प्रकार के शिक्षा ग्रंथ उपलब्ध हैं । ये भाषावैज्ञानिक ग्रंथ हैं । वर्णों की संख्या, ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत-उदात्त-अनुदात्त-स्वरित, सप्तस्वरों का स्वरूप, वर्णों के उच्चारण-विधान, प्रयत्न, मात्राओं आदि का वैज्ञानिक विश्लेषण इनका विषय है। "वर्णास्वरादि उच्चारण प्रकारों यत्रोपदिश्यते सा शिक्षा"। वेद, उपनिषद् आदि ग्रंथों के अध्ययन के लिए शिक्षा का ज्ञान होना अनिवार्य माना जाता था। ग्रंथारंभ में इसका संकेत दे दिया जाता था। तैत्तिरीयोपनिषद् की शिक्षा वल्ली में शिक्षा के अंतर्गत आने वाले विषयों का उल्लेख आरंभ में ही किया गया है- "वर्ण:स्वर: मात्रा बलं साम संतान:" - अर्थात् अकारादि वर्ण, उदात्तादि स्वर, मात्राएं, आभ्यंतर-बह्मादि प्रयत्न, समवृत्ति उच्चारण और सँधि–ये शिक्षा के प्रतिपाद्य विषय हैं ।

तुलसीदास ने शिक्षा के साथ-साथ "व्याकरण" का भी अध्ययन किया था। संस्कृत व्याकरण की एक सुदीर्घ परंपरा है। आपिशालि, काश्यप, गार्ग्य, गालव, चक्रवर्मण, भारद्वाज, शाकटायन, शाकल्य, सेनक, स्फोटायन, इन्द्र, चन्द्र, काशकृत्स्न, पाणिनि, अमर, जैनेन्द्र सरस्वती आदि अनेक वैयाकरण हो चुके हैं जिन्होंने अपने-अपने व्याकरण ग्रंथ चलाए। तुलसीदास ने हनुमान को भी व्याकरण-कर्ता कहा है। परंपरा में हनुमान को नौ व्याकरणों को ज्ञाता माना जाता है। निश्चय ही हनुमान छांदस् और संस्कृत के अलावा उस समय प्रचलित सभी प्राकृतों से परिचित रहे होंगे तभी तो सीता को प्रबोध देने के लिए उन्होंने अर्द्धमागधी प्राकृत को चुना। वेदांग के अंतर्गत परिगणित "निरुक्त" शब्दों का व्युत्पत्तिशास्त्र है और "छन्द" है कविता का अनुशासन। तुलसी वाङमय में उस समय प्रचलित सभी छन्दों का प्रयोग हुआ है। दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त, सवैया, छप्पय, रोला, वरबै आदि विविध छन्दों का प्रयोग कर तुलसीदास ने छन्दशास्त्र में अपनी प्रगति सिद्ध की है। इस प्रकार शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त और छन्दशास्त्र के ज्ञाता तुलसीदास महान भाषावैज्ञानिक और शब्दशिल्पी सिद्ध होते हैं। तुलसीदास भाषा की समझ के प्रति विशेष सजग दिखाई देते हैं। उन्होंने संस्कृत से इतर "भाषा" (हिंदी) में कविता तो की किन्तु यह भी कहा कि जिनके अंतर्गत भाषाभणिति की अच्छी समझ (न सामुझि नीकी) और वचन प्रवीणता (वचनप्रवीनू) नहीं होगी वे मेरी कविता का आस्वाद नहीं पाएँगे। उन्हें इस बात की आशंका जरूर थी कि तत्कालीन सुसंस्कृत विद्वत्समाज में हिंदी की ग्राम्य कविता को हेय दृष्टि से देखा जायगा। "भाषाभणिति भोरि मति मोरी। हँसिबे जोग हँसें नहिं खोरी। "किन्तु अपने मन को सान्त्वना देने के लिए वे भाषा में कविता करने के लिए प्रतिबद्ध थे-" भाषाबद्ध करबि मैं सोई । मोरे मन प्रबोध जेहि होई।" भाषा के प्रति यही दृढ़ता हनुमान ने भी दिखायी थी-"अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषंवाक्य।" किन्तु तुलसीदास हिंदी में कविता करते हुए भी भाषा के संस्कार के प्रति सदैव सजग रहे। तुलसीदास द्वारा प्रयुक्त शब्दों का व्युत्पत्तिगत अर्थ देखें तो शब्दों के प्रति उनकी समझ का पता चलता है। पंतजलि कहते हैं- "एक:शब्द:सम्यक् ज्ञात:सुप्रयुक्त:स्वर्गे लोके च कामधुक् भवति।" तुलसीदास द्वारा प्रयुक्त शब्दों का अध्ययन करने पर यह आर्षवाक्य उनमें पूर्णत: फलीभूत दिखाई देता है। रामचरितमानस में शब्दों का बड़ा ही सटीक, सुष्ठु और सुचिंतित प्रयोग किया गया है। उदाहरणार्थ,

"घन घमंड नभ गरजत घोरा"
"बरसहिं जलद भूमि नियराए" -
"वर्षा काल मेघ नभ छाए"

इन तीन पंक्तियों में 'बादल' के तीन पर्यायों घन, जलद और मेघ का प्रयोग हुआ है। घन का अर्थ ध्वनि से है, 'जलद' का अर्थ जल देने से और "मेघ" का अर्थ वर्षा से-मेहति वर्षति जलम् (मिह् + धञ्)। इसलिए जहाँ गर्जना अभिप्रेत था वहाँ घन का, जहाँ बरसने का भाव था वहाँ जलद और मेघ का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार "चला प्रभंजन सुत बलसाली" में चूँकि हनुमान के तीव्र गति से चलने का भाव है इसलिए वायु के प्रभंजन (आंधी) पर्याय को ग्रहण किया गया है। क्योंकि हवा के अन्य पर्यायों वायु (गति), पवन (मंदता), समीर (शीतलता) में तीव्रता का अर्थ समाहित नहीं था। हाँ, जहाँ हनुमान के स्वाभाविक रूप का वर्णन अभिप्रेत था वहाँ 'पवन-पुत्र' का प्रयोग किया गया है। जैसे, "सुनहु पवन सुत रहनि हमारी", "चलेउ पवन सुत विदा कराई" आदि । इसी प्रकार,

बिरह अगिनि तनु तूल समीरा।
स्वास जरइ छन माहिं सरीरा।।

नयन स्रवहिं जलु निजहित लागी।
जरैं ने पाव देह बिरहागी।।

की व्याख्या करते हुए डॉ. भोलानाथ तिवारी ने लिखा है कि इन पंक्तियों में शरीर के तीन पर्यायों तनु, शरीर और देह का प्रयोग हुआ है। जहाँ रूई के समान दुबले-पतले, महीन होने का भाव है वहां तनु (तन्+उन) का, जहाँ क्षण

मात्र में जलने का प्रसंग है वहाँ प्रतिक्षण क्षय होने वाले शरीर (श्रृ+ ईण्) का और जहाँ न जल पाने का संदर्भ है वहाँ स्थूलता सूचक देह (दिह्+घञ्) पर्याय का प्रयोग किया गया है। मानस में ऐसे सैकड़ों उदाहरण दिए जा सकते हैं जहाँ तुलसीदास का ध्यान शब्दों के व्युत्पत्तिगत अर्थ पर अधिक रहता है। सीता के लिए ही तुलसी साहित्य में पन्द्रह पर्यायों का प्रयोग हुआ है। जहाँ धैर्य का भाव प्रकट करना है वहां "धरनी सुता" कहा गया है। धरती धैर्य का प्रतीक है : " धरि धीरज उर अवनि कुमारी।" "धरनि सुता धीरज धरेउँ समइ सुधरमु विचारि।"

भाषा में संस्कृतनिष्ठता तुलसी के संस्कार में थी। रामचरितमानस में तो इन्होंने संस्कृत के अनेक शब्दों को मूलरूप में प्रयोग कियां है। रहसि, तिष्ठ(इ) 'एवमस्तु' अवज्ञा, अज्ञ, सकृत, अनिर्वाच्य, सपदि, विगतश्रम आदि ऐसे ही शब्द हैं।

जिस प्रकार तुलसीदास संस्कृत-निष्णात है उसी प्रकार हनुमान् भी देवभाषा-विशारद हैं। इसलिए तुलसी को हनुमान का चरित्र भाषा के स्तर पर विशेष रूप से आकृष्ट करता है। तुलसीदास ही नहीं स्वयं वाल्मीकि ने अनेक स्थलों पर हनुमान की वाक्-पटुता की सारस्वतसिद्धि का दर्शन कराया है। किष्किंधाकांड में जब हनुमान की श्रीराम से प्रथम भेंट होती है तो हनुमान द्वारा अपने परिचय में कहे गए उन्नीस श्लोक अर्थवान् वाणी के उत्कृष्टतम उदाहरण हैं। उनकी संभाषणकला एवं वाणी-संस्कार से श्रीराम प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। वे लक्ष्मण को निर्देश देते हैं- हनुमान वाणी के मर्म को समझने वाले हैं, तुम स्नेहपूर्वक मधुरवाणी में इनसे बात करना। क्योंकि लगता है इन्होंने समूचे व्याकरण का कई बार अध्ययन किया है। बहुत सी बातें बोल जाने पर भी इनके मुंह से कोई अशुद्धि नहीं निकली। इन्होंने थोड़े में ही बड़ी स्पष्टता के साथ अपना अभिप्राय निवेदन किया है। वे संस्कार (व्याकरण सम्मत) और क्रम (शब्दोच्चार की शास्त्रीय परिपाटी) से सम्पन्न, अद्भुत, अविर्लंबित (धारा प्रवाह) तथा हृदय को आनंद प्रदान करने वाली कल्याणीवाणी का उच्चारण करते हैं-

नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहरतानेन न किंचिद् अपशब्दितम्।।
अविस्तरमसंदिग्धमविलंबितमव्यथम्।
उरःस्थं कंठगंवाक्यं वर्तते मध्यमस्वरम्।।
संस्कारक्रमसंपन्नामद्भुतामविलंबिताम्।
उच्चारयति कल्याणीं वाचं हृदयहर्षिनीम्।।
—वा.रा.

इसी प्रेरणा के फलस्वरूप तुलसीदास भणिति (वाणी) के आदर्श-निरूपण में "सुरसरि सम सबकहँ हित होई" की कल्याण-कामना कर जाते हैं। सत्य, प्रिय, हितकारक और अनुद्वेगकारी वाणी बोलने वाले तथा भाषा का स्वाध्याय और अभ्यास करने वाले अनुमान वाङ्मय के सच्चे तपस्वी हैं :-

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रिय हितं च यत्।
स्वध्यांय अभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।।
—गीता

हनुमान की वाणी की प्रशंसा जानकी जी ने अशोक वाटिका में की थी, "वीरवर तुम्हारी वाणी उत्तम लक्षणों से सम्पन्न, माधुर्य गुण से भूषित तथा बुद्धि के अंगों से अलंकृत है। ऐसी वाणी केवल तुम्हीं बोल सकते हो।" (सुनने की इच्छा, सुनना, ग्रहण करना, स्मरण रखना, ऊहा (तर्क-वितर्क), अपोह (सिद्धांत का निश्चय), अर्थ का ज्ञापन होना तथा तत्व को समझना- ये बुद्धि के आठ अंग हैं)। राम ने हनुमान् को "वदतांश्रेष्ठ" - वक्ताओं में श्रेष्ठ, कहा है। स्वयं वाल्मीकि ने हनुमान को "वाक्य कोविद" - वार्तालाप में कुशल, कहा।

अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण हनुमान रामचरितमानस की रचना के समय तुलसीदास के समक्ष वाणी के आदर्श विग्रह के रूप में उपस्थित रहे हैं। संस्कृत का महान ज्ञाता होते हुए भी जनभाषा के प्रति हनुमान की अनुरक्ति तुलसी की युगांतरकारी प्रेरणा बन गई। संस्कृत काव्य परंपरा और संस्कृत भाषा का सम्यक् ज्ञान रखते हुए भी अपनी रचना के लिए तुलसी ने जनभाषा को ही चुना। "का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिए साँच" कहकर उन्होंने अपने इसी मन्तव्य की पुष्टि की है।

रामचरितमानस का आरंभ करते हुए संत तुलसीदास ने बहुत ही सरलतापूर्वक घोषणा की है कि न तो मैं कवि हूँ, न वाक्य-रचना में प्रवीण हूँ। अनेक प्रकार के अक्षर, अर्थ, अलंकार, छन्द-रचना, भावों और रसों के भेदोपभेद, काव्य के गुण-दोष, काव्य-रचना-कौशल कुछ भी मुझे नहीं आता। सभी प्रकार के अलंकार से हीन मेरी सीधी-सादी वाणी का केवल एक ही गुण है कि वह श्रीराम का संदेश देने में कुशल है। तुलसी के नायक हनुमान भी तो यही चाहते थे कि श्रीराम का संदेश अर्थवान जनभाषा में ही संप्रेषित किया जाए। इसीलिए भाषा के संबंध में हनुमान की इस संकल्पना को तुलसी तक पहुँचाने वाले कवीश्वर वाल्मीकि भी हनुमान के साथ ही वंदनीय हुए —"वंदे विशुद्ध विज्ञानौ कवीश्वर कपीश्वरौ।" ■

पुरानी यादें–नए परिप्रेक्ष्य

छायावाद की अखण्ड ज्योति : महादेवी

—छबिल कुमार मेहेर*

अक्षत पुलकित रोम मधुर मेरी पीड़ा का चंदन रे !
स्नेह भरा जलता है झिलमिल मेरा यह दीपक-मन रे !

'किसी महान् व्यक्ति का स्मरण अपने आप में तीर्थ का पर्व स्नान जैसा है' ,[1], प्रेम चंद की आशंसा में कहा गया महीयसी महादेवी वर्मा (1907–1987) का यह वाक्य मैं आज उनकी रचनाधर्मिता को अर्पित कर सचमुच तीर्थ यात्रा सा पुण्यानंद महसूस कर रहा हूँ ।

हिंदी साहित्य में 'छायावाद युग' जिस भव्य रचनात्मक अभिव्यंजना के कारण 'आधुनिक काल का स्वर्ण युग' के रूप में प्रसिद्ध है, उसका सारा श्रेय मुख्यत: प्रसाद–महादेवी–पंत–निराला को ही जाता है । इन चतुष्टय छायावादी कविओं ने रूढ़िमुक्त होकर नवीन विचारों को मूर्त रूप दिया। परिमाण की दृष्टि से अन्य कवियों की तुलना में कम लिखने के बावजूद, 'महादेवी' छायावाद का एक विशिष्ट नाम है। छायावादी कवियों में महादेवी जी इस दृष्टि से विशिष्ट हैं कि उन्होंने काव्य के भाव पक्ष व कला पक्ष, दोनों पहलुओं पर सम्यक चिंतन–मनन किया है। श्री विजयमोहन शर्मा ने महादेवी जी का सटीक मूल्यांकन करते हुए लिखा है, ''छायावाद युग ने महादेवी को जन्म दिया और महादेवी ने छायावाद को जीवन। यह सच है कि छायावाद के चरम उत्कर्ष के मध्य में महादेवी ने काव्यभूमि में प्रवेश किया और छायावाद के सृजन, व्याख्यान तथा विश्लेषण द्वारा उसे प्रतिष्ठित किया। छायावाद को उनसे अधिक समर्थ अधिकारी आलोचक आज तक नहीं मिला ।[2], यह एक सुखद आश्चर्य है कि महादेवी वर्मा गद्य की भी वैसे ही विख्यात रचयिता थी जैसे कि पद्य की । दूसरे शब्दों में कहें तो विचार, शैली और उद्भावना, तीनों दृष्टियों से महादेवी जी का गद्यकार रूप उनके कवि रूप से कम महत्वपूर्ण नहीं है। इसके मूल में उनकी 'युग चेतना' कार्य कर रही थी। किसी भी साहित्यकार के लिए इतना ही पर्याप्त होता है कि, वह अपनी रचनाओं में अपने युग की जटिलताओं, संकटों और समस्यायों की व्यापक पहचान कर उसके समाधान के लिए प्रशस्त मार्ग तैयार कर सके। महादेवी जी अपने समय, परिवेश व युग-सत्य के बदलाव के बारीक तंतुओं से भली भाँति परिचित थी। तभी उन्होंने अपने राखीबंध भाई काव्य पुरूष निराला के बारे में कहा, ''निराला जी अपने युग की विशिष्ट प्रतिभा हैं, अत: उन्हें अपने युग का अभिशाप झेलना पड़े तो कोई आश्चर्य नहीं ।[3], महादेवी जी की युग चेतना का गहरा एहसास पाठक को तभी होता है जब वो कहती हैं कि, ''अर्थ की जिस शिलापर हमारे युग के न जाने कितने साधकों की साध तरियाँ चूर-चूर हो चुकी हैं, उसी को वे अदम्य वेग में पार आए हैं। उनके जीवन भर उस संघर्ष के जो आघात हैं, वे उनकी हार के नहीं, शक्ति के प्रमाण-पत्र हैं।[4]'' बहरहाल, महादेवी जी ने जहाँ एक ओर हृदय की गहरी संवेदनात्मक अनुभूति और कल्पना के क्षण में गीतों की सृष्टि की थीं, वहीं दूसरी ओर चेतना व चिंतन के घनिभूत मूहूर्त में गद्य-विधान का पल्लवन किया था, जो कोरे तर्क पर अबलंबित न होकर प्रत्यक्ष जीवनानुभूतियों की ठोस भूमि पर प्रतिष्ठित है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि ''महादेवी जी छायावादियों में एक मात्र वह चिरंतन भाव-यौवना कवयित्री हैं, जिन्होंने नए युग के परिप्रेक्ष्य में राग तत्व के गूढ़ संवेदन तथा राग-मूल्य को अधिक मर्म स्पर्शी, गंभीर, अंतर्मुखी,

*दूरदर्शन, केंद्र, श्यामला हिल्स, भोपाल-462013

354 HA/07—9A

तीव्र-संवेदनात्मक अभिव्यक्ति दी है।[5]'' संपूर्णता में छायावादी कविताओं का विश्लेषण करते हुए प्रमुख उद्भावक कवियों के प्रमुख अवदान को रेखांकित करेंगे तो हम भी इंद्रनाथ मदान के शब्दों में कह सकते हैं, ''छायावादी काव्य में प्रसाद ने यदि मादकता को मिलाया, निराला ने उसे मुक्त छंद दिया, पंत ने शब्दों को खराद पर चढ़ाकर उसे सुडौल और सरल बनाया तो महादेवी ने उसकी भावात्मकता को समृद्ध किया है।'''

दीप-सी युग-युग जलूँ
पर वह सुभाग इतना बता दे।

फूँक से उसकी बुझूँ
तब क्षार ही मेरा पता दे।

सुमित्रानंदन पंत जी ने भी कामायनी परंपरा के प्रगीत-प्रधान युग की स्वर्णिम परिणति कलाबोध, भावव्यंजना तथा रस मूल्य की दृष्टि से महादेवी जी के गीतों में होनी की पुष्टि की थी तथा उन्हें 'छायावादी भाव साधना के युग की प्रेम-साधिका मीरा' के रूप में स्वीकार किया था। प्रेम साधना और भाव साधना से जुड़े दार्शनिक तत्वों के तुलनात्मक विवेचन से हमें ऐसा प्रतीत होता है कि भक्ति काल में जो स्थान मीरा को प्राप्त था लगभग वही स्थान छायावाद में महादेवी जी को प्राप्त हुआ। 'हिंदी साहित्य की बीसवीं शताब्दी' में आचार्य नंददुलारे वाजपेयी जी ने भी मीरा और महादेवी की तुलना करते हुए लिखा है कि महादेवी और मीरा दार्शनिक दृष्टि से एक ही परम्परा की अनुयायिनी प्रतीत होती हैं। मगर आज मीरा और महादेवी की तुलना करने का प्राचीन मोह त्याग देना चाहिए, क्योंकि दोनों में समानता कम और विभेदता ज्यादा है और यह प्रमाणित हो चुकी है। आलोचक विश्वम्भर मानव ने कहा भी है, ''एक दृष्टि से मीरा को महादेवी जी की समकक्षता में रखना अधिक संगत नहीं प्रतीत होता, क्योंकि मीरा भक्त है और महादेवी रहस्यवादी।[7]'' इस संबंध में हाल ही में सुप्रसिद्ध आलोचक प्रभाकर श्रोत्रिय द्वारा लिखा गया संपादकीय टिप्पणी को यहाँ उद्धृत करने का मोह मैं संवरण नहीं कर पा रहा हूँ, ''मीरा के साथ महादेवी की तुलना करने की रूढ़ि अब तोड़ना चाहिए। दोनों में समान क्या है--न स्थान, न काल, न भक्ति, न दर्शन, न विद्रोह, न जीवन। .....मीरा और महादेवी दोनों आध्यात्मिक प्रेम पंथिनी हैं, लेकिन मीरा की भक्ति अध्यात्म-चेतना अनुभूति जन्य है, जबकि महादेवी का रहस्यवाद बौद्धिक है। ..... महादेवी का युग भी भक्ति का नहीं, बौद्धिकता और तार्किकता का था[8]''। 'मेरे तो गिरिधर गोपाल लाल दूसरौ न कोई' की रट लगाने वाली सगुणोपासक, कृष्ण-भक्त मीरा के साथ निर्गुण-अलौकिक-साधिका की तुलना करने की बात अब छोड़ दें तो बेहतर होगा, क्योंकि 'अनुभवावसानत्वात् ब्रह्मज्ञानस्य' में रस लेने वाले निर्गुण साधकों की परम्परा में भी महादेवी जी को यह कहकर अलग स्थान दिया जा रहा है कि, 'कबीर और जायसी का रहस्यवाद साधनात्मक है, जबकि महादेवी का भावनात्मक'। हम इस झगड़े में बिना पड़े, इतना जरूर कह सकते हैं कि, महादेवी जी की साहित्य साधना जीवन के गहरे मंथन की उपज है जो पूर्णतः सात्विक और शाश्वत मूल्यों पर आधारित है।

महादेवी जी की संपूर्ण पद्य रचना आत्मगत शैली में लिखी गई है, जो उनकी दिव्य अनुभूति का सहज भावोच्छलन है। इसमें दिखावा या बुनावट-बनावट, प्रदर्शन का भाव लेश मात्र भी नहीं। महादेवी जी की संपूर्ण पद्य रचनाओं को पढ़ना एक तीर्थ यात्रा के प्रीतिकर अनुभव से होकर गुजरना जैसा ही है। 'नीहार' उनके जीवन के उषाकाल की 'रश्मि' उनकी यौवनावस्था की, 'नीरजा' उनकी प्रौढ़ावस्था की रचना है, जबकि 'सांध्यगीत' उनके संध्याकाल की, 'दीपशिखा' उनकी सिद्धावस्था की रचना है। ये पाँचों संग्रह प्रतीकात्मक है, जिसमें कवयित्री आत्मिक वेदना, दर्शन, समरसता, अध्यात्मिक-वैराग्य, करूणा का अनुभव करते हुए अंततः अखण्ड ज्योति में विलीन हो जाती है। उनकी काव्य-यात्रा एक पवित्र अलौकिक आध्यात्मिक यात्रा है, जो वेदना-साधना में पूर्णतः फलीभूत होती है। और यही कारण है कि महादेवी जी की कविताओं में निराला के काव्य की भाँति विषयों का वैविध्यता देखने को नहीं मिलता। महादेवी जी की विषय वैविध्यता उनके गद्य साहित्य ने ली, जिसमें उन्होंने काव्य कला, भारतीय वांड्यम व संस्कृति, राष्ट्रभाषा-राष्ट्रीयता, साहित्य और समाज जैसे विषयों के तह में जा कर अपने मौलिक चिंतन को शब्दबद्ध किया। अधिकतर आलोचकों ने महादेवी के काव्य के मूल में उनकी वैयक्तिक वेदना या करूणा की भावना होने की पुष्टि करते आए हैं। महादेवी के समर्थ और प्रतिष्ठित आलोचक, गंगा प्रसाद पाण्डेय ने महादेवी जी के विरह वेदना को अवैक्तिक मानते हुए लिखा है, 'विरह वेदना का यह न्यास कवयित्री के

354 HA/07—9B

हृदय में स्नेह,' संवेदना, सहानुभूति, करूणा तथा साधना के भाव जगाने में सहज ही सक्षम है और ये भाव कभी किसी प्रकार के संकीर्ण वैयक्तिक दुख का नहीं, आत्म-विस्तार एवं आनंद का ही उन्मेष करते हैं ।'[9]' किंतु महादेवी जी ने 'रश्मि' की भूमिका में कहा है 'व्यक्तिगत सुख विश्व-वेदना में घुलकर जीवन को सार्थकता प्रदान करता है, तो व्यक्तिगत दु:ख विश्व के सुख में घुलकर जीवन को अमरत्व' :

दुख के पद छू बहते झर झर,
कण कण से आँसू के निर्झर,
हो उठता जीवन मृदु उर्वर,

लघु मानस में वह असीम जग को आमंत्रित कर लाता !

यह भी सत्य है कि महादेवी का साहित्य में कहीं निष्क्रय दया नहीं, वरन् रचनात्मक करुणा का ही भाव वर्तमान है । महादेवी जी वेदना के अंधेरे में डूबकर नहीं रह जाती, वरन् उसके द्वारा करुणा के व्यापक मार्ग को प्रशस्त करती हैं । बौद्ध दर्शन से प्रभावित तथा व्यापक पुनर्जागरण चेतना से उद्भूत महादेवी के काव्य में जीवन का भी उल्लास है । उसमें आलोचकों द्वारा आरोपित 'निराशा भाव' कतई नहीं है । दरअसल आलोचकों ने जिसे निराशा का नकारात्मक रूप कहा है, वह करुणा का सकारात्मक रूप ही है :

तरी को ले जावे मंझ धार,
डूबकर हो जाओगे पार,
विसर्जन ही हैं कर्णाधार,
वही पहुंचा देगा उस पार ।

इस वेदना के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल संदेह व्यक्त करते हुए अपने 'हिंदी साहित्य के इतिहास' में लिखा है, 'इस वेदना को लेकर उन्होंने हृदय की ऐसी अनुभूतियाँ सामने रखी जो लोकोत्तर है । कहाँ तक वे वास्तविक अनुभूतियाँ हैं और कहाँ तक अनुभूतियाँ की रमणीय कल्पना है यह नहीं कहा जा सकता (पृष्ठ 719)' । साथ में उनके गीतों की भूरि-भूरि प्रशंसा भी कि है, 'गीत लिखने में जैसी सफलता महादेवी जी को प्राप्त हुई वैसी और किसी को नहीं, न तो भाषा का ऐसा स्निग्ध और प्रांजल प्रवाह और कहीं मिलता है, न हृदय की ऐसी भाव भंगी ।'

जैसा कि पहले संकेत किया जा चुका है कि, भाव और गरिमा दोनों दृष्टियों से, महादेवी जी का गद्य साहित्य उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उनका पद्य साहित्य । बाबू गुलाब राय जी ने कहा था कि 'गद्य में मैं महादेवी जी का लोहा मानता हूँ ।' 'महादेवी जी का पद्य साहित्य अगर उनके दिव्य रहस्यानुभूतियों का प्रमाण है, तो गद्य साहित्य उनके गंभीर साहित्यिक और दार्शनिक चिंतन का साक्ष्य प्रस्तुत करता है ।' साहित्य के शाश्वत मूल्य में विश्वास रखने वाली महादेवी जी का स्पष्ट उल्लेख है कि, ''साहित्य में प्रतिक्षण जो नवीन है, प्रति युग में जो नवीन है, वही वास्तव में महत्वपूर्ण होता है, आज भी बाल्मीकि पुराना नहीं, आज भी सूरदास पुराना नहीं, न प्रसाद कभी पुराने होंगे, न निराला कभी पुराने होंगे, न पंत कभी पुराने होंगे और प्रेमचंद का तो कहना ही क्या, वे कभी पुराने होंगे ही नहीं'[10]' । साहित्यकार के आस्था और सृजन को जीवन-जगत के साथ जोड़ते हुए उन्होंने लिखा है, ''माता जिस प्रकार आस्था के बिना अपने रक्त में संतान का सृजन नहीं कर सकती, धरती जिस प्रकार ऋतु के बिना अंकुर को विकास नहीं दे सकती, साहित्यकार भी उसी प्रकार गंभीर विश्वास के बिना अपने जीवन को अपने सृजन में अवतार नहीं दे पाता'' (साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध, पृष्ठ 29)। अपने ही युग के काव्य की आधार भूमि को तलाशने वाली महादेवी जी के निबंध में सहज जीवनानुभूतिओं के साथ विषय की गरिमा, भाषागत प्रांजलताए उपस्थापना में स्पष्टता और शैली चातुर्य का अद्भूत समन्वय देखने को मिलता है। दीपशिखा की भूमिका में काव्य और कला में कोई भेद न करते हुए तथा सत्य को अहमियत देते हुए उन्होंने लिखा है 'काव्य या कला का सत्य जीवन की परिधि में सौंदर्य के माध्यम द्वारा व्यक्त अखण्ड सत्य है (पृष्ठ 06)' । डॉ. रामचन्द्र तिवारी जी के शब्दों में ''महादेवी की काव्य कला संबंधी मान्यता में सत्य, सुन्दर और शिव, तीनों का सामंजस्य हो गया है। उनकी समस्त व्याख्या का निचोड़ यह है कि कला के माध्यम के द्वारा कलाकार सत्य को सुन्दर बनाकर शिवत्व की उपलब्धि कर लेता है। ''[11]'' महादेवी जी द्वारा दी गई 'छायावाद', 'रहस्यवाद', 'प्रगतिवाद' आदि की परिभाषाओं का आज ऐतिहासिक महत्व है। छायावाद के बारे में उन्होंने लिखा है, 'छायावाद तो करुणा की छाया में सौन्दर्य के माध्यम से व्यक्त होने वाला भावात्मक सर्ववाद ही रहा है और उसी रूप में उसकी उपयोगिता है (महादेवी का विवेचनात्मक गद्य, पृष्ठ 100)।' रहस्यवाद के बारे में उनका कहना है,

'रहस्य भावना के लिए द्वैत की स्थिति भी आवश्यक है और अद्वैत का आभास भी, क्योंकि एक के अभाव में विरह की अनुभूति असम्भव हो जाती है और दूसरे के बिना मिलन की इच्छा आधार खो देती है (वही, पृष्ठ 124)।'' इस प्रकार वे 'यथार्थ और आदर्श' को सरल शब्दों में परिभाषित करते हुए कहा है ''जीवन प्रत्यक्ष जैसा है और हमारी परिपूर्ण कल्पना में जैसा है, यही हमारा यथार्थ और आदर्श है (वही, पृष्ठ 179)।''

छायावाद के उद्भावक प्रमुख कवियों में महादेवी जी ने भले ही परिमाण में कम लिखे हैं, परंतु उन्होंने जितना भी लिखा है उतने में ही वे हिंदी साहित्य के इतिहास में चिर स्मरणीय रहेंगी। विषय की गरिमा तथा भावाभिव्यंजना की चारूता दोनों दृष्टियों से वे आज भी शीर्षस्थ हिंदी साहित्यकारों के समकक्ष पड़ती हैं। इसमें कोई दो मत नहीं है कि महादेवी जी की साहित्य साधना जीवन के मंथन से प्राप्त शाश्वत मूल्यों पर आधारित है और इन मूल्यों के जरिए वे जीवन भर मानव मात्र को संवेदन की उच्च भाव भूमि पर प्रतिष्ठित करने के लिए सदा तत्पर थी। विश्वम्भर मानव जी ने ठीक ही कहा है, ''जीवन का उद्देश्य यदि आर्तरिक शांति है तो महादेवी जी ने जीवन का ठीक पथ पहचान लिया था और उच्च स्तरीय पावन प्रेम का यदि कोई मूल्य है तो उनका काव्य अत्यधिक मूल्यवान''[12] है:

मेरे जीवन का आज मूक,
तेरी छाया से हो मिलाप,
तन तेरी साधकता छू ले,
मन ले करूणा की थाह नाप।

उर में पावस दृग में विहान !

और अंत में, जीवन भर दीपक सी जलते रहने की आकांक्षा रखने वाली इस आखण्ड ज्योति, दिव्य प्रतिभा को मेरा शत-शत प्रणाम:

मधुर-मधुर मेरे दीपक जल।
युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल।

संदर्भ संकेत :

1. सं. प्रभाकर श्रोत्रिय, प्रेमचंद आज, पृष्ठ 1, प्रेमचंद जन्मशती पर इंदौर में दिए गए महादेवी के भाषण से, मध्य प्रदेश साहित्य परिषद्, भोपाल, 1980 ।
2. गंगा प्रसाद पाण्डेय, महीयसी महादेवी, पृष्ठ 228, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1969 ।
3. गंगा प्रसाद पाण्डेय, महाप्राण निराला, पृष्ठ 19, महादेवी जी द्वारा लिखित भूमिका से, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1968 ।
4. वही, पृष्ठ 20 ।
5. सं. इंद्रनाथ मदान, महादेवी : चिंतन व कला, पृष्ठ 10 राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1965।
6. वही, पृष्ठ 42 ।
7. विश्वम्भर मानव, महादेवी की रहस्य भावना, पृष्ठ 149, किताब महल, इलाहाबाद, 1977 ।
8. सं. प्रभाकर श्रोत्रिय, नया ज्ञानोदय प्रत्रिका, जून 2006 अंक, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली ।
9. गंगा प्रसाद पाण्डेय, महीयसी महादेवी, पृष्ठ 171, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1909 ।
10. सं. प्रभाकर श्रोत्रिय, प्रेमचंद आज, पृष्ठ 02, प्रेमचंद जन्मशती पर इंदौर में दिए गए महादेवी के भाषण से, मध्य प्रदेश साहित्य परिषद्, भोपाल, 1980 ।
11. रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, पृष्ठ 732, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006।
12. विश्वम्भर मानव, महादेवी की रहस्य भवना, पृष्ठ 09, किताब महल, इलाहाबाद 1977।

अन्य सहायक पुस्तकें :

1. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, हिंदी साहित्य की बीसवीं शताब्दी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1991 ।
2. रमेश चंद्र शाह, छायावाद की प्रासंगिकता, प्रतीक प्रकाशन, इलाहाबाद, 1993 ।
3. सं. डॉ. रामजी पाण्डेय, महादेवी : श्रेष्ठ प्रतिनिधि गद्य रचनाएं, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली 1983 ।
4. नामवर सिंह, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1954 ।
5. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1998।

विश्व हिंदी दर्शन

अमेरिका में हिंदुस्तानी समाचार-पत्र व पत्रिकाएं

—डॉ. संतोष अग्रवाल*

प्रत्येक देश में अपने देश के समाचार जनता तक पहुंचाने के लिए समाचार पत्र एक माध्यम है। ये समाचार-पत्र सामान्यतय: उसी देश की भाषा-उपभाषा में एवं वहां की जनता से संबंधित समाचारों से परिपूर्ण होते हैं। चूंकि अमेरिका में आबादी विश्व के अनेक देशों से वहां आकर बसे अप्रवासियों की है अत: प्रभाव समाचार पत्रों पर भी पड़ा है। अर्थात् वहां पर समाचार-पत्र अलग-2 देशों से संबंधित एवं अलग-2 भाषाओं में अनेकों भाषाओं में निकाले जाते हैं भारत से संबंधित समाचार-पत्र अंग्रेजी में भी निकाले जाते हैं, हिंदी में भी निकाले जाते हैं और उर्दू में भी । अंग्रेजी में निम्न समाचार-पत्र निकालें जाते हैं :-

1. इंडिया एबराड-इस समाचार-पत्र में एशियन सोसायटी के बारे में सूचना व एशियन टेलीविजन नेटवर्क, ज्योतिषियों, बैन्क्ट हाल, बाथरूम फिटिंग शिक्षा, मनोरंजन शो, ग्रोसरी, डा. होमियोपैथी। बीमा, (आजीवन, दर्शक), निवेश, इमीग्रशन वीसा, यू. एस. ए. कनाडा, कोरियर व शिपिंग पुस्तकें-पत्रिकाएं, कालिज कार्डस व लम्बी दूरी सेवा एवं सिटी बैंक एन. आर. आई, जमीन जायदाद, मोर्टगेज, मैडिकल, शादी-विवाह, आभूषण सुटिंगस व साड़ी, रेस्तरां, धार्मिक त्यौहार एवं यात्रा संबंधी के बारे में, विज्ञापन दिए जाते हैं। यह समाचार-पत्र छ: स्थानों पर कैलिफोर्निया, न्यूयार्क, अटलान्टा, शिकागो, दलास, लास-एन्जिल्स और टोरन्टो से प्रति सप्ताह शुक्रवार को इंडिया एबराड पब्लिकेशन इन कारपोरेशन द्वारा प्रकाशित किया जाता है।

यह एक अंतरर्राष्ट्रीय समाचार पत्र है और भारत से बाहर सबसे बड़ा और उत्तरी अमेरिका में सबसे पुराना भारतीय समाचार-पत्र है जिसका प्रकाशन 1970 से प्रारंभ हुआ था। इसका मूल्य अमेरिका में 70 सैन्ट है। वार्षिक मूल्य अमेरिका में 30 डालर, भारत में 35 डालर, यूरोप में 78 डालर, अफ्रीका में 95 डालर और अन्य देशों में 75 डालर है। यह मूल्य पानी के जहाज से भेजने पर है। वायु सेवा के लिए 210 डालर है। इसके प्रकाशक व संपादक गोपाल राज के तथा संपादकीय तथा कारपोरेट मुख्यालय 43, पश्चिम 24 वी स्ट्रीट न्यूयार्क-10010 है।

आडिट ब्यूरो कैलीफोर्निया, इलिनायस अैक्सास, कनाडा, यू. के. और भारत है। भारत में पता 1/बी-2, पार्क बुड स्टेस, राओतुलाराम मार्ग, नई दिल्ली-22 है। यह समाचार-पत्र के रूप में पंजीकृत है।

इसके समाचार ब्यूरो, न्यूयार्क, शिकागो, भारत है। तथा सहयोगी संवाददाता न्यूयार्क, लॉस एन्जिलस (यू.एस.ए) बॉन (जर्मनी), वियाना (आस्ट्रेलिया) बैंकाक (थाईलैंड) सिंगापुर, कोलम्बो, ठाकर, इस्लामाबाद (साउथ एशिया) कलकता, बंगलौर, भोपाल, लखनऊ, जयपुर, श्रीनगर/जम्मू, गोआ, त्रिरुवन्तपुरम (भारत) है ।

इस समाचार-पत्र के ग्राहक यू.एस.ए. के सभी 50 राज्यों में तो हैं ही। इसके अतिरिक्त निम्न देशों में भी है:-

1. उतरी अमेरिका, कनाडा, मैक्सिको ।
2. यूरोप- आस्ट्रिया, बेल्जियम, बलगेरिया, साइप्रेस, चेकरिपब्लिक डेनमार्क, जर्मनी फ्रांस, फ़िनलेण्ड, जिब्रालटर, ग्रीस, हंगरी, आयरलैण्ड, इटली, नीदरलैण्ड, नार्वे, पोलैण्ड, पुर्तगाल, रूमानिया, रूस, स्पेन, स्वीडन, स्वीटजरलैण्ड, यू. के., यूक्टाइन।
3. एशिया व फार ईस्ट-आस्ट्रेलिया, भूटान, बंगलादेश, बू नैई दारा सेलूम, चीन, कम्बोडिया, हांगकांग, भारत, इन्डोनेशिया, जापान, लाओस, मलेशिया, नेपाल,

*ए-77, स्मृति, मधुवन, दिल्ली-92

354 HA/07—10A

न्यूजीलैण्ड, पाकिस्तान, फिलीपाइन्स, कोरिया, सिंगापुर, श्रीलंका, थाईलैण्ड, वियतनाम।

4. मिडल ईस्ट व खाड़ी के देश-बहराइन, इराक, इजराइल, जार्डन, कुवैत, साउदी अरब, अमन, सिरिया, टर्की, यूनाइटिड अरब, एमीरेटस, यमन ।

5. अफ्रीका- अल्जीरिया, अंगोला, बोस्तवाना, यूथोपिया, मिश्र, घाना, आइबरी कोस्ट, केन्या, लिब्या, मोरक्को, मोजाम्बिक, नाइजिरिया, सेनेगल, साउथ अफ्रीका, सिरिया, लिओना, सूडान, तनजानिया, यूगान्डा, जाम्बिया, जिम्बाबवे मैडगारकर, मारिशस ।

6. कैरेबीयन, सैन्ट्रल व साउथ अमेरिका, अरूबा, एन्टीगुआ, अर्जन्टाइना, बहमास, बारवे बारबेडोस, ब्राजील, थिली, कोलम्बिया, क्यूबा, कूरैक्को, गुआना, ग्रान्डा, जमाइका, पानामा, पेरू, सूरीनाम, सेन्टमार्टेन, सेन्ट विन्सेन्ट, त्रिनिदाद, पेन्जैएला ।

2. न्यूज इंडिया टाइम्स :– यह साप्ताहिक आधार पर प्रकाशित अंतर्राष्ट्रीय समाचार पत्र है। जिसे पैरी एंड वत इन कारपोरेशन, 244, 9वीं एवन्यू, न्यूयार्क द्वारा प्रकाशित कराया जाता है इसका मूल्य 60 सैन्ट है। इसमें कुल पृष्ठ 64 हैं । यह 1975 में प्रारंभ हुआ था। भारत में इसके वितरक सैन्ट्रल न्यूज एजेन्सी है। विदेशी संपादक जान पैरी लन्दन, बंगलौर और येरूसलम में संवाददाता है। इस समाचार पत्र के मालिक टाइम्स ऑफ इंडिया है।

3. इंडियन पोस्ट-यह समाचार पत्र न्यूयार्क, शिकागो, कैलीफोर्निया में प्रकाशित होता है। अमेरीकन भारतीयों की यह आवाज है तथा यह राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार पत्र है । पृष्ठ संख्या-24 है । इसके प्रकाशक रोमेश के सपरा एम. डी. (कैलीफोर्निया) एवं सुभाष सी सपरा (न्यूयार्क) है । प्रबंध संपादक रीनाराव है। इसके ब्यूरो सन डियागो, सैक्रामैन्टो, सैन्ट्रल बेली, वाशिंगटन डी. सी. शिकागो, फोनेक्सि, पिटसबर्ग, कैरोहिनास, लेसवेगास, अटलान्टा, डिटिराटयर (मिसीगन), बेस्टन, हाउसटन (टैक्सास), आस्टीन (टैक्सास) इलास (टैक्सास), साल्ट लेकसिटी (यूराह) कोलम्बस (ओडियो), साउथ एशिया (नई दिल्ली) है ।

4. इंडियां इन न्यूयार्क :–यह निशुल्क पेपर है तथा महाद्वीप के लोगों के द्वारा व उनके लिए ही छापा जाता है । इसमें मृत्यु समाचार, शहर का विचार, जमीन जायदाद, न्यूयार्क न्यूज पेपर से पृष्ठ, फोक्स, खेल, भारतीय खबरें, कैलेण्डर और भारतीय पड़ोसियों की खबरें होती हैं (इसके संपादक व प्रकाशक गोपाल राजू वितरण, करनैल सिंह, उत्पादन-जोगी जी समाला, मनोज-व्यास, मोगिशा पारीख, जुलियान वेरगारा, महेन्द्रा त्रिवेदी, योगेश महता, परिमल महता एवं जी एस मिश्रा द्वारा किया जाता है ।

5. डेली न्यूज-दैनिक पेपर है । संपादक, हैरियल एवं लिन्डा शेरीडन है । सहायक प्रकाशक-दूरा ऐलनथेय-सहायक प्रकाशक एवं कार्यकारी वी.पी. लेस गुड स्टेन है ।

6. न्यूज डे-यह दैनिक समाचार-पत्र रविवार को छोड़कर शेष दिन न्यूज डे इन, 235, पाइन लान रोड, मैलविले, न्यूयार्क । 1747 द्वारा प्रकाशित किया जाता है । इसके भेजने का खर्च पब्लिशर द्वारा पहले ही भुगतान कर दिया जाता है । प्रकाशक थोक में भेजने के लिए डाकघर को लिख कर देता है और उसे सस्ता भी पड़ता है । समाचार पत्र पर यह छाप भी दिया जाता है कि पीरियाडिकल पोस्टेल पैड । इसके अलग-2 भाग हैं । जिनके अलग करने से वह अलग पेपर जैसा दिखाई देता है । अर्थात् न्यूज के लिए अलग भाग-जिसमें ताजा खबर, मृत्यु संबंधी सूचना और मौसम की जानकारी होती है । इसी प्रकार अन्य भाग हैं :–

2. करंट एवं बुक्स-पुस्तकें, संपादकीय पत्र आदि ।

3. खेल-स्कूल स्पोटस, स्कोर बोर्ड, विशेष खेल संबंधी खबरें ।

4. मनी एवं कैरियर-म्यूचल फण्ड, धनी के बारे में, स्टॉक्स, वर्क प्लेस, रोजगार संबंधी ।

5. फैनफेयर-फिल्म समय, फिल्म की जानकारी, सिंगल फाइल क्रासवर्ड ।

6. न्यूयार्क शहर के पांच बोरों हैं । अत: पांचों जिवो (बोरों) के लिए इसमें अलग-2बोरों के लिए अलग-2 भाग हैं । जिस बोरों में यह पेपर बिकता है उस बोरों का भाग इसमें होता है । इस भाग में उस बोरों से संबंधित गार्डनिंग, खेल, क्या और कहां गाइड, जमीन जायदाद लाटरी

354 HA/07—10B

तथा विशेषतया उस बोरों की जानकारी से संबंधित कहानी व टाउनशिप के बारे में समाचार होते हैं ।

इसकी घर पर विवरण की दर रविवार की 4 डालर, सोमवार से शनिवार 2.7 डालर, दैनिक 75 सैन्ट लोंगलैण्ड व मेनहाटन के कार्यालयों के लिए है ।

आपी जनरल-आपी (ए.ए.पी.आई) का अर्थ है अमेरिकन एशोसियशन आफ फिजिर्शियन आफ इंडियन ओरिजन । यह पत्रिका है तथा नेलसन एडवानटेज इन कारपोरेशन द्वारा द्विमासिक प्रकाशित की जाती है । इसके पूर्व समिति के अध्यक्ष रंगारेडी, एम.डी. थे । इसके संपादक आनंद वार्थ, टेलचरकर एम.डी. 1225 स्ट्रीमबुड लेन कारलिनविले, 62626 है । इस पत्रिका में जो भी लेख, रिपोर्ट, प्रैस रीलिज, फोटो आदि छापने के लिए दिया जाता है वह इस पत्रिका की संपति बन जाता है तथा वापिस नहीं दिया जाता । प्रकाशन समिति को यह अधिकार है कि वह प्रकाशन के लिए भेजी गई सामग्री कुछ भी काट छांट कर दे । इसका प्रकाशन, प्रकाशन मास के पूर्व महीने की दस तारीख तक हो जाना अनिवार्य किया गया है । पुनः प्रकाशन के लिए प्रकाशन समिति की अनुमति आवश्यक है । प्रकाशन के लिए सामग्री भेजने के लिए कुछ दिशा-निर्देश बनाए हैं ।

जैसे कि लेख-800-1000 शब्द, रिपोर्ट-500-600 शब्द, समाचार 500 शब्दों तक, पत्र-250-300 शब्द के होने चाहिएं तथा वह प्रोसेसिंग फारमेंट में कंप्यूटर डिस्कोट 3.5 पर होने चाहिएं । हाथ से लिखे स्वीकार्य नहीं होंगे । ड्राइंग काली स्याही में होनी चाहिए यदि कम्प्यूटर पर है तो डिस्क के साथ भेजी जानी चाहिए । फोटो रंगीन 8.5 "x11" आकार की तथा फोटो के पीछे कैप्शन लिखा होना चाहिए । स्लाइडस एवं नैगेटिव भी स्वीकार किए जा सकते हैं ।

न्यूजवीक-यह 251, वैस्ट, 57वीं, स्ट्रीट न्यूयार्क-10019 से प्रकाशित होता है । इसका मूल्य 2.95 डालर है । नाम के अनुसार साप्ताहिक है । इसमें भाग जो नियमित है जिनमें परिवर्तन (पारस्कोप), साइबर स्कोप, दृष्टिकोण (पारस्पैकीटव), न्यूजमेक्स जार्ज एक बिल की "दी लास्ट वर्ड", स्पेशियल रिपोर्ट, और आर्टस में फिल्म, पुस्तक संगीत आदि की जानकारी होती है ।

उपरोक्त के अतिरिक्त न्यूयार्क टाइम्स दैनिक समाचार पत्र व "टाइम्स पत्रिका भी न्यूयार्क से प्रकाशित होती है ।

हिंदी के समाचार पत्रों/पत्रिकाओं का विवरण अलग है । ■

यदि भारतीय लोग कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं तो इसका माध्यम हिंदी ही हो सकती है ।

–चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

तकनीकी

इस्पातन अपशिष्ट

–सुरेश तिवारी*

इस्पात उद्योग अपने विभिन्न कार्यकलापों के कारण दूसरे उद्योग की अपेक्षा वृहद् एवं विशालकाय होता है । इस उद्योग के विशाल पैमाने पर होने के कारण, इसमें भारी मात्रा में धन, जन एवं दूसरे संसाधन, रॉ–मेटेरियल लगते हैं । कन्वर्टर द्वारा इस्पात बनाने की प्रक्रिया में उच्च गुणवत्ता का इस्पात बनाना कठिन है । कन्वर्टर द्वारा इस्पात बनाने की विधि को प्राथमिक इस्पातन कहा जाता है । इसका उपयोग केवल स्क्रैप को तीव्रतर गलाने तथा मोटे तौर पर परिष्करण के लिए किया जाता है । पूर्ण परिष्करण एवं गुणवत्ता नियंत्रण द्वितीयक इस्पात बनाने के दौरान किया जाता है । द्वितीयक धातुकार्मिकी का मुख्य उद्देश्य, परम्परागत इस्पात बनाने वाले इकाइयों जैसे कि एल.डी. (.) इत्यादि की अपेक्षा कुछ प्रचालन विधियों को तीव्रतर एवं कुशलतापूर्वक संपन्न करना है ।

इस्पात बनाने की विधि में प्राथमिक इस्पातन से लेकर द्वितीयक इस्पातन, इनगॉट कास्टिंग, सतत् संचकन आदि सभी प्रक्रियाएं सम्मिलित हैं । इस प्रकार इस्पात बनाते समय वृहद मात्रा में अपशिष्ट उत्पन्न होता है । इन इस्पातन अपशिष्टों का पर्यावरण पर व्यापक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । अतः अपशिष्ट सृजन को कम करना अति आवश्यक है । इसी कारण वर्तमान परिदृश्य में सुबद्ध अपशिष्ट प्रबन्धन जोर पकड़ रहा है । अपशिष्ट प्रबन्धन का महत्व इतना बढ़ गया है कि कंपनियों में इसके लिए अलग से विभाग खोला जा रहा है । वैसे भी अपशिष्ट को कम करने का यही एक तरीका है । अपशिष्ट प्रबन्धन द्वारा ही इस्पातन अपशिष्ट की मात्रा को कम कर पर्यावरण की संरक्षा की जा सकती है । पर्यावरण प्रदूषण को कम किया जा सकता है । आज से दो दशक पहले जो अपशिष्ट पदार्थ था, एक रद्दी पदार्थ था, आज मूल्यवान, उपयोगी पदार्थ बन गया है । दिन–प्रतिदिन घटते प्राकृतिक संसाधन जैसे कि अयस्क, खनिज एवं ईंधन आदि की खोज में अपशिष्ट पदार्थों की उपयोगिता ढूंढी जाने लगी है । अब ये पदार्थ उपयोगी साबित होने लगे हैं, काम में आने लगे हैं । वैज्ञानिकों एवं तकनीकीविदों का विचार बदल गया है । अब धातुकर्मीय कारखानों के अपशिष्टों से नए उपयोगी उत्पाद बनाए जाने लगे हैं । बीते दो दशकों में दुनिया ने विज्ञान के दौर में काफी प्रगति की है । अनेकों ऊर्जा संयमी (Energy efficient) तकनीक का विकास हुआ है । इन ऊर्जा संयमी तकनीक के चलते उत्पादकता में बेहद वृद्धि हुई है । इन्हीं कारणों से इस्पात बनाने वाली इस्पात संयंत्रों की उत्पादकता में बढ़ोतरी हुई है । उदाहरणस्वरूप ओपन हार्थ भट्टी (Open hearth furnace) से यमल हार्थ भट्टी (Twin hearth furnace) KORF भट्टी आदि का विकास । इनगॉट संचकन के क्षेत्र में लब्धि (Yield) एवं गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी के लिए काफी प्रयास किए गए जिससे स्क्रैप जनन में काफी कमी आई, जो (स्क्रैप) कि एक इस्पातन–अवशिष्ट है । इस प्रकार सतत् संचकन (Contiunous casting) प्रक्रिया का जनन एवं विकास हुआ । इनगॉट संचकन में तल प्लेट (Bottom plate), मोल्ड (mould), इस्पात छीलन (Steel chips) आदि का प्रयोग होता है । इत् इस्पात (killed steel) के उत्पादन के लिए मोल्ड के ऊपरी भाग में मोल्ड के अन्दर चारों ओर हॉट टॉप (Hot top) बोर्ड लगाए जाते हैं, फिर इस्पात का

*सहायक महाप्रबंधक, प्रचालन निदेशालय, सेल निगमित कार्यालय, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003.

अवपातन (Teeming) समाप्त होते ही मोल्ड में 4 बोरे (40 kg) हॉट टॉप पदार्थ डाले जाते हैं; जिससे मोल्ड के ऊपरी भाग में इस्पात का पिंडन (solidification) सबसे अन्त में शुरू होता है । अंशहत् इस्पात (semi killed) तथा नेमियन इस्पात (Rimming steel) के उत्पादन के लिए विऑक्सीकरण एवं अवपातन में किए गए सुधार के कारण अपशिष्ट जनन में कमी आई है । इस्पात उत्पादन की दुनिया में सतत् संचकन प्रकिया का प्रार्दुभाव इस प्रकार हुआ है कि इस तकनीक ने इस्पात उत्पादन के क्षेत्र में उत्पादकता, गुणवत्ता एवं ऊर्जा खपत पर अपनी एक विशेष एवं गहरी छाप छोड़ दी है जिससे इसकी महत्ता बढ़ गई है । यह तकनीक अति महत्त्वपूर्ण हो गई है ।

इस्पात उत्पादन की दुनिया में, अब उभर रही तकनीक का मुख्य उद्देश्य निर्मल इस्पात एवं उच्च गुणवत्ता इस्पात का उत्पादन है, जिसके फलस्वरूप अवशिष्ट सृजन कम हो गया है, और वैसे अवशिष्टों, जो रद्दी है, किसी भी काम का नहीं है, जिसका कहीं प्रयोग नहीं हो सकता, जिसका कोई उपयोग नहीं है, का सृजन बिल्कुल ही घट गया है । उदाहरण स्वरूप कम ऊर्जा वाली भट्टियां (EOF, Energy optimizing furnace) जिसने इस्पात बनाने की प्रक्रिया में ऊर्जा संरक्षण कर ऊर्जा खपत में कमी लाई हैं । इस प्रक्रिया में ऑक्सीजन का प्रवाह निर्मंजित ट्वीयर के जरिए बाथ (Bath) में किया जाता है, जिसके कारण उत्पादकता में आशातीत बढ़ोत्तरी एवं अपशिष्ट सृजन में कमी पाई गई है । उच्च श्रेणी पश्च दहन (Post combustion) प्रक्रिया के कारण EOF द्वारा विशिष्ट ऊर्ज़ा खपत दर (Specific energy consumption) का न्यून स्तर प्राप्त किया जा सकता है, जिसके फलस्वरूप आविषालू (Toxic) गैस एवं धूलि (Dust) उत्सर्जन में बेहद मात्रा में कमी लाई जा सकती है, जो कि एक अपशिष्ट पदार्थ है ।

इस्पात बनाने की प्रकिया के दौरान उपजनिक अवशिष्ट ठोस पदार्थों में निम्न प्रधान हैं :—

(क) स्टील मेकिंग धातुमल
BOF के द्वारा
OH के द्वारा

(ख) स्टील बनाने के समय जनित धूल

(ग) अपशिष्ट जल उपचार यूनिट (Waste water treatment plant) से निकला ठोस आपंक (sludge)

(घ) कन्वर्टर लैडल, टॅडिश आदि के विइष्टिकायन (Debricking) के कारण प्राप्त अपशिष्ट रिफ्रैक्टरी ।

इन ठोस अपशिष्ट उत्पादों का सृजन पूर्ण रूप से प्रचालन/प्रक्रिया के दौरान उपयोग में लाई जाने वाली कच्चे पदार्थों की गुणवत्ता एवं मात्रा पर निर्भर करता है । पर्यावरणी दृष्टि से इन अपशिष्ट पदार्थों का दंक्ष (Efficient) एवं लाभप्रद तरीकों से पुनः उपयोग अथवा समुचित निवर्तन (Disposal) जरूरी है ।

ठोस अपशिष्टों को उपयोग में लाने के लिए आजकल विभिन्न तकनीकें उपलब्ध हैं । जिनमें निम्नलिखित मुख्य हैं :—

1. **लोहमय अपशिष्ट का उपयोग :** इन अपशिष्टों का सूक्ष्म गुटिकायन (Micro pelletisation) करने के पश्चात् सिंटरित कर धमन भट्टी में घानन (charging) के लिए भेजा जाता है ।
2. अपशिष्ट रिफ्रैक्टरी का उपयोग कुट्ठन मिश्र (Ramming mass) एवं मसाला वनाने के लिए किया जाता है ।

इन तकनीकों को पूर्ण रूप से अपनाने से इस्पात संयंत्रों को तत्काल रूप से वित्तीय लाभ के साथ-साथ पर्यावरणी फायदे भी मिलेंगे । इसके अलावा इन तकनीकों को अपनाने से इस्पात संयंत्र का परिवेश बदल जाएगा, जिसकी अमिट छाप समाज पर पड़ेगी । ये ठोस अपशिष्ट पदार्थ प्लांटों में एक सुनिश्चित जगह पर फेंके जाते हैं, इस जगह को डम्प या संनिक्षेप (Dump) कहा जाता है । डम्प में इस ठोस अपशिष्टों को डालने पर एक तो डम्प बनाने के लिए बहुमूल्य जगह की व्यर्थ में कुर्बानी देनी पड़ती है, दूसरे ये ठोस अवशिष्ट पदार्थ चारों तरफ फैलकर आस-पास प्रदूषण फैलाते हैं; पर्यावरण प्रदूषित करते हैं । ये पदार्थ आस-पास की जगहों में अवांछित धूल (Dust) फैलाते हैं, निक्षालितक (Leachates) फैलाते हैं। निक्षाल के कारण भूमिगत पानी संदूषित (contaminated) हो जाता है । इन सब बातों के अलावा दिन-प्रतिदिन डम्प फेंकने की जगह कम होती जा रही है ।

ठोस अपशिष्ट के प्रयोग हेतु संभावित क्षेत्र

इस्पातन धातुमल—इस्पात बनाने के दौरान लगभग 165-200 किग्रा./C.S. की दर से धातुमल प्रजनित होता है।

अभी भी प्राय: सभी इस्पात संयंत्रों में इस्पातन धातुमल को बड़े-बड़े डम्पर (Dumper) में पे लोडर (Pay loader) के जरिए भरकर दूर ले जाकर डम्प में फेंक दिया जाता है । इस प्रकार धातुमल फेंकने के लिए प्लांट की चारदीवारी के अंदर या प्लांट के बाहर उपयोगी ज़मीन के विशाल टुकड़े को यों ही छोड़ना पड़ता है । इस्पातन धातुमल का प्रयोग रेल पटरियों के नीचे डाली जाने वाली गिट्टी के रूप में किया जा सकता है । इसका प्रयोग सड़क बनाने में किया जा सकता है । इस्पातन धातुमल का प्रयोग सड़क बनाने में किया जा सकता है । इस्पातन धातुमल का प्रयोग अन्य कई जगहों पर किया जा सकता है । उदाहरण के तौर पर इसका उपयोग मृदा अनुकूलन (Soil conditioner) के रूप में या जमीन के गड्ढों को भरने के काम में लाया जा सकता है ।

(क) **रेल गिट्टी (Rail ballast)**—SMS धातुमल तकनीकी रूप से रेल गिट्टी (आमाप-20-40 मिमी.) के लिए उपयोगी पाया गया है । इस्पात गलनशाला को धातुमल के इस व्यापक एवं महत्वपूर्ण उपयोगिता का ध्यान रखकर इसे डम्प में नहीं फेंकना चाहिए बल्कि रेल गिट्टी के रूप में इस्तेमाल करने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए । इस कार्य हेतु प्लांट को SMS धातुमल संदलन एवं सुविधाजनक आमाप के गिट्टी बनाने के लिए आवश्यक संरचना (Infrastructure) तैयार करना चाहिए, जिससे कि आमापित धातुमल (रेल गिट्टी) की आपूर्ति रेलवे को की जा सके ।

(ख) **रोड बनाने में**—इस्पातन धातुमल का उपयोग सड़क बनाने में हो सकता है । पत्थर के टुकडों की जगह पर इस्पातन धातुमल के टुकड़े लगाए जा सकते हैं । भारी वाहनों के लिए बनाए जाने वाले सड़क के निर्माण में इस्पातन धातुमल (SMS slag) का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है । रोड का निर्माण एकमात्र SMS धातुमल के प्रयोग कर के भी किया जा सकता है । तुलनात्मक अध्ययन के बाद SMS धातुमल से बनी सड़क, पत्थर के गिट्टी से बनी सड़क से बेहतर पाई गई है ।

(ग) **मृदा अनुकूलक के रूप में** —अम्लीय जमीन के लिए SMS धातुमल की क्षारकता एक अच्छे मृदा अनुकूलक का कार्य करती है । SMS धातुकल में विद्यमान फास्फोरस (P) एक पोषक तत्व का कार्य करता है, जिससे जमीन उपजाऊ हो जाती है । इस प्रकार SMS धातुमल जमीन की अम्लीयता को समाप्त करता है, जमीन में फास्फोरस की कमी को पूरा करता है, जिससे जमीन उपजाऊ हो जाती है । लेकिन SMS धातुमल का उपयोग मृदा अनुकूलक के रूप में करने के लिए यह आवश्यक है कि धातुमल को पीसकर महीन चूर्ण बना लिया जाए । परम्परागत संघर्षण तकनीक द्वारा इस कार्य को करने के लिए वृहद् मात्रा में ऊर्जा की खपत होती हैं । अत: SMS धातुमल का मृदा अनुकूलक के रूप में व्यापक एवं विस्तृत उपयोग के लिए यह आवश्यक है कि पहले दलन (Crushing) एवं संघर्षण (grinding) तकनीक को विकसित किया जाये और इसका उपयोग वाणिज्यिक तौर पर किया जा सकता है । इसका उपयोग उन जमीनों के लिए विशेष लाभकारी है, जहां कॉफी एवं चाय की खेती करनी हो ।

(घ) **सीमेन्ट बनाने में**—सीमेन्ट बनाने में SMS धातुमल का प्रयोग विदेशों में जैसे कि चीन, जापान तथा जर्मनी आदि देशों में पहले से ही हो रहा है । ये देश सीमेन्ट बनाने में SMS धातुमल का विभिन्न अनुपात में प्रयोग करते हैं । सीमेन्ट बनाने में SMS धातुमल दो तरीकों से उपयोग में लाया जा सकता है :—

1. साधारण पोर्ट लैंड सीमेन्ट बनाने के लिए कच्चे मेटेरियल के रूप में;

2. पोर्ट लैंड स्लैग सीमेन्ट बनाने के लिए एक अधिमिश्रण के रूप में ।

(ङ) **धातुमल**-अनुकूलक (Slag conditioner) **के रूप में** —कन्वर्टर धातुमल में विद्यमान मैंग्नेशियन एक अति उपयोगी तत्व है, जो धातुमल अनुकूलक का कार्य करता है ।

(च) **लोहमय अपशिष्ट**—इस्पात बनाने के दौरान जनित लोहमय महीन कण तथ गैस निर्मलन प्लांट आपंक (GCP sludge) आदि को प्राय: डम्प में फेंक दिया जाता है । इस आपंक में औसतन 40% आयरन, 10% चूना (lime) तथा शेष मैग्नेशिया आदि विद्यमान रहते हैं । GCP आपंक नि:सादित (Settle) होने के पश्चात् ज़ल एवं वायु प्रदूषण उत्पन्न करते हैं । इन लोहमय महीन/अपशिष्ट/आपंक के उपयोग के लिए इसका सूक्ष्म गुटिकायन कर सिंटरन किया जाता है । इस सिंटर का उपयोग धमन भट्टी में घान के रूप में किया जाता है । सिंटर बनाने में इस आपंक के

354 HA/07—11B

इस्तेमाल से धमन भट्टी की उत्पादकता बढ़ती है तथा आयरन अयस्क एवं फ्लक्स (गालक) की खपत घट जाती है । इस आपंक/महीन अपशिष्ट के गुटिका (pallets) का 100 किग्रा./टन सिंटर रहने पर धमन भट्टी की उत्पादकता 3-4% बढ़ जाती है ।

अपशिष्ट रिफ्रैक्टरी–कन्वर्टर, लैडल, टॅडिश आदि के विइष्टिकायन द्वारा तथा लैडल सर्पीद्वार रिफ्रैक्टरी (Slide Gate Refractory), सतत् संचकन (continuous casting) में प्रयुक्त ब्लैक रिफ्रैक्टरी जैसे कि उपनिविष्ट नॉजल (Sub entry nozzle), मोनोब्लॉक (monoblock stopper), लैडल आवरण (ladle shroud) आदि के कार्यकाल (life) समाप्त होने के पश्चात् प्राप्त रिफ्रैक्टरी मैटेरियल को अपशिष्ट रिफ्रैक्टरी कहा जाता है । इस प्रकार के रिफ्रैक्टरी का निर्वतन (disposal) निम्न तीन तरीकों से किया जाता है :–

(क) निस्तारित रिफ्रैक्टरी (Salvaged Refractory) का वह भाग जिसका पुन: प्रयोग किया जा सकता है, अलग कर लिया जाता है और उसे पुन: प्रयोग के लिए रिफ्रैक्टरी विभाग में भेज दिया जाता है ।

(ख) रिफ्रैक्टरी के टूटे-फूटे टुकड़े या तो बेच दिए जाते हैं अथवा उससे मसाला आदि तैयार कर उपयोग में लाया जाता है ।

(ग) रिफ्रैक्टरी के मलवे को डम्प में फेंक दिया जाता है ।

निस्तारित (salvaged) MgO-C ईटों का उपयोग कार्बनमय ईटों के उत्पादन में किया जा सकता है । अग्निसह मृत्तिका (Fire clay)/उच्च ऐलुमिना रिफ्रैक्टरी अपशिष्ट का प्रयोग विभिन्न श्रेणी के कास्टेबल एवं मसाला (mortar) बनाने के लिए किया जा सकता है । निस्तारित सर्पी द्वारा रिफ्रैक्टरी जैसे कि चल अध:स्तल प्लेट (sliding bottom plate), अचल टॉप प्लेट (fixed top plate), नॉजल (nozzle) आदि से उच्च ऐलुमिना कास्टेबल बनाया जा सकता है ।

इस्पात संयंत्रों में अवशिष्ट प्रबंधन एक उभरती हुई जटिल समस्या है, जिसका कार्यान्वयन अपशिष्ट आकनल (waste auditing), प्रचालन/प्रक्रम तकनीक में परिवर्तन तथा प्रवर्तन (enforcement) आदि के लिए आवश्यक आधारभूत संरचना की व्यवस्था करने के पश्चात् ही संभव है । अपशिष्ट प्रबंधन के लिए उपरोक्त साधनों/सुविधाओं का मॉनीटरन, विश्लेषण, बैधानिकीकरण (legalization) आदि के लिए एक नियमन सिस्टम (Regulating system) का होना जरूरी है । ■

दुनियाभर में शायद ही ऐसी विकसित साहित्य भाषा हो जो सरलता में और अभिव्यक्ति की दक्षता में हिंदी की बराबरी कर सके ।

–फादर कामिल बुल्के

पर्यावरण

वन्य जीवन संरक्षण

—दिलीप कुमार*

प्रकृति और पुरुष का सम्बंध सनातन है । इंसान जब से धरती पर आया है तभी से उसने प्रकृति और उसकी निहित शक्तियों का अपने हित में इस्तेमाल करना शुरू किया है । प्राकृतिक शक्तियों पर विजय प्राप्त करने की उसकी लालसा चिरकालिक है । हालांकि इन्हीं प्राकृतिक शक्तियों से उसे जीवन भी मिलता रहा है जिन्हें वह अपने वश में करना चाहता है । प्राचीन काल में इंसान की जनसंख्या कम थी तथा उसकी जरूरतें भी कम थीं । लेकिन समय के साथ आबादी बढ़ने के साथ इंसान की भौतिक आवश्यकताएं भी बहुगुणित अनुपात में बढ़ती गईं । भोजन, कपड़ा और आवास की जरूरतों के लिए प्राकृतिक संपदा का दोहन होता रहा । वन्य जीव भी इसके अपवाद नहीं रहे। उनका शिकार बढ़ा । पहले जमाने में शिकार खेलना राजे-महाराजों का प्रिय शुगल होता था । इसे मनोरंजन के साथ अपनी बहादुरी का प्रमाण भी माना जाता था । इस मानसिकता के चलते इस देश में हजारों शेर, बाघों तथा दूसरे जानवरों का शिकार हुआ । बढ़ती आबादी को बसने के लिए जगह की जरूरत थी । ऐसे में जंगलों की कटाई होती रही । एक जमाने में उत्तर भारत के गंगा जमुना के मैदानों में घने जंगल थे । लेकिन कालांतर में उपजाऊ जमीन तथा पानी की उपलब्धता के चलते इंसानी बस्तियां इस इलाके में तेजी से बसनी शुरू हुई । ऐसा ईसा से करीब दो हजार साल पहले की बात है । ईसा के समय के आसपास भी धरती पर इंसान की कुल आबादी करीब 30 करोड़ थी । आज आबादी का यह आंकड़ा 6 अरब को पार कर चुका है । भौतिक विकास, कृषि एवं बढ़ते औद्योगिकरण के चलते प्राकृतिक संसाधनों पर जबर्दस्त दबाव पड़ रहा है । बीसवीं सदी में वैज्ञानिक अवदानों के चलते विकास के नकारात्मक प्रभाव भी उतनी ही तेजी से बढ़े हैं । इसलिए आज प्राकृतिक संतुलन चरमरा गया है । जंगलों के कटाव से वन्यजीवों की स्वाभाविक शरणस्थली सिमटती जा रही है । ऊपर से वाणिज्यिक फायदों के चलते वन्यजीवों का शिकार जारी है । ऐसे में उन्हें बचाने एवं संरक्षण प्रदान करने का हमारा दायित्व और बढ़ जाता है ।

प्रकृति संरक्षण का विचार हमारे लिए कोई नई बात नहीं है । भारतीय संस्कृति में संरक्षण की बात प्राचीन काल से रही है । भारतीय जीवन दर्शन में प्रकृति-प्रेम एवं वन्यजीवों के प्रति समादर की परम्परा बहुत प्राचीन है । सिंधुघाटी की सभ्यता से ही इस बारे में शुरुआत हो चुकी प्रतीत होती है । उत्खनन से प्राप्त मुद्राओं, मूर्तियों इत्यादि में हाथी, गैंडा, बैल व कई अन्य पशुओं की आकृतियां मिलती हैं जो इस बात की परिचायक हैं कि तत्कालीन जीवन में पशुओं का अहम स्थान था । भारत में सर्वप्रथम सम्राट अशोक ने ईसा से तीसरी सदी पूर्व प्रकृति संरक्षण के प्रयास किए थे । अशोक के शासन काल में वन्य जीवों के शिकार की मनाही थी । इन बातों का उल्लेख सम्राट अशोक के शिलालेखों में मिलता है । अशोक की अहिंसा मानव तक ही सीमित नहीं थी अपितु यह मानवेतर प्राणियों के लिए भी थी । इंसान के साथ दूसरे सभी जीवों के सहअस्तित्व का यह उदाहरण किसी भी संस्कृति में अन्यत्र दुर्लभ है । बाबर एवं जहांगीर के शासनकाल में भी वन्य जीवों को उचित संरक्षण मिला था । इन बातों का जिक्र बाबरनामा पुस्तक में मिलता है । प्राचीन भारतीय कला में वन्य जीव संरक्षण का विचार जीवंत रूप में मिलता है । महान नीतिज्ञाता चाणक्य की रचना अर्थशास्त्र में भी प्रकृति एवं उसकी संपदा को अक्षुण रखने का भाव देखा जा सकता है । ज्ञान एवं नीति प्रदान करने वाले पंचतंत्र एवं जातक

*फ्रेंडस आफ लाइफ, निकट-महिंद्रा वर्कशाप, आनन्द बाग, बलरामपुर-271201 (उ.प्र.)

कथाओं में वन्य जीवों से संबंधित तमाम कहानियां देखी जा सकती हैं। हमारे साधु-संतों एवं ऋषियों तथा मुनियों ने वन्य जीवों के प्रति अहिंसा का भाव रखने का उपदेश दिया है। वेदों-पुराणों तथा उपनिषदों में वन्य जीवन का उल्लेख है। यह विडंबना ही है कि जिस देश में वन्य जीवों के प्रति इतनी सदाशयता रही हो आज वहीं पर वन्य जीव तेजी से लुप्त हो रहे हैं।

भौगोलिक दृष्टि से भारत में बहुत विविधता है। इस विविधता के नाते वन्यजीवों की अनेक प्रजातियां यहां मिलती हैं। पूरी धरती स्थित 12 मुख्य जैव विविधता से संपन्न क्षेत्रों में भारत भी एक है। एक ओर बर्फ से ढका हिमालय है तो दूसरी ओर गरमी से तपता थार का रेगिस्तान। एक ओर गंगा-यमुना का समतल और उपजाऊ मैदानी इलाका तो दूसरी ओर दक्षिण का पठार। संसार में मिलने वाली ढाई लाख वनस्पतियों में 15 हजार अकेले हमारे देश में मिलती हैं। पंद्रह लाख पशु-पक्षिओं में 75 हजार भारतीय मूल के हैं। अब जब हमें इनके संरक्षण की सुधि आई है तब तक 66 स्तनधारी, 38 पक्षी तथा उभयचरों की 18 प्रजातियां लुप्त हो चुकी हैं। भारत में मिलने वाला शिकारी चीता सदा के लिए लुप्त हो चुका है। बंगाल का शाही चीता जिसकी अनुमानित संख्या कभी 40,000 थी, अब घटकर 2000 रह गई है। एशियाई शेर आज केवल भारत में और वह भी गुजरात के गिर के जंगलों में पाया जाता है। इसी तरह हिरन की कई प्रजातियां संकट में हैं। कस्तूरी मृग इसका ज्वलंत उदाहरण है जिसका कस्तूरी हेतु शिकार किया जा रहा है।

बढ़ती कृषि जरूरतों, शहरीकरण तथा औद्योगीकरण के कारण पूरी दुनिया में वन तेजी से कट रहे हैं। ऐसे में वन्य प्राणी उजड़ रहे हैं तथा उनका शिकार हो रहा है। भारत भी इसका अपवाद नहीं है। बल्कि यहां स्थितियां ज्यादा विकट हैं। विश्व वन्यजीव कोष की रिपोर्ट के अनुसार अन्य देशों की तुलना में भारत में वन्य जीवों का शिकार सबसे तेजी से हो रहा है। प्रकृति संरक्षण के लिए कार्यरत अंतरराष्ट्रीय संस्था इंटरनेशनल यूनियन फॉर द कंजर्वेशन ऑफ नेचर ने रेड डाटा नामक पुस्तक में संकटापन्न 400 पक्षियों, 305 स्तनधारी, 193 मछलियों और 138 उभयचर जीवों की सूची जारी की है।

वन्यजीव संरक्षण की दिशा में भारत सरकार ने काफी पहले ही सोच लिया था। इस हेतु 1952 में सरकार ने भारतीय वन्यजीव बोर्ड का गठन किया। यह बोर्ड भारत सरकार को सलाह देता है। इसकी स्थापना के पीछे कुछ निजी संस्थाओं की भूमिका थी। इसमें बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी प्रमुख है। बाद में समय-समय पर समीक्षा के बाद संशोधन होते रहे हैं। वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम, 1972 के अनुसार जिन जीवों के अस्तित्व को खतरा पैदा हो गया था, उनके शिकार तथा व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। सन् 1976 में भारत सरकार ने सांप सहित कई जानवरों की खालों पर व्यापक प्रतिबंध लगा दिया है। लेकिन ध्यान देने की बात है कि सिर्फ कानून बन जाने से ही संरक्षण नहीं मिल जाता। आए दिन दुर्लभ प्राणियों की खालों के तस्करी में लगे लोग पकड़े जाते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि चोरी-छिपे इन प्राणियों का शिकार जारी है। वन्य जीवों की सुरक्षा एवं संरक्षण प्रदान करने हेतु भारत सरकार ने पूरे देश में 752 राष्ट्रीय उद्यान, 421 वन्य जीव अभयारण्य, 21 प्रोजेक्ट टाइगर एरिया तथा 8 बायोस्फीयर रिजर्व की स्थापना की है। इनका क्षेत्रफल देश के कुल क्षेत्रफल का 4% है। इतने बड़े तंत्र में कर्मचारियों की एक बड़ी फौज लगी हुई है किन्तु वन्य जीव फिर भी असुरक्षित हैं। कहा जाता है कि इसका एक कारण स्थानीय लोगों द्वारा सरकारी प्रयास को सहयोग न मिल पाना भी है।

उत्तरांचल के कार्बेट नेशनल पार्क तथा उत्तर प्रदेश के दुधवा नेशनल पार्क में ग्रामीणों द्वारा कई बाघों को जहर देकर मार डालने की घटना किसी के लिए नई नहीं है। सरिस्का से बाघों के गायब हो जाने से मचे हड़कंप तथा बाद में प्रधानमंत्री द्वारा एक टास्क फोर्स का गठन करना स्थिति की गंभीरता को बयान करता है। अभी हाल ही में गिरफ्तार शिकारियों ने रणथंभौर अभयारण्य में 19 बाघों के मारने की बात कबूली है। मध्य प्रदेश में कान्हा नेशनल पार्क में भी चोरी छिपे शिकार की बात कथित तौर पर प्रकाश में आई थी। ये घटनाएं बताती हैं कि स्थितियां बेहद चिंताजनक हैं।

बाघों के शिकार के पीछे एक सुनियोजित तंत्र कार्य करता है। इसके तार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तस्करों से जुड़े होते हैं। पूर्वी एशिया के कई देशों में बाघों की खाल के अलावा उसकी हड्डियों, दांतों, नाखूनों तक की भारी मांग है। इस कारण शिकारियों को उसके ऊंचे दाम मिलते हैं।

354 HA/07—12A

इनका कथित तौर पर कई तरह की दवाइयां बनाने में भी इस्तेमाल होता है । हाथी के दांत का प्रयोग सजावटी सामान बनाने में होता है अत: हाथी भी अवैध शिकार की चपेट में हैं । कस्तूरी के कारण कस्तूरी मृग के जान पर ही आ पड़ी है । अत: यह प्रजाति भी संकट में ही है । प्राकृतिक आपदा तथा महामारी से भी जंगली जीवों को बचाने की जरूरत है । जंगलों में आग लगने की घटना बहुत आम है । बाढ़ एवं अकाल भी वन्य जीवों के लिए खतरे हैं । कुछ साल पहले की बात है जब भीषण बरसात से आई बाढ़ से आसाम का काजीरंगा पार्क पूरी तरह से पानी में डूब गया । वन्य जीव जान बचाने के लिये इधर-उधर भागे । इसमें काफी जानवर बह गए । कितने हाथी तथा गैंडे इस बाढ़ के कारण मारे गए । सन् अस्सी में भी इसी तरह की बाढ़ आई थी जिसमें लगभग एक सौ गैंडे मारे गए थे । काजीरंगा के एक सींग वाले ये गैंडे पूरे संसार में केवल भारत में मिलते हैं ।

वन रिपोर्ट 1993 के अनुसार हमारे देश में वन संपदा की स्थिति चिंतनीय है । उपग्रह से प्राप्त चित्र के अनुसार देश के कुल क्षेत्रफल का 19.5% भाग ही वनस्पतियों से ढका है । इसमें लगभग 12% हिस्सा ही वास्तविक रूप से वनों से ढका है । राष्ट्रीय वननीति 1988 के अनुसार कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का एक-तिहाई वन होने चाहिए । देश के कुल 413 जिलों में 105 में 33%, 52 जिलों में 25% तथा शेष 217 जिलों में 19% से कम वन हैं। आज जरूरत इस बात की है कि सामान्य जनता में वन्य जीवों के प्रति जागरूकता पैदा की जाए क्योंकि सरकारी प्रयास ही काफी नहीं है । जब तक आम लोगों में अपनी धरोहर की महता तथा उपयोगिता की समझ नहीं होगी तक तक संरक्षण में पूरी सफलता मिल पाना नामुमकिन है । पिछले कई दशकों से हमने बाघ, गैंडे, मृग, मगरमच्छ, सहित अनेक प्रजातियों को संरक्षण देकर उनकी वंशबेल एवं संख्या नि:संदेह बढ़ाई है । हमें अपने प्रयासों में काफी सफलता मिली है । वन्य जीवों की सुरक्षा हेतु चेतना पैदा करने में फिल्मों, प्रदर्शनियों तथा मेलों की भूमिका हो सकती है । माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के आलोक में पर्यावरण शिक्षा को आवश्यक बना दिया गया है । पाठ्यक्रम में शामिल हो जाने से शुरू से ही लोगों में वन्यजीवों के प्रति चेतना पैदा होगी । भारत के सभी नागरिकों का यह दायित्व बनता है कि वे वन्यजीवों की सुरक्षा, उनके संरक्षण एवं संवर्धन में अपना योगदान दें क्योंकि इस बड़े प्रयास में सबकी सहभागिता वांछित है । ■

भाषा मनुष्य के आंतरिक चिंतन एवं समाज के लोगों के भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने का सबसे सहज एवं सशक्त माध्यम है ।

–डॉ. मनमोहन सिंह, प्रधान मंत्री, भारत

354 HA/07—12B

स्वास्थ्य

एड्स-जानकारी और बचाव

—डॉ. देशराज*

एड्स, (एक्वार्ड इम्यूनो डैफिसियंसी सिंड्रोम) एक वायरल बीमारी है । इसका वायरल एच.आई.वी. (ह्यूमेन इम्यूनो डैफिसियंसी) निर्जीव और सजीव के बीच की कड़ी है । शरीर के बाहर यह निर्जीव होता है । शरीर में जाने के बाद यह सजीव होकर अपनी संख्या बढ़ाना शुरू कर देता है और लगभग 1 वर्ष में रोगी को पूरी तरह से अपनी गिरफ्त में ले लेता है ।

2. एड्स का सम्प्रेषण (ट्रांसमिशन) :

एड्स का संप्रेषण एच.आई.वी. संक्रमित रक्त चढ़ाने से, एच.आई.वी. संक्रमित सिरिंज का प्रयोग करने से, असुरक्षित यौन संबंध से व एड्स बाधित महिला से पैदा होने वाले बच्चों को होता है । एड्स रक्त द्वारा अधिकतर चिकित्सकों, नर्सों व स्वास्थ्य-कर्मियों में फैलता है । असुरक्षित यौन संबंधों की वजह से ज्यादातर ट्रक-चालकों व युवाओं में फैलता है। एच.आई.वी. संक्रमित/एड्स बाधित मां के दूध में तथा एड्स रोगी के थूक में भी (दोनों में) थोड़ी मात्रा में होता है ।

3. एड्स के लक्षण :

रोगी के शरीर में बीमारियों से लड़ने की ताकत कम हो जाती है । उसे लगातार बुखार रहता है । गले की बीमारी फरेंजाइटिस हो जाती है । शरीर में गांठें हो जाती हैं । सिरदर्द और आंखों के नीचे दर्द होता है । रोगी का वजन कम हो जाता है । उसे भूख नहीं लगती । उल्टियां व दस्त हो जाते हैं। मैनिनजाइटिस व इंसेफ्लाइटिस (मस्तिष्क ज्वर) हो जाता है । त्वचा में कटाव व शरीर में लाल चकत्ते हो जाते हैं ।

तपेदिक, खांसी, बुखार आदि रोग खतरनाक नहीं होते, लेकिन ये रोग एड्स रोगी के लिए जान लेने वाले साबित होते हैं । एड्स के रोगी में किसी भी बीमारी से लड़ने की क्षमता कम होने की वजह से रोगी में एच.आई.वी. वायरस हैल्पर टी (बीमारी से लड़ने वाली) कोशिकाओं को कम कर देता है । हमारे शरीर में बहुत सारे बैक्टीरिया होते हैं, जोकि आमतौर पर हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचाते । लेकिन शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता कम हो जाने पर यही बैक्टीरिया शरीर में खतरनाक बीमारियां पैदा कर सकते हैं । 90% से ज्यादा एड्स रोगियों में त्वचा की बीमारी हो जाती है जोकि आम तौर पर उपचार के लिए प्रयोग में आने वाली दवाइयों से ठीक नहीं होती ।

4. ऐसा करने से एड्स नहीं फैलता :

रोगी के छूने से, उसके साथ खाने से, उससे बात-चीत करने से, उसके साथ घूमने से, उसे चूमने से (रोगी के थूक से थूक मिलने पर एड्स फैलने के चांस कम होते हैं) यह रोग नहीं फैलता ।

5. एड्स का कैसे पता लगाया जाता है :

रोग का पता रोगी के लक्षणों से लगाया जाता है । इलैक्ट्रान सूक्ष्मदर्शी से रोगी के रक्त में एच.आई.वी. वायरस का पता लगाया जाता है । इसके अतिरिक्त एलिसा टेस्ट के द्वारा रोगी के शरीर में एच.आई.वी. की प्रतिरोधक क्षमता का पता लगाया जाता है ।

6. उपचार :

एड्स का अभी तक कोई इलाज नहीं है । एंटी वायरल दवाइयां देकर रोगी में एड्स के लक्षणों को कुछ समय के

*382/1 मेन गली, आसाराम, मंडावली-फाजलपुर, दिल्ली-92

लिए दबाया जा सकता है । एंटीवायरल दवाइयों के भी अपने आप में बहुत सारे कुप्रभाव होते हैं, जैसे रक्त का कम हो जाना, लीवर व गुर्दे कमजोर हो जाना आदि । इस रोग का टीका अभी तक खोजने के प्रयास जारी हैं । एच.आई.वी. वायरस द्वारा अपने गुणबंधों में तेजी से बदलाव करने के कारण अब तक खोजा गया टीका सफल साबित नहीं हुआ है ।

7. रोकथाम के उपाय :

एड्स के बारे में जानकारी ही उपाय है । असुरक्षित यौन संबंध से बचा जाए । अस्पतालों आदि में सिरिंज (सूई) का एक बार ही इस्तेमाल किया जाए । हमेशा डिस्पोजेबल सिरिंज ही प्रयोग में लाए जाएं । उन्हें प्रयोग के बाद नष्ट कर दिया जाए । रक्त चढ़ाने से पहले उसकी एच.आई.वी. की जांच भी करा ली जाए । एड्स के बारे में जानकारी निम्नलिखित वैवसाइटों के अतिरिक्त इस लेख के लेखक से भी ली जा सकती है :--

(क) www.aids.info.nih.gov.

(ख) www.edcnpin.org

(ग) www.nih.gov.

(घ) www.cc.nih.phar

(ङ) www.cc.nih.hiv.mgt.

(ग) से (ङ) पर एड्स के उपचार में आने वाली दवाइयों की जानकारी फोटो सहित उपलब्ध है ।

[लेखक, मौलाना आजाद मैडिकल कालेज, नई दिल्ली-2 में एम.बी.बी.एस. (8वां सत्र) का छात्र है–संपादक] ■

लेखक कृपया ध्यान दें

राजभाषा भारती में प्रकाशनार्थ ज्ञान-विज्ञान की सभी विधाओं पर स्तरीय लेख आमंत्रित किए जाते हैं । लेख पर उचित मानदेय देने की भी व्यवस्था है । लेख ए-4 आकार के कागज पर टाइप किया हुआ होना चाहिए जो सामान्यत: तीन हजार शब्दों से अधिक का न हो । कृपया नोट करें कि हस्तलिखित लेख स्वीकार नहीं किए जाएंगे । लेख के साथ इस आशय का घोषणा पत्र भी होना चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक की मौलिक कृति है और यह इससे पहले प्रकाशित नहीं हुई है ।

यदि किसी कारणवश किसी लेख को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जाएगा । कृपया इस संबंध में पत्राचार न करें । कृपया लेख निम्नलिखित पते पर भेजें :–

संपादक/उप संपादक
राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय),
कमरा सं. ए-1, द्वितीय तल,
लोक नायक भवन, खान मार्किट,
नई दिल्ली-110003

राजभाषा संबंधी गतिविधियां

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

लघु उद्योग मंत्रालय और कृषि एवं ग्रामीण उद्योग मंत्रालय

माननीय लघु उद्योग और कृषि एवं ग्रामीण उद्योग मंत्री की अध्यक्षता में दिनांक 15-09-2006 को अपराह्न 4.00 बजे लघु उद्योग मंत्रालय और कृषि एवं ग्रामीण उद्योग मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समितियों की संयुक्त बैठक कोच्ची में आयोजित की गई ।

बैठक में उपस्थित सभी माननीय सदस्यों का अपर सचिव एवं विकास आयुक्त (ल.उ.) द्वारा स्वागत किया गया तथा लघु उद्योग मंत्रालय और कृषि एवं ग्रामीण उद्योग मंत्रालय में सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हिंदी में किए गए कार्यों का संक्षेप में उल्लेख किया गया । उन्होंने कहा कि दोनों मंत्रालय राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं । मंत्रालयों की सभी बैठकों में वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा वार्तालाप हिंदी में ही किया जाता है और ज्यादातर पत्राचार हिंदी में किया जाता है तथा राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अधीन जारी सभी कागजात अनिवार्य रूप से हिंदी में ही जारी किए जाते हैं । उन्होंने समिति के माननीय अध्यक्ष और सदस्यों से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाए जाने के लिए उनके बहुमूल्य सुझावों के लिए अनुरोध किया ।

माननीय मंत्री, लघु उद्योग और कृषि एवं ग्रामीण उद्योग मंत्रालय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में मंत्रालय में हिंदी में किए गए कार्यों तथा उपलब्धियों का ब्यौरा देते हुए कहा कि दोनों मंत्रालयों में अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अधिकाधिक कार्य हिंदी में किया जा रहा है । अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सभी सदस्यों को बताया कि सरकार की राजभाषा नीति का समुचित अनुपालन सुनिश्चित कराने के लिए लघु उद्योग मंत्रालय और कृषि एवं ग्रामीण उद्योग मंत्रालय के साथ-साथ सभी नियंत्रणाधीन कार्यालयों/निगमों/बोर्डों आदि को राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न क्षेत्रों अर्थात् 'क', 'ख', तथा 'ग' के लिए निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए समय-समय पर निदेश जारी किए जाते हैं । इसके उपरान्त अध्यक्ष महोदय ने बैठक की कार्यसूची पर मदवार चर्चा करने तथा समिति के सदस्यों से अपने बहुमूल्य सुझाव देने के लिए अनुरोध किया ।

समिति के मा. सदस्य श्री राशीद अल्वी द्वारा इस बिंदु पर चिंता व्यक्त की गई कि दोनों मंत्रालयों में अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी में काम करने में होने वाली झिझक को दूर करने के लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन करने की आवश्यकता पड़ती है । उन्होंने टिप्पणी की कि हिंदी में कार्य करने में झिझक किस बात की । अधिकाधिक सरकारी कार्य हिंदी में ही किया जाना चाहिए। मा. सदस्य श्री पठान गोहरखा करीमखा ने कहा कि विकास आयुक्त (ल.उ.) कार्यालय में हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन नहीं किया गया है, जबकि हिंदी कार्यशालाएं नियमित रूप से आयोजित की जानी चाहिए । इसके अलावा, मा. सदस्य श्री अल्वी ने यह भी कहा कि हिंदी पुस्तकों की खरीद का जो निर्धारित लक्ष्य अभी तक पूरा नहीं किया गया है, उसे यथाशीघ्र पूरा कराया जाना चाहिए । मा. सदस्य श्री राशीद अल्वी ने आगे उल्लेख किया कि दोनों मंत्रालयों में तो हिंदी पत्राचार ठीक हो रहा है किंतु मंत्रालय के नियंत्रणाधीन कार्यालय/निगम/बोर्ड आदि में हिंदी पत्राचार लक्ष्य से काफी कम किया जा रहा है । मा. सदस्य ने चिंता व्यक्त की कि अंग्रेजी की अपेक्षा हिंदी में फाइलों पर कम कार्य किया जा रहा है ।

दक्षिण पूर्व रेलवे, कार्यालय महाप्रबंधक (राजभाषा) गार्डनरीच, कोलकाता-43

क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 80वीं बैठक दिनांक 26-09-2006 को महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे, श्री विजय कुमार रैना की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। महाप्रबंधक महोदय ने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए नवोन्मेषी कदम उठाने पर बल दिया। हिंदी को रूटीन ढर्रे से निकालकर कुछ कार्यक्रम नए तरीके से लागू करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि रेलवे के तकनीकी शब्दों का हिंदी अनुवाद न करके उन्हें देवनागरी लिपि में लिखा जाए। हिंदी का प्रयोग करते समय अधिकारियों एवं कर्मचारियों को खुशी एवं आनन्द की अनुभूति होनी चाहिए।

अपर महाप्रबंधक, श्री एच.एस. पन्नू ने दक्षिण पूर्व रेलवे में विभिन्न रेलों के संदर्भ में दक्षिण पूर्व रेलवे की हिंदी संबंधी प्रगति को सराहा तथा उन्होंने कहा कि इस रेलवे की प्रगति, रेलवे बोर्ड की राजभाषा शील्ड प्राप्त करने के लिए, आंकड़ों की दृष्टि से अच्छे ढंग से दर्शाई जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि नोटिंग इस रेलवे का कमजोर पक्ष है। इसके लिए विभागाध्यक्ष, जे.ए. ग्रेड स्तर के नोटिंग के नमूने तैयार करके विभागाध्यक्षों एवं जे.ए. ग्रेड के अधिकारियों को दिए जाने चाहिएं।

मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्री इंतजार अहमद खां ने सभी अधिकारियों से आग्रह किया कि रेलवे बोर्ड द्वारा राजभाषा के संदर्भ में दिए गए लक्ष्यों को प्राप्त करना एवं उससे आगे जाना हम सबका कर्त्तव्य है। दक्षिण पूर्व रेलवे ने कुछ लक्ष्य प्राप्त कर लिए हैं, कुछ लक्ष्य प्राप्त किए जाने हैं। निरंतर प्रयास से इन लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती है। फाइलों पर नोटिंग करते समय हम झिझकें अथवा कतराएं नहीं, बल्कि छोटी-छोटी टिप्पणी हिंदी में दें। उन्होंने अपना उदाहरण देते हुए विद्युत विभाग की फाइलों में विषय अंग्रेजी में होते हुए भी हिंदी में लिखने का वाक्या बताया और अन्य विभागों के अधिकारियों से भी ऐसा ही करने का आग्रह किया। उन्होंने आशुलिपिकों को हिंदी में डिक्टेशन देने पर भी बल दिया।

कार्यालय, महाप्रबंधक (राजभाषा) पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

24 अगस्त, 2006 को पूर्वोत्तर रेलवे के मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री वी.के. जायसवाल की अध्यक्षता में रेलवे मुख्यालय एवं विभागेतर कार्यालयों में हिंदी प्रयोग-प्रसार की समीक्षा के लिए मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न हुई।

बैठक में अपने अध्यक्षीय संबोधन में मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री वी.के. जायसवाल ने कहा कि पूर्वोत्तर रेलवे पर मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से करके राजभाषा संबंधी प्रगति की निरन्तर समीक्षा हो रही है और उन्होंने कहा कि महाप्रबंधक महोदय की अध्यक्षता में 28-07-06 को संपन्न क्षेत्रीय रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में रेलवे हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य एवं संसद सदस्य कुंवर सर्वराज सिंह जी ने पूर्वोत्तर रेलवे पर भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति बरती जा रही सजगता की सराहना की है। इस परिप्रेक्ष्य में उन्होंने अनुरोध किया कि सभी अधिकारी अपने-अपने विभागों में अब तक हुई हिंदी प्रयोग की प्रगति में किसी प्रकार की गिरावट न आने दें, बल्कि प्रगति के प्रति निरन्तर प्रयत्नशील रहें।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.) II म.प्र., ग्वालियर

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.) द्वितीय म.प्र., ग्वालियर की त्रैमासिक बैठक दिनांक 31-10-2006 को अपराहन 5.00 बजे कार्यालय के सभा कक्ष में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता श्री एस.आर. धल, वरिष्ठ उप महालेखाकार/निधि-I द्वारा की गई।

सर्वप्रथम समिति के समक्ष गत तिमाही की बैठक दिनांक 27-7-2006 के कार्यवृत्त का वाचन किया गया। यह कार्यवृत्त सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। अध्यक्ष महोदय की अनुमति से सहा. लेखा अधिकारी हिंदी कक्ष II ने दिनांक 27-7-2006 की संपन्न राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक के कार्यवृत्त पर की गई अनुवर्ती कार्यवाही से समिति को अवगत कराया। इसके पश्चात् समिति को यह भी अवगत कराया गया कि नगर राजभाषा समिति ग्वालियर ने कार्यालय को वर्ष 2005-06 के लिए हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु शील्ड प्रदान की है। इस पर सभी ने करतल ध्वनि से अपना हर्ष प्रकट किया।

कार्यालय में हिंदी पुस्तकों के क्रय करने विषयक विचार किया गया। जैसा कि राजभाषा विभाग ने वार्षिक

कार्यक्रम् में बजट के पचास प्रतिशत से अधिक राशि की पुस्तकें खरीदने का निर्देश दिया है, अध्यक्ष महोदय ने कहा, कम्प्यूटर से संबंधित उपयोगी पुस्तकें जो कि हिंदी में लिखी गई हों, अधिक से अधिक क्रय की जानी चाहिएं । उन्होंने सामान्य भविष्य निधि नियम तथा आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु प्रबंधन विषयु की पुस्तकें भी खरीदने हेतु निर्देशित किया। इस विषय में वरि. लेखा अधिकारी/पुस्तकालय ने समिति को बजट राशि के विषय में जानकारी दी तथा पुस्तकें क्रय करने का आश्वासन दिया ।

मुख्य आयकर आयुक्त, हरियाणा क्षेत्र, पंचकूला

मुख्य आयकर आयुक्त, हरियाणा क्षेत्र, पंचकूला की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 05-09-2006 को दोपहर 12.30 बजे श्रीमती मंजु लखनपाल, मुख्य आयकर आयुक्त, पंचकूला की अध्यक्षता में उनके कमरे में आयोजित की गई ।

सदस्य सचिव ने सूचित किया कि राजभाषा विभाग द्वारा जारी वर्ष 2006-07 के लिए वार्षिक कार्यक्रम अनुसार 'क' क्षेत्र के लिए पत्राचार संबंधी निर्धारित लक्ष्य 100% है। अर्थात् 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकारी कार्यालयों से पत्राचार शत प्रतिशत हिंदी में किया जाना चाहिए और इसी प्रकार 'क' क्षेत्र में स्थित केंद्रीय कार्यालयों द्वारा 'क' तथा 'ख' क्षेत्र में स्थित राज्य एवं संघ राज्य सरकारी कार्यालयों में एवं गैर सरकारी व्यक्तियों को भेजे जाने वाले पत्र भी 100% हिंदी में ही भेजे जाने चाहिएं। 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकारी कार्यालयों से पत्राचार 65% हिंदी में किया जाना चाहिए ।

फाइलों पर हिंदी में टिप्पणी लिखने संबंधी मद पर चर्चा करते हुए अध्यक्ष महोदया ने चाहा कि फाइलों में अधिकतर टिप्पणियां हिंदी में लिखी जानी चाहिएं। हिंदी में टिप्पणी लिखने संबंधी निर्धारित लक्ष्य 75% है ।

सदस्य सचिव ने सूचित किया कि मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर लाईब्रेरी में खरीदी जाने वाली पुस्तकों पर 50% व्यय हिंदी पुस्तकों पर किया जाना चाहिए ।

अंत में अध्यक्ष महोदया ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने पर बल दिया । उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है, इसका जितना अधिक प्रयोग करेंगे उतना ही हम जनता के करीब होंगे । भाषा में कठिन शब्दों का प्रयोग न करके सरल एवं सुबोध शब्दों का प्रयोग करना चाहिए । उन्होंने वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को भी यथासंभव प्राप्त करने पर जोर दिया ।

नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लि. सैक्टर-33, फरीदाबाद-121003

निगम मुख्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2006-07 की दूसरी तिमाही बैठक श्री सुधीर चतुर्वेदी, निदेशक (कार्मिक) महोदय की अध्यक्षता में 25-09-2006 को आयोजित की गई । बैठक में सर्व प्रथम प्रबंधक-प्रभारी (राजभाषा) डॉ. राजबीर सिंह द्वारा एनएचपीसी में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया साथ ही पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुपालन की समीक्षा भी की गई ।

इस अवसर पर निदेशक (कार्मिक) महोदय ने एनएचपीसी में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यद्यपि हमारे निगम को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए समय-समय पर पुरस्कार प्रदान किए गए हैं तथापि अभी सभी लक्ष्यों को पूरा करने के लिए और ठोस प्रयास करने की आवश्यकता है । उन्होंने जोर देकर कहा कि हमें विशेष रूप से हिंदी पत्राचार को निगम मुख्यालय सहित परियोजनाओं में भी बढ़ाना है । राजभाषा नियमों के अनुपालन में कमी को निरीक्षण/संपर्क कार्यक्रम के माध्यम से दूर किया जाना चाहिए । उन्होंने कहा कि राजभाषा के कार्यान्वयन पर हमें पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिए क्योंकि यह हमारा राष्ट्रीय कार्य है । अध्यक्ष महोदय ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में जारी किए जाने वाले अधिनियम, नियमों व मार्गदर्शी निर्देशों का समुचित अनुपालन करना हम सबका संवैधानिक उत्तरदायित्व है । ■

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

गुवाहाटी

गुवाहाटी की वर्ष 2006-07 की पहली छमाही बैठक दिनांक 24-08-2006 को 3:00 बजे (अपराह्न में) आयकर विभाग, सैकिया कॉमर्शियल कॉम्पलेक्स, श्रीनगर, जी.एस. रोड, गुवाहाटी के बहुउद्देश्यीय ह्मल में आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता श्री पी.के. चोपड़ा, भा.रा.से., मुख्य आयकर आयुक्त (सं.नि.प्रा.) एवं अध्यक्ष, नराकास (कें.का.), गुवाहाटी ने की । बैठक की कार्यवाही का संचालन श्री शेष मणि शुक्ल, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सचिव, नराकास (कें.का.), गुवाहाटी ने किया ।

श्री पी.के. चोपड़ा अध्यक्ष, नराकास (कें.का.) एवं मुख्य आयकर आयुक्त, गुवाहाटी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि इस समिति के सदस्य कार्यालयों की संख्या अधिक है किंतु उपस्थिति कम है । इसी तरह समीक्षा रिपोर्ट से पता लगता है कि बहुत कम कार्यालयों ने छमाही रिपोर्ट भेजी है । कुछ कार्यालयों ने राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) का तथा राजभाषा नियम-5 का उल्लंघन किया है । कुछ कार्यालयों का हिंदी पत्राचार का प्रतिशत कम है । उन्होंने कहा कि नियम-5 के अनुसार कहीं से भी हिंदी में प्राप्त पत्र का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना अपेक्षित है । इसी तरह धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले कागजात द्विभाषी रूप में जारी किए जाने चाहिएं । भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2006-07 के लिए जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित किए गए लक्ष्य आप लोगों को दे दिए गए हैं । आप सभी से अनुरोध है कि वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए गंभीर प्रयास करें ।

अंगुल

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अंगुल की सत्रहवीं बैठक दिनांक 23-06-2006 को तालचेर थर्मल पावर स्टेशन (एनटीपीसी) स्थित अतिथि भवन के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गयी, इस बैठक की अध्यक्षता श्री रमेश चन्द्र, अपर महाप्रबंधक (प्रभारी), तालचेर थर्मल पावर स्टेशन ने की ।

अध्यक्ष श्री रमेश चन्द्र ने राजभाषा के कार्यान्वयन पर जोर देते हुए कहा कि हिंदी के प्रचार एवं प्रसार के लिए समस्त सरकारी कार्यालयों में हिंदी में काम-काज होना चाहिए । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की उन्होंने प्रशंसा की और कहा कि इसके माध्यम से हिंदी आगे बढ़ सकेगी । सम्मानित अतिथि श्री वी. शिव प्रसाद ने भी सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग के बारे में बताया ।

बैठक में उपस्थित उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग श्री वेद प्रकाश गौड़ ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा विभिन्न कार्यक्रम संयुक्त रूप से आयोजन करने हेतु जोर दिया । उन्होंने कहा कि यह अच्छी शुरुआत है । जहां चाह है, वहीं राह । कार्यान्वयन के लिए कोरग्रुप बनाना चाहिए । समस्त कार्यालय तिमाही प्रगति रिपोर्ट की प्रति नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को तथा उप निदेशक (कार्यान्वयन) कार्यालय को जरूर भेजना चाहिए । संयुक्त रूप से हिंदी कार्यशाला का आयोजन करना चाहिए । कर्मचारियों को हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान दिलाने के लिए कर्मचारियों का रोस्टर बनाकर प्रशिक्षण देना जरूरी है । बैठक का संचालन करते हुए सदस्य-सचिव श्री सुदर्शन तराई ने कहा कि भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा जारी कार्यान्वयन संबंधी आदेश के अनुपालन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एक उत्तम प्लेटफार्म है । इसमें सबको मिलजुलकर काम करना और अपनी कठिनाईयों को दूर करने के लिए आपस में विचार विमर्श करना चाहिए । प्रशिक्षण के संबंध में उन्होंने कहा कि नालको द्वारा अपने प्रशिक्षण संस्थान में हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ की पढ़ाई की जाती है । समस्त सदस्य कार्यालय अपने कर्मचारियों को नामित कर इसमें भेजना चाहिए ताकि सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति हो पायेगी ।

लुधियाना

लुधियाना नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 50वीं बैठक दिनांक 21-08-06 को इम्पीरियल होटल में आयोजित की गई । इस बैठक को इण्डियन ओवरसीज बैंक द्वारा प्रायोजित किया गया था । श्रीमती आरती साहनी,

मुख्य आयकर आयुक्त लुधियाना एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने इस बैठक की अध्यक्षता की ।

राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तर) गाजियाबाद से उपस्थित श्री जसवंत सिंह ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बहु आयामी गतिविधियों की भुरि-भुरि प्रशंसा करते हुए कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लुधियाना को लगभग 10 बार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग से पुरस्कृत होने पर ही संतोष नहीं करना चाहिए उन्हें इंदिरा गांधी शील्ड को प्राप्त करने के लिए भी कटिबद्ध होना चाहिए । सभी कार्यालय अध्यक्ष वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों की पूर्ति के लिए सत्य निष्ठा से प्रयास करें तथा अपने कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करें ।

इस अवसर पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लुधियाना की अध्यक्ष श्रीमती आरती साहनी ने उपस्थित सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा :-

'वैश्वीकरण के दौर में बढ़ती अंग्रेजी की प्रतिस्पर्धा में हिंदी की स्थिति और तैयारी का आकलन करके आगे की दिशा तय करना आज परम आवश्यक है। पिछले दशक के प्रारंभ तक हमारे देश की अर्थव्यवस्था जिस तरह से एक बंद और अत्यंत नियंत्रित अर्थव्यवस्था थी उसमें अंग्रेजी को हिंदी और अन्य भाषाओं के लिए ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति के लिए भी खतरा माना जाता था और तर्क यह दिया जाता था कि इससे भारतीय समाज में सांस्कृतिक चेतना कम हो रही है। परन्तु यह एक मिथ्या भ्रम था। आज हम देखते हैं कि विदेशी कंपनियों और विदेशी चैनल अपने उत्पादों की बिक्री के लिए खुले मन से हिंदी को अपना रहे हैं।

हमें हिंदी लिख-बोलकर स्वंय को गौरवान्वित अनुभव करना चाहिए। हमें कोशिश करनी चाहिए कि अपना अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में करें यद्यपि हमारी व्यवस्था की मानसिकता अंग्रेजी की ओर झुकी हुई है फिर भी बदलते समय के साथ हमें अपनी सोच शक्ति में आवश्यक परिवर्तन करने चाहिए। यह दुष्कर तो अवश्य प्रतीत होगा कि अंग्रेजी मानसिकता को कैसे एकाएक तिलांजलि दी जाए। परन्तु यह असंभव नहीं है। केवल हमें मानसिक रूप से ही तैयार होना है।'

झांसी

श्री मनोज सेठ, अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में दिनांक 01-05-06 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, झांसी की 41वीं बैठक का आयोजन किया गया। श्री मनोज सेठ ने सभी आमंत्रित सदस्यों एवं उप निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तर), गाजियाबाद का स्वागत करते हुए अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि सदस्य कार्यालयों के सहयोग के बिना बैठक सफल नहीं हो सकती। उन्होंने यह भी कहा कि कई सदस्य कार्यालयों से समय पर राजभाषा प्रगति की रिपोर्ट समय पर प्राप्त नहीं हो पाती है यह चिन्ता का विषय है। इससे बैठक में राजभाषा प्रगति की समीक्षा करना संभव नहीं हो पाता है और न ही कार्यालयों में प्राप्त की जाने वाली उपलब्धियों का ही पता पड़ पाता है इससे बैठक के उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो पाती है। वर्तमान में 55 से भी अधिक सदस्य कार्यालय हैं और रिपोर्ट कुछ कम प्राप्त हुई हैं। यह बैठक प्रत्येक छः माह में अर्थात् अप्रैल व अक्टूबर में आयोजित की जाती हैं और इसमें प्रत्येक छः माह की राजभाषा प्रगति की समीक्षा की जाती है। बैठक होने के बाद कार्यवृत्त के मदों पर हर कार्यालय से यह जानकारी अवश्य आनी चाहिए कि बैठक के बाद उस कार्यालय में क्या प्रगति की गई।

गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग (कार्यान्वयन) से पधारे उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री रामनिवास शुक्ल ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, झांसी के 20 वर्षों के इतिहास के दौरान प्राप्त उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए आशा व्यक्त की कि यह समिति नगर के सभी कार्यालयों के सहयोग से राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में और अधिक उपलब्धियां प्राप्त कर सकेंगी। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि भाषा किसी भी देश की संस्कृति की वाहक हुआ करती है। भाषा तो किसी भी राष्ट्र के हृदय का स्पंदन है। उन्होंने कहा कि जब कोई व्यक्ति भाषा बोलता है तो वह केवल भाषा नहीं बोलता, भाषा के माध्यम से उस व्यक्ति का व्यक्तित्व मुखरित होता है। उन्होंने सभी कार्यालयाध्यक्षों से अनुरोध किया कि वे राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य कर संवैधानिक और राष्ट्रीय दायित्यों का निर्वहन पूरी निष्ठा और समर्पित भावना से करें ताकि भारत सरकार द्वारा अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। उन्होंने कहा कि

संविधान में इस देश को शरीर दिया है तो राजभाषा ने उसमें प्राण प्रतिष्ठा की है।

इलाहाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इलाहाबाद की वर्ष 2006-07 की पहली बैठक दिनांक 30-08-2006 को माननीय आयकर आयुक्त श्री असीम कुमार की अध्यक्षता में आयोजित की गई । इस बैठक में 61 कार्यालयों के 107 अधिकारियों सहित केंद्रीय विद्यालयों के प्रधानाचार्य आदि उपस्थित थे।

बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजन हर्षे ने हिंदी भाषा को अपेक्षित सम्मान दिए जाने के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के प्रति सद्भाव और प्रेम रखने की भी अपेक्षा की। उन्होंने बताया कि इसके लिए हमें हिंदी के अलावा अन्य भाषाओं का ज्ञान रखना होगा। हमें अपने कार्य के प्रति श्रद्धा रखनी होगी और निजी स्वार्थ को भुलाना होगा, तभी हम देश एवं राजभाषा की उन्नति कर सकेंगे। आपने बताया कि देश की एकता और अखंडता की रक्षा में भारतीय भाषाओं की अहम भूमिका है।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में आयकर आयुक्त श्री असीम कुमार ने बताया कि राष्ट्र में भावनात्मक एकता स्थापित करने तथा उसके उत्थान और विकास के मार्ग में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और यह तभी संभव है जब हम एक दूसरे के विचार किसी ऐसी भाषा में प्रकट करें जिसमें किसी प्रकार की कठिनाई न हो और यह कार्य हिंदी भाषा ही कर सकती है। इसलिए आवश्यक है कि राजभाषा हिंदी का संपर्क भाषा के साथ-साथ कार्यान्वयन में उपयोग बढ़ाना ताकि संविधान के अनुच्छेद 351 में दिए अनुसार सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम बनकर देश की भावनात्मक एकता को बल देती रहे। अत: स्वाभिमान एवं संविधान दोनों की अपेक्षा है कि हम अपने मूल विचार व्यवहार और सभी प्रकार का सरकारी कार्य अपनी भाषा हिंदी में ही करें।

जयपुर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जयपुर की 51वीं अर्द्धवार्षिक बैठक दिनांक 25-8-2006 को अपरान्ह 3.00 बजे महालेखाकार भवन जयपुर के मनोरंजन कक्ष में आयोजित की गई। श्रीमती मीनाक्षी मिश्रा महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) राजस्थान, जयपुर एवं पदेन अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि सदस्य कार्यालयों द्वारा प्रेषित छ: माही प्रतिवेदनों की समीक्षा करने पर यह बात सामने आई है कि कुछ कार्यालय राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अनुपालन में कठिनाई अनुभव कर रहे हैं। इसके अन्तर्गत जारी किये जाने वाले दस्तावेज केवल अंग्रेजी में जारी न किए जाकर द्विभाषी जारी किए जाने चाहिए। कहीं कहीं राजभाषा नियम 5 का भी उल्लंघन किया जा रहा है। हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर नियमानुसार हिंदी में ही दिया जाना चाहिए। इन दो मदों में यदि भविष्य में अनुपालन सुनिश्चित कर लिया जाए तो मेरे विचार में वर्ष में आयोजित की जाने वाली दो बैठकों का लक्ष्य काफी हद तक पूरा हो सकता है।

उन्होंने आंग्ल भाषा का प्रचार प्रसार तीव्र गति से तथा हिंदी भाषा का धीमी गति से होने पर हैरानी व्यक्त करते हुए कहा कि यह हमारी ईमानदारी, निष्ठा, लगन और प्रयास में कमी का द्योतक है। इसके लिए उन्होंने कर्मचारियों/ अधिकारियों की मनोवृति को जिम्मेदार ठहराया और आह्वान किया कि यदि हम सभी यह प्रण कर लेंवे कि जब-जब लेखनी चलेगी हिंदी में ही चलेगी तो निसंदेह इस उपाय से हिंदी के प्रचार प्रसार में अत्यधिक सहायता मिलेगी। यहाँ उन्होंने प्रसिद्ध बंगला कवि श्री बंकिम चंद्र चटर्जी की उक्ति उद्धत करते हुए बताया कि अपनी मातृभाषा बंगला में लिखकर मैं बंगबन्धु हो गया हूँ किंतु भारतबंधु तब ही हो सकूंगा जब भारत की राष्ट्रभाषा में लिखुंगा।

उप निदेशक कार्यान्वयन, मध्य क्षेत्र, भोपाल एवं राजभाषा प्रतिनिधि श्री सुनील सरवाही जी ने अपने वक्तव्य की शुरूआत में नवागंतुक पदेन अध्यक्ष एवं सचिव का स्वागत करते हुए कहा कि अध्यक्ष महोदया के मार्गदर्शन एवं सचिव जो युवा पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं, की ऊर्जा का लाभ इस समिति को प्राप्त होगा। इस बैठक में बड़ी संख्या में वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति सराहनीय कही जा सकती है। आज से 4 वर्ष पूर्व की स्थिति और आज की बैठक की उपस्थिति में बहुत अन्तर आया है। इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं तथा अध्यक्ष महोदया के कार्यालय के प्रयास भी सराहनीय है। वर्तमान परिपेक्ष्य में उन्होंने कहा कि सूचना के अधिकार ने राजभाषा को बहुत महत्वपूर्ण बना दिया है।

(ग) कार्यशालाएं

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंगलूर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंगलूर के तत्वाधान में, हिंदी दिवस समारोह-2006 के उपलक्ष्य में, दिनांक 30 अगस्त, 2006 को, कार्पोरेशन बैंक द्वारा अपने कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय में एक दिवसीय संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में कुल 57 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें से 31 प्रतिभागी नराकास मंगलूर के सदस्य कार्यालयों से थे तथा 26 प्रतिभागी कार्पोरेशन बैंक से थे । भारत संचार निगम लिमिटेड कार्यालय की श्रीमती जयलक्ष्मी, सहायक निदेशक (राभा) द्वारा कार्यालय में उपयोग में लाए जाने वाले सामान्य टिप्पण एवं प्रारूपण की जानकारी देते हुए, प्रतिभागियों से अभ्यास करवाया । नाबार्ड के क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र से पधारे श्री रामन जगदीशन, सहायक निदेशक (राभा) द्वारा सामान्य एवं कार्यालयीन अनुवाद का परिचय देते हुए प्रतिभागियों से अनुवाद अभ्यास करवाया ।

श्री बी प्रकाश पई, हिंदी अधिकारी, नव मंलगरू पत्तन न्यास द्वारा वार्षिक कार्यक्रम 2006-07 का परिचय देते हुए विभिन्न मानदंडों के तहत लक्ष्य प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन भी दिया गया । तदनंतर कार्पोरेशन बैंक के श्री सुरेश कुमार, प्रबंधक (राभा) द्वारा प्रशासनिक शब्दावली पर प्रतिभागियों को अभ्यास करवाया गया । अंतिम सत्र में डॉ बी.आर. पाल, हिंदी अधिकारी, एम.आर.पी.एल द्वारा हिंदी भाषा, व्याकरण एवं वाक्य संरचना विषय में प्रतिभागियों की शंकाओं को दूर करते हुए व्याकरण के नियमों का परिचय दिया गया । सभी प्रतिभागियों ने कार्यशाला के सभी सत्रों में सक्रिय रूप से भाग लिया ।

मुख्यालय, मुख्य अभियंता, सेवक परियोजना, पिन-931714, द्वारा 99 सेना डाकघर

मुख्यालय में दिनांक 4 से 6 सितम्बर 2006 तक तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला की अवधि प्रतिदिन 11.30 बजे से दोपहर 13.00 बजे तक डेढ़ घंटे की थी ।

इस कार्यशाला में सेवक मुख्यालय तथा स्थानीय यूनिटों के 29 कर्मचारियों ने भाग लिया । कार्यशाला के दौरान हिंदी लिपि, वर्तनी, पत्र, परिपत्र, नोटिंग, अन्तर-कार्यालय-टिप्पणी, आदि के अभ्यास के साथ पत्र व्यवहार तथा दैनिक कार्य में प्रयुक्त होने वाले वाक्यांशों का भी अभ्यास कराया गया एवं राजभाषा नियम और हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं के बारे में भी बताया गया ।

कार्यशाला के समापन समारोह की अध्यक्षता श्री आर. एस. घेरा, संयुक्त निदेशक (प्रशा.), परियोजना के हिंदी अधिकारी ने की । इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि आप लोग इस कार्यशाला में बताई गई बातों का उपयोग अपने दैनिक सरकारी काम-काज में करें और आप अपने अंदर हिंदी में कार्य करने की इच्छा जगाएं तभी इस प्रकार के आयोजनों को सफल माना जा सकेगा ।

केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, मुख्यालय फरीदाबाद

केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, मुख्यालय फरीदाबाद में 11-12 सितंबर, 2006 को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं सदस्य (ईडीएमएम) श्री बी.एम. झा ने कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कहा कि सरकारी कार्यालयों में हिंदी को शत-प्रतिशत कामकाज की भाषा बनाने के लिए प्रयास करना हम सबका दायित्व है । हिंदी कार्यशाला का आयोजन इसी प्रयास की एक कड़ी है । उन्होंने आशा व्यक्त की कि कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत सभी प्रतिभागी अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे । उद्घाटन के अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए निदेशक (प्रशासन) श्री एस.के. सिन्हा ने कहा कि हिंदी देश की संपर्क भाषा बन चुकी है, इसे सरकारी कार्यालयों की भाषा बनाने के लिए हम सबको प्रयास करना चाहिए । प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए वित्त एवं लेखाधिकारी श्री के.सी. शर्मा ने कहा कि हिंदी तो जन-जन का कंठहार है । हिंदी बोलने, लिखने में गौरव-बोध होना चाहिए । श्रीमती राजकुमारी देव, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), जल संसाधन मंत्रालय, नई दिल्ली ने भारत सरकार की राजभाषा नीति, नियम, अधिनियम, की विस्तृत जानकारी दी । कार्यशाला के दूसरे सत्र में अतिथि व्याख्याता के रूप में केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली में संयुक्त निदेशक श्री एम.एस. दोहरे को आमंत्रित किया गया था । श्री दोहरे ने प्रतिभागियों

को हिंदी टिप्पणी और मसौदा लेखन का अभ्यास कराया । केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, मुख्यालय में उपनिदेशक (राजभाषा) डॉ. वीरेन्द्र कुमार सिंह ने प्रतिभागियों को पारिभाषिक शब्दावली एवं शब्द निर्माण प्रक्रिया के संबंध में जानकारी दी । केंद्रीय भूमि जल बोर्ड के निदेशक (प्रशासन) श्री एस.के. सिन्हा ने सभी प्रतिभागियों से विचार विमर्श करने के बाद आशा व्यक्त की कि यह कार्यशाला उनके लिए काफी उपयोगी सिद्ध हुई होगी । निदेशक महोदय ने सभी प्रतिभागियों से बातचीत करने के उपरांत हिंदी कार्यशाला पर केंद्रित एक संक्षिप्त मूल्यांकन टिप्पणी प्रस्तुत की ।

कार्यशाला के समापन समारोह को अपनी उपस्थिति से गौरवान्वित करते हुए बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सलीम रोमानी ने कहा कि सभी प्रतिभागी कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग कर भारत सरकार की नीतियों को सार्थक बनाएंगे, ऐसी आशा है । अध्यक्ष महोदय ने अपने करकमलों से सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कारस्वरूप शब्दकोश दिए । धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह संपन्न हुआ ।

महानिदेशालय, भा.ति.सी.पु. बल

महानिदेशालय, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं सरकारी काम हिंदी में करने में कर्मचारियों की झिझक दूर करने के लिए केंद्रीय अभिलेख कार्यालय के लिपिकीय प्रशिक्षण स्कूल, तिगड़ी में 21 है.कां/सी.एम. के लिए 4 से 6 सितम्बर, 2006 तक "तीन कार्य दिवसीय हिंदी कार्यशाला" आयोजित की गई ।

महानिदेशालय के कांफ्रेंस हॉल में आयोजित एक सादे समारोह में मुख्य अतिथि श्री प्रमोद अस्थाना, भा.पु.से., उप महानिरीक्षक (प्रशासन) ने कार्यशाला के प्रशिक्षणार्थियों को "कार्यशाला में भाग लेने संबंधी प्रमाणपत्र" एवं "सहायक साहित्य" भेंट किया ।

श्री नन्द लाल, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशासन) ने अपने स्वागत संबोधन में आशा प्रकट की कि इस प्रकार की कार्यशालाओं के आयोजन से हिंदी में काम-काज करने का वातावरण विकसित होगा तथा हर स्तर पर सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा और कार्मिकों की हिंदी में काम करने में आने वाली कठिनाइयां भी कम होंगी । उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला में हिंदी से जुड़े विषयों की व्यावहारिक कक्षाओं का आयोजन भी किया गया । तत्पश्चात्, उन्होंने परिणाम घोषित किया एवं प्रशिक्षणार्थियों को बधाई दी ।

मुख्य अतिथि श्री प्रमोद अस्थाना, भा.पु.से., उप महानिरीक्षक (प्रशासन) ने हिंदी में कार्य करने की झिझक दूर करने के लिए चलाई जा रही कार्यशाला में प्रशिक्षणार्थियों के भाग लेने पर प्रसन्नता प्रकट की और आशा व्यक्त की कि इसमें उन्होंने अवश्य कोई नई चीज सीखी होगी । उन्होंने कहा कि अगर किसी काम को आसान शब्दों से निपटाया जा सकता है या सरल भाषा में कह दिया जाए तो शायद लिखने एवं सुनने वाले के लिए आसानी हो और उसे समझना भी आसान होगा । उन्होंने इच्छा प्रकट की कि प्रशिक्षणार्थियों ने कार्यशाला में जो कुछ सीखा है उसका प्रयोग करें तथा अपने अन्य सहकर्मियों को भी बताने का प्रयास करेंगे ।

अंत में उन्होंने कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी प्रशिक्षणार्थियों, विशेषकर परीक्षा में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त कार्मिकों को बधाई दी । उन्होंने हिंदी कार्यशाला के सुव्यवस्थित आयोजन की सराहना की और कार्यशाला के इस समारोह में आमंत्रित करने के लिए आभार प्रकट किया ।

भारी पानी संयंत्र, तालचेर

राजभाषा नियमों तथा संयंत्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णय का अनुपालन करते हुए भारी पानी संयंत्र, तालचेर में दिनांक 27 जुलाई, 2006 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन समारोह दिनांक 27-7-2006 को प्रातः 10.30 बजे प्रशिक्षण कक्ष में किया गया । इस समारोह की अध्यक्षता श्री पी.आर. महान्ति, अध्यक्ष, राभाकास, भापासं, तालचेर ने की ।

अध्यक्ष, राभाकास, भापासं, तालचेर ने 11वीं हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन किया तथा अपने उद्बोधन में उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को इस कार्यशाला का लाभ उठाते हुए अपने सरकारी कामकाज में यथासंभव हिंदी का प्रयोग करने का तथा राजभाषा हिंदी को उनका यथोचित स्थान दिलाने में अपना योगदान देने का आह्वान किया ।

इस कार्यशाला में संयंत्र की राजभाषा समन्वयन समिति के 8 सदस्यों तथा विभिन्न अनुभागों से नामित 14 कार्मिकों ने भाग लिया ।

इस कार्यशाला में श्री वि.वि. कुलकर्णी, सहायक निदेशक (रा.भा.), भापासं (कोटा) द्वारा "संघ की राजभाषा नीति" तथा "मानक वर्तनी", श्री मनोज शर्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.), भापासं (तूतीकोरिन) द्वारा "हिंदी वाक्यों में अशुद्धियां" तथा "विभागीय गतिविधियां" और श्री धनेश परमार द्वारा "हिंदी में विभिन्न पत्राचार विषयों" पर विद्धतापूर्ण व्याख्यान दिए गए ।

लघु उद्योग सेवा संस्थान, करनाल

दिनांक 12-9-2006 को संस्थान के सभागार में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका विषय रखा था "राजभाषा वर्तनी एवं इसके विभिन्न आयाम" । कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुरेश यादवेन्द्र, निदेशक, करनाल ने की एवं डॉ. अशोक भाटिया, प्रोफेसर राजकीय महिला महाविद्यालय, करनाल मुख्यवक्ता के तौर पर पधारे ।

प्रोफेसर, भाटिया, ने "राजभाषा वर्तनी एवं इसके विभिन्न आयाम" पर अपना प्रभावशाली वक्तव्य दिया । उन्होंने बताया कि डा. हरदेव बाहरी के शब्दकोश के आखिर में उन शब्दों की सूची दी गई है जो अंग्रेजी शब्द हिंदी में अपना लिए गए हैं । हमें उन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए । हमें हिंदी को सरल एवं सहज प्रयोग करना चाहिए और कठिन शब्दों से बचना चाहिए । उन्होंने शब्दों का प्रचलित रूप प्रयोग करने के लिए अपील की जैसे नयी और नई अब उच्चारण में नई शब्द आ गया है और यह प्रचलित रूप भी है । इसी प्रकार से जाएंगे शब्द को कैसे लिखना है, के बारे में बताया । उन्होंने दूसरी भाषाओं से लिए गए शब्दों के बारे में बताया जैसे आदमी फारसी शब्द है, फसल अरबी शब्द है । पुलिस अंग्रेजी शब्द है । चाय चीनी भाषा से लिया गया शब्द है । रिक्शा जापानी भाषा का शब्द है लेकिन अब ये सभी हमारी भाषा में रच बस गए हैं और हमें प्रगतिशील दृष्टिकोण अपनाते हुए इनको स्वीकार कर लेना चाहिए । उन्होंने हिंदी के स्वर, व्यंजन, संयुक्ताक्षर एवं इनके प्रयोग पर विस्तार से चर्चा की । उन्होंने अरा लिपि के बारे में भी जानकारी दी जिसमें सभी भारतीय भाषाएं लिखी जा सकें । उन्होंने कहा कि मात्राएं केवल हिंदी भाषा में ही है, अंग्रेजी में नहीं; शब्द तोड़ दीजिए, हिंदी सरल हो जाएगी हिंदी में 15 लाख शब्द हैं । वर्तनी का संबंध लिपि से है । उन्होंने कहा कि अंग्रेजी का हम पर दबाव जरूर है लेकिन फिर भी हमें अपनी भाषा को यंत्र योग्यता में पिछड़ने नहीं देना है । हमें और लिपि बनाने की कोशिश करनी चाहिए । उन्होंने अधिकारियों/कर्मचारियों की शंकाओं का निवारण किया ।

संस्थान के निदेशक श्री सुरेश यादवेन्द्र ने अपने संबोधन में कहा कि अगर हिंदी के प्रति हमारे अंदर अगर समर्पण और प्रयास की भावना हो तो हमें हिंदी के प्रचार प्रसार की आवश्यकता ही नहीं होगी । अगर हम हिंदी सीखने का प्रयास करें और इसके प्रति समर्पित हों तो कोई कारण नहीं कि राजभाषा हिंदी इस प्रकार की कार्यशालाओं की मोहताज हो । उन्होंने कहा हिंदी अपनाइए, स्वाभिमान पाइए । भाषा से भाव निकलते हैं, अपनापन आता है । आज माइक्रोसाफ्ट कम्पनी के जन्मदाता बिल गेट्स हिंदी में साफ्टवेयर बाजार में उतार चुके हैं । उनको भारतीय बाजार की जानकारी है । हमें ज्यादा से ज्यादा टिप्पणयां हिंदी में लिखनी चाहिए ।

केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, मुख्यालय, नागपुर

दिनांक 18-7-2006 को क्षेत्रीय निदेशालय, केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, इलाहाबाद द्वारा होटल पंचशील, मलदहिया, वाराणसी में बोर्ड में कार्यरत दक्षिण, पूर्व तथा उत्तर-पूर्व अंचल के शिक्षा अधिकारियों के लिए आयोजित तीन दिवसीय राजभाषा हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि **श्री राजेश मिश्रा, सांसद, वाराणसी एवं सदस्य, संसदीय राजभाषा समिति** ने कहा कि—

हम भारतीय हैं, हमें हिंदी में बोलने, लिखने एवं कामकाज करने में गौरवान्वित होना चाहिए ।

प्रतिभागियों को कार्यशाला के दौरान राजभाषा नीति, पत्राचार, तिमाही प्रगति रिपोर्ट, हिंदी शिक्षण योजना आदि विषयों से संबंधित जानकारी दी गई । कार्यशाला को रोचक बनाने तथा प्रतिभागियों को अधिकाधिक प्रोत्साहित करने की दृष्टि से अतिथि वक्ताओं को भी आमंत्रित किया गया । श्री श्रद्धानंद, प्रोफेसर, महात्मा गांधी, काशी विद्यापीठ, वाराणसी, श्री दयानंद, वरिष्ठ संपादक, आज समाचारपत्र, वाराणसी ने अतिथिवक्ता के रूप में अपना व्याख्यान दिया । प्रतिभागियों के अंदर छिपी रचनात्मक प्रतिभा को बाहर लाने के लिए कार्यशाला में लेखन प्रक्रिया का अभ्यास भी कराया गया । प्रतिभागियों ने बड़ी उत्सुकता से इसमें भाग लिया ।

दिनांक 20-7-2006 को **केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड के शासी निकाय के सदस्य श्री शिवगोपाल मिश्रा** के समापन भाषण के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ । अपने समापन भाषण में श्री शिवगोपाल मिश्रा ने कहा कि मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है कि केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड के अधिकारी/कर्मचारी हिंदी सीखने में अधिक रूचि ले रहे हैं और मैं यह आशा रखता हूं कि प्रतिभागी अधिकारी यहां से जाकर अपने कार्यालय में अधिकाधिक कार्य हिंदी में करेंगे ।

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, मेन रोड, मोती नगर, बालाघाट (म.प्र.)

भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग की राजभाषा नीति के क्रियान्वयन के तहत तथा केंद्रीय रेशम बोर्ड के निर्देशों के अनुपालन में केंद्रीय रेशम बोर्ड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बालाघाट इकाई की दिनांक 21-9-2006 को बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, बालाघाट के कार्यालय परिसर में केंद्र के उप निदेशक श्री देबाशीष दास की अध्यक्षता में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हमारा देश विविधताओं का देश है, जिसकी अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है तथा ग्रामीण स्तर पर बसी है, जिनकी विविध बोलियां एवं भाषाएं हैं । हमारे देश की शासन पद्धति में सांस्कृतिक एकता, धार्मिक सद्भाव भौगोलिक एवं राष्ट्रीय सीमाओं तथा भाषाई समन्वय को देखते हुए हिंदी भाषा का राजभाषा का दर्जा दिया गया है, जिसमें हम शासकीय कार्य करके देश के हर नागरिक के हितों की रक्षा कर सकते हैं, क्योंकि अंग्रेजी की गुलामी से मुक्ति के पश्चात् हम देश के नागरिकों को विदेशी भाषा में कार्य करके उचित सेवा नहीं दे पाते । इस अवसर पर श्री टी.सी. बिसेन, हिंदी व्याख्याता ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी व्याकरण, शासकीय पत्रों के लेखन एवं मानक भाषा आदि का प्रशिक्षण दिया ।

लघु उद्योग सेवा संस्थान, तृश्शूर

हिंदी पखवाड़े के उपलक्ष्य में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित हुई । राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से उसे सरकारी कामकाज में सरलतापूर्वक प्रयोग में लाने के उद्देश्य से इस एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

इस कार्यशाला में इस संस्थान के अधिकारियों-कर्मचारियों के अतिरिक्त तृश्शूर नराकास के कार्यालयों/बैंकों आदि से प्रतिनिधि उपस्थित हुए ।

हिंदी कार्यशाला के तकनीकी सत्र का संचालन संस्थान के वरिष्ठ हिंदी अनुवादक श्रीमती राजश्री वर्मा द्वारा किया गया । प्रथम सत्र में उन्होंने "सामान्य हिंदी व्याकरण" पर कक्षा चलाई जिसके अंतर्गत ने क प्रयोग 'का', 'की' 'के' 'में' 'से' 'पर' 'द्वारा' इत्यादि कारकों के ठीक प्रयोग पर ध्यान केंद्रित किया । हिंदी भाषा में लिंग के संबंध में आनेवाली व्याकरणिक समस्याओं का समाधान किया गया ।

द्वितीय सत्र में दैनिक सरकारी कार्य में प्राय: प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों/वाक्यांशों का हिंदी अनुवाद/रूपांतर प्रस्तुत किया गया । इसके अतिरिक्त देवनागरी लिपि के मानकीकरण के संदर्भ में 'अ', 'आ', 'श', 'ण', 'झ' इत्यादि हिंदी अक्षरों के मानक स्वरूप के प्रयोग पर जोर दिया गया । सहायक निदेशक (आ अ) श्री पी सी जोस के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिंदी कार्यशाला समाप्त हुई ।

भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, लोदी रोड़, नई दिल्ली

मुख्यालय में दिनांक 21-8-2006 से 25-8-2006 तक एक पांच दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विभाग के 19 कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । इस हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन महानिदेशक महोदय श्री बी. लाल ने किया ।

हिंदी कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए ज्येष्ठ हिंदी अधिकारी श्री ए.बी. लाल ने सभी प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत करते हुए विभाग में हिंदी कार्यशाला के उद्देश्य एवं उसकी रूपरेखा की जानकारी दी । इस कार्यशाला के दौरान हिंदी में टिप्पण, प्रारूप लेखन के अभ्यास के अलावा पारिभाषिक शब्दावली, हिंदी वर्तनी, हिंदी अंग्रेज़ी अनुवाद के संबंध में व्याख्यान दिए गए ।

आकाशवाणी, कडपा केंद्र

आकाशवाणी, कडपा में दिनांक 31-10-2006 को सुबह 10.00 बजे से शाम 6.00 बजे तक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया है ।

हिंदी कार्यशाला का प्रथम सत्र दिनांक 31-10-2006 को सुबह 10.00 बजे को आमंत्रित अतिथि वक्ता, सहायक भविष्य निधि कार्यालय में कार्यरत श्री एस. के. महबूब, बाशा, हिंदी अनुवादक ने हिंदी राजभाषा नीति से संबंधित अधिनियम, नियम और धारा के बारे में पूर्ण रूप से विश्लेषण दिए गए हैं । बाद में आकाशवाणी, कडपा केंद्र में कार्यरत हिंदी अनुवादक श्री एम. सुब्बशेखर ने हिंदी प्रयोग में आनेवाली कठिनाईयों के बारे में बताते हुए हिंदी शुद्ध रूप में लिखने की अभ्यास कराया गया ।

दूसरे सत्र में श्री टी.आर. श्रीमूर्ति, उप प्रबंधक (हिंदी) पावर ग्रिड कार्पोरेशन लिमिटेड, कडपा ने हिंदी में टिप्पण और मसौदा लिखने के बारे में बताया गया ।

कार्पोरेशन बैंक, प्रधान कार्यालय, मंगलादेवी मंदिर मार्ग, डा. पे. स. 88, मंगलूर-575001

प्रधान कार्यालय की कार्यात्मक इकाइयों में नामित हिंदी संपर्क अधिकारियों हेतु दिनांक 25 सितंबर, 2006 को एक उन्नत हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला का उद्घाटन श्री के. ए. कामत, महा प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया । अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि हिंदी संपर्क अधिकारियों को अपने परिचालन क्षेत्र में नवीनता लानी होगी जिससे सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को हर तरह से जीवंत बनाया जा सके । उन्होंने कहा कि भाषा का प्रयोग इस तरह से होना चाहिए कि वह प्रयोक्ता के विचारों को अभिव्यक्त कर सके । बैंकिंग के क्षेत्र में भी कर्मचारियों द्वारा इस तरह बातचीत की जानी चाहिए जिसे सुनकर ग्राहक खुश हों ।

हाल ही में हुए कार्पोरेशन बैंक, इंडियन बैंक एवं ओरिएंटल बैंक ऑफ कामर्स के गठबंधन का संदर्भ देते हुए उन्होंने वर्तमान प्रतिस्पर्द्धात्मक वातावरण में अस्तित्व को बनाए रखने के लिए प्रौद्योगिकी, संसाधन, सूचना आदि को बांटने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया । उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि किसी भी भाषा का प्रयोग नया कारोबार प्राप्त करने तथा अधिक से अधिक ग्राहक प्राप्त करने हेतु होना चाहिए । अपने विद्यमान एवं संभावित ग्राहकों को उपलब्ध कराई जा रही सेवाओं के मूल्य संवर्धन में भाषा अपने आप में एक प्रभावी और उपयोगी साधन सिद्ध हो सकती है । वाणज्यिक संगठन के रूप में अपने कारोबार के प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उन्नयन हेतु बैंकों द्वारा हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग किया जाना आवश्यक हो गया है ।

कर्नल रा. प्र. गोपालन, सहायक महा प्रबंधक महोदय ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए प्रतिभागियों को कहा कि विभिन्न कार्यात्मक इकाइयों में नामित हिंदी संपर्क अधिकारियों का यह दायित्व है कि वे अपने प्रभागों/विभागों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को सुनिश्चित करें । उन्होंने कहा कि इस संदर्भ में अनुवाद में मार्गदर्शन हेतु राजभाषा प्रभाग का सहयोग प्राप्त किया जा सकता है । उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि प्रत्येक कर्मचारी को अपने स्तर पर हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना चाहिए ।

इन्डस्ट्रियल डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड, शाखा कार्यालयः जनपथ शाखा, आई.डी.बी.आई. हाउस, जनपथ, भुवनेश्वर-751022 (ओडिशा)

आई.डी.बी.आई.लि. भुवनेश्वर में विगत दिनों एक आठ-सत्रीय चार-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन बैंक के सहायक महाप्रबंधक श्री निरंजन मिश्र ने किया । उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी के प्रयोग पर बल देते हुए हिंदी में छोटे-छोटे कामों से शुरू करने की सलाह दी । उन्होंने प्रतिभागियों को हिंदी शुरू करने पर बल देते हुए आगे कहा कि हम इस काम को शुरू करें, आसान लगेगा ।

कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि व प्रथम सत्र के अतिथि वक्ता डॉ. शंकर लाल पुरोहित जाने-माने साहित्यकार व पूर्व विभागाध्क्ष (हिंदी), बी.जे.बी. कॉलेज, भुवनेश्वर ने हिंदी के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कार्यालय में हिंदी से प्रेम करने व परिवेश बनाने पर बल दिया और हिंदी कार्यान्वयन पर अपने उद्गार व्यक्त किए । बाद में उन्होंने 'हिंदी वर्तनी व उसके मानक रूप (अभ्यास सहित)' विषय पर भी व्याख्यान दिये ।

संचालक व सहायक महाप्रबंधक (हिंदी) श्री आर. पी. सिंह ने प्रतिदिन हिंदी-लाभ प्राप्त करने का आह्वान किया । उन्होंने हिंदी कार्यशाला के महत्व पर बल देते हुए इसे कार्यालय में व्यावहारिक बनाने का अनुरोध किया । उन्होंने इस अवसर पर कार्यशाला का विवरण पेश किया । श्री सिंह ने प्रोत्साहन देने के लिए संबन्धित तीन पुरस्कारों की भी घोषणा की ।

कार्यशाला में हिंदी व्याकरण (अभ्यास सहित); हिंदी टिप्पणी व टिप्पण (अभ्यास सहित), हिंदी टिप्पण व प्रारूपण (अभ्यास सहित); हिंदी अनुवाद (अभ्यास सहित); हिंदी पत्राचार (अभ्यास सहित); पारिभाषिक शब्दावली (अभ्यास सहित); तथा कामकाजी हिंदी और कार्यालय में उसका प्रयोग (अभ्यास सहित) जैसे स्त्रों पर विभिन्न वक्ताओं ने सारगर्भित व्याख्यान देकर प्रतिभागियों को प्रेरित करने तथा व्यावहारिक बनाने की कोशिश की जिससे कालान्तर में कार्यालय के हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बल मिला व भविष्य में भी मिलेगा तथा स्टाफ-सदस्य अपने दैनन्दिन कार्यालयी-कार्यों को हिंदी में कर सकने में सक्षम भी होंगे ।

यह कार्यशाला 14 अगस्त से 18 अगस्त, 2006 तक बैंक के सम्मेलन कक्ष में सम्पन्न हुआ । समापन समारोह पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जी.एम.खान, विभागाध्यक्ष (हिंदी), रमा देवी कॉलेज, भुवनेश्वर ने हिंदी के महत्व पर अपने विचार रखे तथा प्रतिभागियों को प्रेरित करते हुए व हिंदी को व्यवहार में लाने की सलाह देते हुए कहा कि जब डेस्क पर आप काम करेंगे तो यह आसान हो जाएगा । उन्होंने यहाँ के हिंदी प्रयोग पर खुशी जाहिर की तथा इसे और आगे बढ़ाने का अनुरोध किया । उन्होंने निर्णायक की भूमिका भी अदा की । श्री रवीन्द्र प्रसाद सिंह, प्रबंधक (हिंदी) ने मूल्यांकन प्रपत्र भरवाया तथा उसकी जाँच की ।

(घ) हिंदी दिवस

कार्यालय कंपनी रजिस्ट्रार गुजरात, दादरा, एवं नगर हवेली

दिनांक : 08-09-06 से 14.9.2006 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया । राजभाषा विभाग के मार्गदर्शी निर्देशानुसार दिनांक 14-09-2006 को शासकीय समापक महोदय की अध्यक्षता में हिंदी सप्ताह का समापन समारोह रखा गया । उक्त सप्ताह के दौरान कार्यालय कार्य अधिकाधिक हिंदी में किया गया तथा हिंदी संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई एवं विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किए गए । जिसके कारण कार्यालय में हिंदी को लागू करने में अधिक प्रोत्साहन मिला । इस सप्ताह के दौरान कार्यालय कर्मचारियों ने यथा सम्भव अपना कार्य हिंदी में किया ।

कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय (कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग)

कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय, कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग में सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग किए जाने हेतु प्रेरक वातावरण बनाने के प्रयोजन से दिनांक 14-9-2006 से 28-9-2006 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस अवधि के दौरान अहिंदी भाषी कर्मचारियों/अधिकारियों की श्रुतलेखन (Dictation)प्रतियोगिता, हिंदी टाइपलेखन प्रतियोगिता, हिंदी आशुलिपि प्रतियोगिता, हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता (अधिकारी वर्ग)ए हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता (कर्मचारी वर्ग), अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता और सामान्य ज्ञान एवं राजभाषा ज्ञान संबंधी प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन विविध प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को दिनांक 27-9-2006 का आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में सचिव (कार्मिक) द्वारा पुरस्कार और प्रशास्ति पत्र प्रदान किए गए। साथ ही दिनांक 4-9-2006 से 8-9-2006 तक आयोजित की गई पांच दिवसीय हिंदी कार्यशाला में नियमित रूप से भाग लेने वाले कार्मिकों को भी सचिव (कार्मिक) द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। अध्यक्ष महोदय ने सफल प्रतिभागियों को बधाई दी और समस्त अधिकारियों और कर्मचारियों से सरकारी कामकाज हिंदी में करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इस विभाग में हिंदी में काम करने की संभावना असीम है। इस अवसर पर हास्य रस की कवि-गोष्ठी का भी आयोजन किया गया था। आमंत्रित कवियों ने अपनी कविताओं से समारोह की शोभा बढ़ाई।

पूर्ति प्रभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, नई दिल्ली

पूर्ति प्रभाग, वाणिज्य विभाग, नई दिल्ली में 14 सितम्बर 2006 से 28 सितम्बर 2006 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया जिसमें प्रभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रभाग में अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं यथा हिंदी वर्तनी प्रतियोगिता, कंप्यूटर पर हिंदी टंकण व दक्षता प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़े का पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह संयुक्त सचिव (पूर्ति) श्रीमती भारती सिवास्वामी सिहाग की अध्यक्षता में दिनांक 28-9-2006 को सम्पन्न हुआ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में संयुक्त सचिव श्रीमती सिहाग ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने की अपील की उन्होंने कहा कि हिंदी का प्रयोग केवल पखवाड़े तक सीमित न रखते हुए पूरे साल भर करें। मिली-जुली भाषाका प्रयोग देवनागरी लिपि में करने से हिंदी का प्रयोग कहीं अधिक बढ़ेगा। सरकारी हिंदी और साहित्यिक हिंदी में अन्तर होता है। सरकारी हिंदी का पयोजन, सरकार और जनता के बीच सम्पर्क साधना है।

भारत सरकार, संसदीय कार्य मंत्रालय

संसदीय कार्य मंत्रालय में 1 से 14 सितंबर, 2006 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया, जिसका उद्घाटन संयुक्त सचिव महोदय द्वारा किया गया। मंत्रालय में 14 सितंबर, 2006 को हिंदी दिवस के मुख्य कार्यक्रम आयोजित किए गए तथा इसी अवसर पर सचिव महोदया द्वारा कर्मचारियों को पुरस्कार वितरण के पश्चात् हिंदी पखवाड़े का समापन किया गया।

गुजरात डाक सर्किल कार्यालय, अहमदाबाद

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, गुजरात सर्किल, अहमदाबाद में 14-9-2006 से 28-9-2006 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितंबर, 2006 को एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें माननीय गृहमंत्री जी और डाक विभाग के सचिव महोदया का संदेश पढ़कर सुनाया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों तथा प्रतियोगिताओं के विषय में जानकारी दी गई। इस अवसर पर मुख्य पोस्टमास्टर जनरल महोदया ने सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं देते हुए हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए सभी को आह्वान किया। उन्होंने बैठक में चर्चा करते हुए कहा कि हिंदी का प्रवाह हिंदी पखवाड़ा तक ही सीमित न रह कर प्रत्येक दिवस हिंदी दिवस मानकर हिंदी में काम करने का पूरा प्रयास किया जाए ताकि हिंदी की प्रगति से सके। सर्किल कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित 6 प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया।

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन सर्वेक्षण अभिकल्प एवं अनुसंधान प्रभाग महलानोबिस भवन 164, गोपाल लाल ठाकुर रोड़, कोलकाता-700 108

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन के सर्वेक्षण अभिकल्प एवं अनुसंधान प्रभाग में दिनांक 14-09-2006 से 28-09-2006 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान दो प्रतियोगिताएं एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया।

हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री जी. सी. मन्ना, उप महानिदेशक ने की। डा. आर. एन. पाण्डेय, उप महानिदेशक ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि जिस प्रकार हमें एक भारतीय होने का गर्व है उसी प्रकार हमें अपनी राजभाषा हिंदी पर भी गर्व होना चाहिये। भारत के लोगों के लिए अंग्रेजी की अपेक्षा हिंदी में अपने विचारों का आदान-प्रदान करना आसान है। श्री जी. सी. मन्ना उप महानिदेशक ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा कि हिंदी भाषा हमारे राष्ट्रीय गौरव एवं भावविनिमम का एक सशक्त माध्यम है। उन्होंने अधिकारियों एवे कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे सरकार की राजभाषा नीति को

स. अ. अ. प्रभाग में पूर्णतः लागू करने में अपना सक्रिय सहयोग दें ।

सेमी-कंडक्टर लेबोरेटरी अंतरिक्ष विभाग, सैक्टर-72, एस. ए. एस. नगर मोहाली-160071

सेमी-कंडक्टर लेबोरेटरी में हिंदी पखवाड़ा 14 सितम्बर, 2006 से आरम्भ हुआ । इस दौरान निबंध प्रतियोगिता एवं हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 18-09-2006 को किया गया । तत्पश्चात् आशु-भाषण प्रतियोगिता एवं हिंदी प्रश्नोत्तरी (Quiz) प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 20-09-2006 को किया गया । इन सभी प्रतियोगिताओं में सेमी-कंडक्टर लेबोरेटरी के वैज्ञानिकों तथा कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर सोत्साह भाग लिया । इसके अतिरिक्त पूरे वित्तीय वर्ष में चलने वाली 'हिंदी में मूल रूप से कार्य करने की प्रतियोगिता' में भी सेमी-कंडक्टर लेबोरेटरी के अधिकांश कर्मचारियों ने भाग लिया ।

समापन समारोह में निदेशक श्री नागचंचच्या जी के सफल रहे 19 प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए गए ।

हिंदी परामर्शदाता, श्री जायसवाल जी ने राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में संगठन के शीर्षस्थ अधिकारियों से लेकर सभी स्तर के कर्मचारियों द्वारा प्रदान किए गए सक्रिय सहयोग की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए कहा कि सेमीकंडक्टर कॉम्प्लेक्स लिमिटेड का 1 सितम्बर, 2006 से अंतरिक्ष विभाग के अंतर्गत सेमीकंडक्टर लेबोरेटरी के रूप में पूर्णरूपेण परिवर्तित हो जाने के पश्चात् हिंदी के प्रयोग की संभावनाएं और भी बढ़ गई हैं । छोटा एवं वैज्ञानिक विभाग होने के बावजूद इस संगठन ने जिस लगन और निष्ठा से हिंदी के तमाम उपबंधों का अनुपालन किया है । वह वास्तव में सराहनीय और अनुकरणीय है ।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, पूर्वोत्तर क्षेत्र, शिलांग

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, पूर्वोत्तर क्षेत्र के शिलांग स्थित कार्यालय में 14 सितंबर 2006 से 28 सितंबर 2006 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन श्री के. एल. नंदा, निदेशक ने दीप प्रज्जवलित करके किया। श्री के. एल. नंदा, निदेशक ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में अधिक से अधिक सरकारी कार्य हिंदी में करने का अनुरोध किया। श्री राम देव चौरसिया, आशुलिपिक, हिंदी अनुभाग के धन्यवाद ज्ञापन के साथ उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ।

हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों, यथा: विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी में निबंध लेखन प्रतियोगिता, व्याख्यान प्रतियोगिता, टिप्पण/आलेखन प्रतियोगिता एवं बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने पूर्ण उत्साह के साथ भाग लेकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

दिनांक 28 सितंबर 2006 को हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। सभी पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मानित किया तथा सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर प्रोत्साहित किया।

सीमा सड़क महानिदेशलय, सीमा सड़क भवन रिंग रोड, दिल्ली कैंट, नई दिल्ली-110010

मुख्यालय सीमा सड़क महानिदेशालय में 1 सितंबर 2006 से 14 सितंबर 2006 तक हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग, हिंदी भाषण/कविता/गायन तथा सामान्य हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सामान्य हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन हिंदीतर भाषी कार्मिकों के लिए अलग से किया गया। इन प्रतियोगिताओं में महानिदेशालय के विभिन्न अनुभागों के 26 कार्मिकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने तथा वर्ष 2006-2007 के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से महानिदेशालय में दिनांक 28 अगस्त 2006 से 30 अगस्त 2006 तक तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिंदी कार्यशाला में कार्मिकों को हिंदी वर्तनी, भारत सरकार की राजभाषा नीति की जानकारी देने के साथ-साथ हिंदी में विभिन्न प्रकार के पत्र, अर्ध-सरकारी पत्र, नोटिंग/ड्राफ्टिंग, आवेदन-पत्र इत्यादि तैयार करने की जानकारी दी गई ।

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन क्षेत्रीय कार्यालय, 7, रेसकोर्स रोड, इन्दौर

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, मध्यप्रदेश इन्दौर में राजभाषा मास का समापन समारोह

कार्यक्रम दिनांक 6 अक्टूबर 2006 को जाल सभागृह में संपन्न हुआ । कार्यक्रम की अध्यक्षता, क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त, श्री राजशेखर हेगड़े ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सरोज कुमार मंचासीन थे ।

मुख्य अतिथि डॉ. सरोज कुमार ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हिंदी एक कार्यक्रम की तरह भी है, तो कहीं हमारे कर्त्तव्य का भी स्मरण कराती है। हिंदी का प्रयोग सीधे-सीधे हमारी मानसिकता से जुड़ा है और भाषा के प्रति मानसिकता हमारी राष्ट्रीयता की भावना से संबंध रखती है।

क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त, श्री राजशेखर हेगड़े ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हमारे लिए खुशी की बात है आज हमें डॉ. सरोज कुमार जी जैसे विद्‌वान का सानिध्य मिला। हिंदी मास मनाने का उद्‌देश्य हिंदी की अभिवृद्‌धि करना है। तमिलनाडु में अब हर दुकान वाला हिंदी बोल रहा है। उन्होंने आगे कहा, हिंदी आज एक आवश्यकता बनती जा रही है जिससे उसका विकास निश्चित है।

क्षेत्रीय आयुक्त का कार्यालय, कोयला खान भविष्य निधि क्षेत्र-II, राँची

राँची स्थित कोयला खान भविष्य निधि के तीनों क्षेत्रीय कार्यालयों में संयुक्त रूप से दिनांक 01 से 15 सितम्बर 2006 तक हिंदी पखवाड़ा के रूप में मनाया गया । इस दौरान कार्यालय के अधिकतर कार्य राजभाषा हिंदी में ही सम्पन्न किए गए । अधिकारियों एवं कर्मचारियों में उत्साह एवं प्रोत्साहन के लिए पखवाड़ा के दौरान टिप्पण आलेखन, निबंध, हिंदी टंकण, वाद-विवाद, कविता पाठ एवं त्वरित भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और दिनांक 21-09-2006 को समापन समारोह के दौरान विजेताओं के बीच पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र बांटे गये ।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री पी. के. चौधुरी, क्षेत्रीय आयुक्त ने कहा कि हिंदी जनभाषा, सरलभाषा एवं सबकी भाषा है । उन्होंने बताया कि अमेरिका जैसा विकसित देश भी हिंदी के महत्व को समझते हुए हिंदी सीखने के लिए एक विभाग की स्थापना की है । उन्होंने सभी से अपने कार्य राजभाषा में ही संपन्न करने की अपील की । श्री चौधुरी ने रविन्द्रनाथ टैगोर की पंक्तियों को उद्‌धृत करते हुए कहा कि मातृभाषा माता के दूध के समान होती है, हमें उसका सम्मान करना चाहिए । उन्होंने कहा कि हम लोग सिर्फ हिंदी पखवाड़ा ही न मनाएँ बल्कि हिंदी में कार्य करने की आदत डालें ।

महालेखाकार (लेखा व हक.) का कार्यालय, असम मैदामगाँव, बेलतला, गुवाहाटी-29

प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) असम तथा महालेखाकार (लेखा व हकदारी) असम, गुवाहाटी दोनों कार्यालयों के संयुक्त प्रयास से 04 सितंबर से 14 सितम्बर, 2006 तक विभिन्न प्रतियोगिताओं एव सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ 'हिंदी पखवाड़ा 2006' का आयोजन किया गया ।

संयुक्त हिंदी पखवाड़े का विधिवत उद्‌घाटन दिनांक 04 सितंबर, 2006 को प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) श्री स्वार्ड वासुम ने भारतीय परंपरानुसार दीप प्रज्ज्वलित कर किया । उद्‌घाटन समारोह के अवसर पर महालेखाकार (लेखा व हकदारी) श्री पिनुवेल बसुमतारी सहित दोनों कार्यालयों के सभी वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे । अपने संक्षिप्त एवं सारगर्भित उद्‌घाटन भाषण में प्रधान महालेखाकार महोदय ने कार्यालय में हिंदी के बढ़ते वातावरण के लिए खुशी जाहिर करते हुए कहा कि व्यावहारिक रूप में हिंदी फाइलों में आ सके, इसके लिए हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए ।

समारोह में उपस्थित सभी लोगों का स्वागत करते हुए अपने स्वागत भाषण में श्रीमती नयना अ. कुमार, व. उप महालेखाकार-प्रशासन (लेखा व हकदारी) ने कहा कि कार्यालय के 'ग' क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद, जिस तरह का हिंदी प्रेम यहां दिखाई देता है, उससे यह स्पष्ट है कि हिंदी अब हमारे लिए परायी भाषा नहीं रही । विभिन्न-भाषी भारत वर्ष में अलग-अलग प्रांतीय भाषाएं होने के बावजूद हिंदी सभी की अपनी है । साथ ही उन्होंने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लेने तथा समारोह को सफल बनाने की अपील भी की ।

महालेखाकार (लेखा व हकदारी) श्री पिनुवेल बसुमतारी ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी दिवस या पखवाड़े का आयोजन का उद्‌देश्य महज औपचारिकता निभाना नहीं होना चाहिए । हमारा उद्‌देश्य

केवल प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार प्राप्त करना नहीं बल्कि हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग में अपनी जिम्मेवारी निभाने का होना चाहिए । हम सभी का यह प्रयास होना चाहिए कि कार्यालय में हिंदी जल्द से जल्द अंग्रेजी का स्थान ले सके ।

उक्त पखवाड़े के दौरान कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं लोगों के मन में हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से हिंदी निबंध लेखन, अनुवाद, आशु-भाषण, वाद-विवाद, अंताक्षरी आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिनमें दोनों कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया । इस दौरान स्टाफ के बच्चों के लिए भी कविता आवृति तथा अंताक्षरी प्रतियोगिता आयोजित की गई थी । विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया गया ।

भारी पानी संयंत्र

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन में दिनांक 14 सितंबर 2006 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया । इस समारोह के दौरान एक लघु कवि गोष्ठी का भी आयोजन किया जिसमें तूतीकोरिन स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों से भी कुछ सदस्यों को कवि पाठ करने हेतु आमंत्रित किया गया । हिंदी सप्ताह के दौरान माह अगस्त में संयंत्र के कार्मिकों हेतु 13 विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

समारोह में मुख्य अतिथि श्री वी.वी.एस.रामा राव महाप्रबंधक ने अपने उद्बोधन में कहा कि दक्षिण भारत में भी हिंदी धीरे-धीरे बढ़ रही है क्योंकि नगरीकरण, औद्योगिकरण के युग में लोगों की एक शहर से दूसरे शहर में नौकरी, व्यापार पर्यटन एवं साधनों की सुलभता से आवाजाही बढ़ रही है । जिसमें उनके साथ-साथ भाषा का भी प्रसार एवं प्रचार हो रहा है । सरकारी कार्यालयों में भी कार्मिकों के स्थानांतरण राष्ट्रीय स्तर पर होते रहते हैं तो उनके साथ-साथ भाषा भी चलती है एवं उसका विकास हो रहा है हालांकि दक्षिण क्षेत्र के दक्षिण स्थित क्षेत्र खासतौर पर तूतीकोरिन में राजभाषा बोलचाल एवं प्रोफार्मा भरने एवं कुछ हद तक टिप्पण आलेखन तक सीमित है लेकिन मुझे आशा है धीरे-धीरे ही इसका प्रचार प्रसार होगा एवं हमें स्वयं इस बारे में रुचि जगानी होगी ।

भारतीय डाक विभाग कार्यालय प्रवर अधीक्षक डाकघर, अकोला विभाग अकोला-444001

भारतीय डाक विभाग अकोला विभाग अकोला द्वारा हिंदी पखवाड़ा दि. 14 सितम्बर से दि. 28 सितंबर 2006 तक मनाया गया । इस आयोजन के प्रथम चरण में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अकोला द्वारा हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में से दि. 19-9-2006 को हिंदी सुलेख अक्षर एवं हस्ताक्षर प्रतियोगिता का आयोजन प्रधान डाकघर अकोला में किया गया । न.रा.का स: के तत्वावधान में आयोजित इस प्रतियोगिता का निर्वहन एवं आयोजन सफलता पूर्वक दि. 19-9-06 को किया गया । इसमें भारतीय डाक विभाग अकोला एवं सदस्य कार्यालयों के लगभग 30 प्रतियोगिताओं ने हिस्सा लिया । प्रश्नपत्र आरेखन एवं मूल्यांकन तथा सभी प्रतिभागिओं की आसनव्यवस्था प्रधानडाकघर अकोला द्वारा की गयी ।

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी-248179

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में 14 सितम्बर 06 को हिंदी दिवस समारोह अत्यंत उत्साह के साथ आयोजित किया गया । इस उपलक्ष्य में, अकादमी स्टाफ के लिए कार्यालयी पद्धति की जानकारी, कार्यालय से संबंधित सामान्य जानकारी (समूह 'घ'), हिन्दी टिप्पण तथा मसौदा लेखन, हिंदी श्रुतलेख (अकादमी स्टाफ तथा समूह 'घ' कर्मचारीवर्ग-दोनों के लिए अलग-अलग), हिंदी निबंध लेखन, हिंदी काव्य रचना प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । इसके अतिरिक्त, अकादमी में संचालित 80वें आधारिक पाठ्यक्रम के अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों के लिए 14 सितंबर को मुख्य समारोह के दिन स्वरचित हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई ।

इस समारोह के मुख्य अतिथि अकादमी के माननीय निदेशक श्री रुद्र गंगाधरण थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रशासन प्रभारी श्रीमती आरती आहूजा, उपनिदेशक वरिष्ठ ने की । इस समारोह में, विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों के साथ ही, वार्षिक टिप्पण तथा मसौदा लेखन प्रोत्साहन योजना के प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया गया । इस तरह, इस समारोह में कुल 40 प्रतिभागियों को निदेशक महोदय ने प्रशस्ति पत्र तथा 14,400 रुपए के नकद पुरस्कार प्रदान किए ।

केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, मुख्यालय, फरीदाबाद

केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, मुख्यालय, भूजल भवन, एन.एच. 4, फरीदाबाद में सम्बोधित करते हुए बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सलीम रोमानी ने कहा कि हिंदी देश को जोड़ने वाली भाषा है। हिंदी में सरकारी कामकाज करना हम सबका दायित्व है । हमें हिंदी दिवस के अवसर पर संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे। विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं सदस्य (ईडीएमएम) श्री बी.एम. झा ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि हिंदी बहुत सरल भाषा है । सरकारी कार्यों में इसका प्रयोग करना बहुत आसान है । सदस्य (एसएएम) श्री ए. आर. बक्शी ने अपने उद्‌बोधन में हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डाला ।

भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

यह समारोह 4 अक्तूबर 2006 को मुख्यालय के सेमिनार हॉल में आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता मौसम विज्ञान के अपरमहानिदेशक श्री ए. के. भटनागर ने की। समारोह में सर्वप्रथम ज्येष्ठ हिंदी अधिकारी श्री ए. बी. लाल ने अध्यक्ष महोदय तथा सभी वरिष्ठ अधिकारियों एवं सभागार में उपस्थित सभी कार्मिकों का स्वागत किया। इसके उपरांत अध्यक्ष महोदय श्री ए.के. भटनागर ने दीप प्रज्वलित किया ।

तदुपरांत ज्येष्ठ हिंदी अधिकारी ने सूचित किया कि इस वर्ष 2005-2006 में विभाग में हिंदी में सबसे अधिक पत्राचार करने वाले कार्यालय मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक (संगठन) को राजभाषा चलशील्ड देने का निर्णय लिया गया है। अध्यक्ष महोदय द्‌वारा मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक (संगठन) को राजभाषा चलशील्ड प्रदान की गई तथा हिंदी पखवाड़ा 2006 के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण-पत्र तथा नकद पुरस्कार प्रदान किए गए ।

इसके उपरांत अध्यक्ष महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस के आयोजन का मुख्य उद्‌देश्य सरकारी कार्य में हिंदी को बढ़ावा देना है । यद्‌यपि हमारे विभाग में वैज्ञानिक और तकनीकी तरह का कार्य अधिक होता है लेकिन प्रतिदिन के कार्यालय के कार्य में हम सभी अधिकतर विचार विमर्श हिंदी में ही करते हैं । हमारे विभाग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को फाइलों पर हिंदी में लिखने का प्रयास करना चाहिए। अध्यक्ष महोदय ने विभाग के सभी कार्मिकों को कार्यालय का कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करने की सलाह दी तथा राजभाषा विभाग द्‌वारा निर्धारित किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए और अधिक प्रयास करने का अनुरोध किया एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य योगदान देने पर भी जोर दिया ।

पूर्व तट रेलवे, वालतेरू मंडल

पूर्व तट रेलवे वालतेरू मंडल पर राजभाषा समारोह-2006 का आयोजन दिनांक 27-9-2006 को राजभाषा स्वर्ण जयन्ती भवन विशाखापटनम में किया गया।

दिनांक: 12-9-2006 से 27-9-2006 तक राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया गया, इस अवसर पर विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं तथा हिंदी कार्यशाला, वार्तालाप प्रशिक्षण, नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया गया ।

श्री इन्द्र घोष मंडल रेल प्रबंधक ने कहा कि राष्ट्रभाषा व राजभाषा देश के आवश्यक तत्व हैं, जिससे राष्ट्र की पहचान होती है । हमारे संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के लिए अनेक उपबंध किये गए हैं। राजभाषा अधिनियम व राजभाषा नियम बनाए गए हैं। भाषा संस्कृति की संवाहिका होती है । इस प्रकार राजभाषा हिंदी में काम करना तथा इसकी समृद्धि करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है तथा संवैधानिक उत्तरदायित्व भी। श्री घोष ने कहा वालतरु मंडल माल परिवहन व यात्री यातायात के साथ-साथ राजभाषा प्रचार-प्रसार में भी भारतीय रेलवे के मानचित्र में अपना विशेष स्थान बनाए हुए है। उन्होंने मंडल राजभाषा संगठन तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इसके लिए बधाई दी ।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, निदेशक का कार्यालय, केरल एवं लक्षद्वीप भू-स्थानिक आँकडा केंद्र, सी.जी.ओ. कोंप्लेक्स पूंकुलम, वेल्लायणी-डाक, तिरूवनन्तपुरम-695 522.

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, केरल एवं लक्षद्वीप जी.डी.सी. का वर्ष 2006 का राजभाषा हिंदी दिवस समारोह

श्री एस. सुब्बा राव, निदेशक की अध्यक्षता में दिनांक 22-9-2006 को 11.30 बजे सुचारू रूप से मनाया गया ।

केरल हिंदी प्रचारसभा के पूर्व अध्यक्ष और अकादमी परिषद् के सदस्य श्री के.जी.बालकृष्ण पिल्ले इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे । उन्होंने अपने भाषण में भारतीय सर्वेक्षण विभाग में भाषाई सदभावना के वातावरण को सराहा और राष्ट्र की भाषा को दिल से अपनाकर एक सुन्दर विकसित भारत की परिकल्पना की ।

श्री सुब्बा राव, निदेशक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में टोपोनिमि में भारतीय सर्वेक्षण के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि राजभाषा की विकास यात्रा की यह शुभ शुरूआत है । हिंदी हम सब समझते और बोलते है बस हमें झिझक को दूर करना है, परिश्रम, वचनबद्धता और निरन्तर अभ्यास से इसका विकास करना हैं । उन्होंने सभी के सक्रिय प्रतिभागिता में बधाई दी ।

पश्चिमी रेलवे, राजकोट मंडल

14 सितंबर से ही 28 सितंबर 2006 तक मंडल में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी वाक्, निबंध, भाषा शुद्धि, पोस्टर, कहानी विस्तार, अनुवाद, गीत गायन, टंकण, शीघ्र निबंध, पारिभाषिक शब्दावली और टिप्पण आलेखन आदि 11 प्रतियोगिताएं कर्मचारियों के लिए तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता अधिकारियों के लिए एवं निबंध प्रतियोगिता प. रे. महिला समाज सेवा समिति के सदस्यों के लिए आयोजत की गई । इस तरह कुल 13 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया ।

मुख्यालय महानिदेशालय, असम राइफल्स

महानिदेशालय असम राइफल्स, शिलांग में 11 सितम्बर, 2006 से 22 सितंबर, 2006 तक "हिंदी पखवाड़ा" मनाया गया । पखवाड़े के दौरान महानिदेशालय तथा नगर राजभाषा कार्यान्वय समिति स्तर पर विभिन्न तरह की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें प्रतिभागियों ने काफी संख्या में बड़े उत्साह के साथ भाग लिया ।

हिंदी पखवाड़ा का समापन/पुरस्कार वितरण समारोह 22 सितंबर, 2006 को महानिदेशालय के ब्रह्मपुत्र हॉल में आयोजित किया गया । जिसका अध्यक्ष श्री यशवंत राज, संयुक्त सचिव (प्रशासन) गृह मंत्रालय, नई दिल्ली इस समारोह के मुख्य अतिथि थे ।

तत्पश्चात् मुख्य अतिथि श्री यशवंत राज, संयुक्त सचिव (प्रशासन) ने हिंदी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान किया । इसके बाद मुख्य अतिथि महोदय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि हिंदी पखवाड़ा के दौरान प्रतिभागियों ने काफी उत्साह से भाग लिया, जो बधाई के पात्र हैं । मुख्य अतिथि महोदय ने अपने संबोधन में इस बात पर बल देने हुए कहा कि हम सभी को अपनी राजभाषा हिंदी पर गर्व होना चाहिए और आगे उन्होंने कहा कि हिंदी को रोजी-रोटी से जोड़ना चाहिए, क्योंकि तब तक रोजी-रोटी से नहीं जुड़ेगी, तब तक इसका पूर्ण रूप में उत्थान नहीं हो सकेगा । आगे उन्होंने उम्मीद प्रकट किया कि हिंदी पखवाड़ा के आयोजन से हिंदी प्रयोग के लिए बेहतर माहौल बनेगा और सभी कार्मिक अपने काम में ज्यादा से ज्यादा हिंदी का प्रयोग करेंगे । अंत में उन्होंने अर्धसैनिक बलों में हिंदी के प्रयोग की सराहना की तथा टॉलिक स्तर पर आयोजित इस कार्यक्रम के लिए महानिदेशालय असम राइफल्स की भूरि-भूरि प्रशंसा की, साथ ही सभी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए उन्हें अगले वर्ष और उत्साह से भाग लेने की सलाह दी ।

ग्रुप केंद्र, के.रि.पु. बल, ग्रेटर नोएडा

ग्रुप केंद्र, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, ग्रेटर नोएडा में अगस्त/सितंबर 2006 के दौरान हिंदी की विभिन्न गति-विधियों संचालित की गई । 1अगस्त से 31 अगस्त तक हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता आयोजित की गई और प्रथम तीन सफल प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया । द्वितीय चरण में दिनांक 21-8-2006 से 25-8-2006 तक हिंदी कार्यशाला चलाई गई । इसमें यहां स्थित पुलिस उप- महानिरीक्षक कार्यालय तथा 176 बटालियन सहित ग्रुप केंद्र के 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया । हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन ग्रुप केंद्र ग्रेटर नोएडा के श्री हरी राम सिंह, अपर पुलिस उप-महानिरीक्षक द्वारा किया गया । अपने उद्बोधन में इन्होंने सरकारी कामकाज में हिंदी को सहज रूप में अपनाने का आग्रह किया । उन्होंने कहा कि हिंदी भाषी क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों को

अपना शत-प्रतिशत सरकारी कार्य हिंदी में करना चाहिए। तभी हम यह लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं । इसमें प्रत्येक का सहयोग और योगदान जरूरी है । इस कार्यशाला को रोचक एवं सार्थक बनाने के लिए कर्मचारियों से अलग-अलग प्रकार की जानकारी वाले चार्ट हिंदी में तैयार करवाए गए ।

सीमा सुरक्षा बल, मुख्यालय, नई दिल्ली

सीमा सुरक्षा बल मुख्यालय में इस वर्ष 1 से 15 सितंबर 06 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । इस पखवाड़े के दौरान हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी नोटिंग ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, स्वरचित लेख प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण प्रतियोगिता तथा हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । इसी क्रम में सीमा सुरक्षा बल के महानदिशक श्री आशीष कुमार मित्रा ने गत 14 सितम्बर 06 को हिंदी दिवस समारोह का उद्घाटन किया । इस अवसर पर बोलते हुए श्री मित्रा ने कहा कि अधिकारियों को हिंदी के प्रयोग में झिझक छोड़कर आगे आना चाहिए जिससे कि स्टाफ को भी हिंदी में काम करने की प्रेरणा मिले । उन्होंने रोजमर्रा के काम में सरल हिंदी का प्रयोग करने की अपील की ताकि अन्य भाषा-भाषी राज्यों के कार्मिकों को हिंदी भाषा को आसानी से लिखने व बोलचाल में अपनाने के लिए प्रोत्साहन मिले । उन्होंने विशेष रूप से इस तथ्य का उल्लेख किया कि भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने पिछले महीने ही हिंदी वेबसाइट का शुभारंभ किया है और संयुक्त राष्ट्र संघ से मांग की है कि वह हिंदी को अपनी भाषा सूची में शामिल करें । उन्होंने हिंदी में कामकाज करने में सहायक साहित्य तैयार करने के लिए राजभाषा अनुभाग "राजभाषा हिंदी के बारे में जानने योग्य बातें" नामक पुस्तिका तथा "अंग्रेजी हिंदी शब्दावली" के तृतीय संस्करण (2006) का विमोचन भी किया । इस प्रकार का सहायक साहित्य तैयार करने के लिए उन्होंने सहायक निदेशक (राजभाषा) की मुक्त कंठ से सराहना की ।

इससे पूर्व अपने स्वागत भाषण में महानिरीक्षक (प्रशासन) श्री नरेश गौड़ ने कहा कि हमें अनुवाद पर निर्भर न होकर बोलचाल की भाषा में हिंदी में मूल कार्य करना चाहिए । जहां अड़चन हो, वहां अंग्रेजी के शब्दों को हिंदी में लिखें, तभी हिंदी का प्रचार-प्रसार होगा और इसका प्रयोग बढ़ेगा ।

इस अवसर पर महानिदेशक महोदय की तरफ से हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए बल के कार्मिकों को संबोधित एक अपील भी जारी की गई ।

इस अवसर पर वर्ष 2005-06 के दौरान हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए फ्रंटियर मुख्यालय शिलाँग, सी एस डब्ल्यू टी इंदौर व सिगनल रेजीमेंट को राजभाषा शील्ड प्रदान की गई । हिंदी में मूल कार्य, हिंदी निबंध, हिंदी नोटिंग ड्रफ्टिंग, हिंदी टंकण, हिंदी प्रश्नोत्तरी, स्वरचित हिंदी लेख, हिंदी टिप्पण तथा हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिताओं में 51 अन्य पुरस्कार भी प्रदान किए गए ।

कार्पोरेशन बैंक, कार्पोरेट कार्यालय, पांडेश्वर, मंगलूर-575001

कार्पोरेशन बैंक एवं मंगलूर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयुक्त तत्वावधान में 05 अक्तूबर, 2006 को हिंदी दिवस मुख्य समारोह का आयोजन बैंक के सहस्त्राब्दि भवन के सभागृह में अपराह्न 3 बजे किया गया ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा नराकास के अध्यक्ष श्री बी. सांबमूर्ति जी ने मंगलूर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 2004-05 हेतु 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत राष्ट्र स्तरीय इंदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार प्राप्त करने पर सभी सदस्य संगठनों को बधाई दी ।

पुरस्कार वितरण के दौरान राजभाषा शील्ड योजना के तहत पुरस्कृत प्रधान कार्यालय की यूनिटों के महाप्रबंधकों ने मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष के कर कमलों से शील्ड एवं प्रमाण-पत्र प्राप्त किए तथा अपने कार्यकाल के दौरान अंचलों में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट योगदान करने वाले अंचल प्रमुखों ने भी मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष से प्रमाण-पत्र प्राप्त किए । बैंक तथा मंगलूर नराकास के तत्वावधान में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार भी वितरित किए गए ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री के.एल. गोपालकृष्ण, कार्यपालक निदेशक ने कहा कि हिंदी भाषा का महत्व बढ़ता जा रहा है । उन्होंने अपने अभिभाषण में कहा कि बैंक जैसी संस्थाओं में कार्यरत अधिकारियों के संदर्भ में उनके राष्ट्रीय स्तर पर स्थानांतरण की वजह से हिंदी भाषा में वार्तालाप करने की क्षमता उनमें होनी चाहिए ।

आलप्पुषा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति दूर-संचार महाप्रबंधक कार्यालय, आलप्पुषा

आलप्पुषा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में 14-9-2006 को टेलीफोन भवन, आलप्पुषा में संयुक्त हिंदी दिवस के रूप में पूरा दिन मनाया गया । अध्यक्ष नराकास एवं महाप्रबंधक श्री एम. हरिदासन ने दीप प्रज्वलित कर हिंदी दिवस समारोह का उद्घाटन किया । इस शुभ अवसर पर आलप्पुषा सेन्ट जोसफ कॉलिज की हिंदी अध्यापिका मुख्य अतिथि थी । श्री एन.के. सुकुमारन उप महाप्रबंधक बी एस एन एल ने सबका स्वागत किया । आशीर्वाद भाषण में श्री जी.आर. नायर, क्षेत्र प्रबंधक भारतीय खाद्य निगम ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि बी एस एन एल केवल अपने कार्यालय में नहीं बल्कि नराकास के अन्य कार्यालयों में भी राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में मदद कर रहा है । श्री रूबिनसण जोण, स्टेशन प्रबंधक दक्षिण रेलवे आलप्पुषा ने समारोह में भाग लिए सभी सज्जनों का धन्यवाद अदा किया । हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आलप्पुषा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों के बच्चों के लिए विविध प्रतियोगिताएँ चलाई गई और सभी विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए । इसमें न रा का स सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया ।

नराकास आइजोल (मिजोरम)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति आइजोल द्वारा दि. 11 से 21 सितंबर, 2006 तक महाप्रबंधक दूर-संचार के कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । पखवाड़े के प्रथम दिन दि. 11-9-06 को श्रीमती असीमा करमाकर के वंदना गीत से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ । समिति के अध्यक्ष महोदय श्री सी. ललरोउसाङा ने पखवाड़े का उद्घाटन किया । महाप्रबंधक दूर संचार श्री के.वी. सुब्बाराव मुख्य अतिथि थे । इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । जिसमें कर्मचारियों व अधिकारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया ।

दि. 28-9-06 को सूचना एवं जन सम्पर्क प्रेक्षागृह में समापन समारोह का आयोजन किया गया । राज्य के माननीय स्कूल शिक्षा मंत्री डॉ. ललथङलियाना मुख्य अतिथि थे । मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिता में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगिताओं को पुरस्कार प्रदान किया । प्रतियोगिताओं के निर्णायकों को अध्यक्ष महोदय ने उनकी बहुमूल्य सहयोग के लिए स्मृति चिह्न प्रदान किए ।

सिंगरौली सुपर थर्मल पावर स्टेशन, शक्तिनगर

सिंगरौली स्टेशन में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के प्रति उपयुक्त वातावरण बनाने एवं हिंदी प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने की दृष्टि से 1 से 14 सितंबर, 2006 तक आयोजित हिंदी पखवाड़े के दौरान कर्मचारियों, स्कूली बच्चों एवं महिलाओं के अलावा शक्तिनगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के लिए हिंदी निबंध, टिप्पण एवं आलेखन, लोकगीत, भाषा ज्ञान, प्रश्न मंच, समूह गान, श्रुतलेख एवं सुलेख आदि जैसी 16 प्रतियोगिताएं संपन्न कराई गई, जिसमें भारी संख्या प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता कर हिंदी के प्रयोग के प्रति जन चेतना का वातावरण सृजित किया । महाप्रबंधक श्री राजेन्द्र कुमार गौड़ ने हिंदी दिवस समारोह में आयोजित कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए राजभाषा हिंदी के प्रयोग को राष्ट्रीय अनुराग से जोड़ने पर बल देते हुए कहा कि स्वभाषा के प्रयोग से मौलिक चिंतन बढ़ता है और राष्ट्रीय स्वाभिमान की अनुभूति होती है । श्री गौड़ ने हिंदी दिवस की प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए हिंदी भाषा के महत्व पर काव्य रचना की प्रस्तुति कर कर्मचारियों को अधिकाधिक कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया । उन्होंने 1 से 14 सितंबर, 2006 तक मनाए गए हिंदी पखवाड़े की 19 प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए हिंदी को देश की गौरवशाली संस्कृति की संवाहिका बताया और इसे राष्ट्रीय अनुराग से जोड़ने पर बल दिया ।

उच्च शक्ति प्रेषित्र : आकाशवाणी : आलप्पुषु केंद्र

इस साल के हिंदी पखवाड़े समारोह सितंबर 2006 महीने की अंतिम भाग में, यानी 14-09-2005 से 28-09-2006 तक मनाया गया ।

इस अवसर पर, तारीख 20-09-2006 को अपराह्न 2.30 बजे से चार प्रतियोगिताएं, जैसे--निबंध-लेखन, स्मरण-शक्ति प्रतियोगिता, अनुवाद एवं देश-भक्ति गीत प्रतियोगिता, आम तौर पर सभी कर्मचारियों के लिए और हस्त-लेख प्रतियोगिता केवल घ-श्रेणी के कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी । सभी कर्मचारियों ने अत्यंत रुचि के साथ इसमें भाग लिया और पुरस्कार भी प्राप्त किया ।

प्रसार भारती, भारतीय प्रसारण निगम, आकाशवाणी : विशाखापट्टणम

आकाशवाणी केंद्र, विशाखापट्टणम में इस वर्ष दिनांक 08-09-2006 से दिनांक 14-09-2006 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया । इस सप्ताह के दौरान कुछ प्रतियोगिताओं एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

दिनांक 14-09-2006 को कार्यालय में हिंदी दिवस के साथ-साथ हिंदी सप्ताह का समापन समारोह बड़े उत्साह के साथ मनाया गया । केंद्र निदेशक, श्रीमती प्रयाग वेदवती जी ने हिंदी दिवस के पावन अवसर पर सबको शुभकामनाएं दी और सबको संबोधित किया । उन्होंने अपने संबोधन में हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विविध प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों की प्रशंसा की और पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और कहा कि कुछ प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों की संख्या थोड़ी कम है और आशा व्यक्त की कि अगली बार ज्यादा से ज्यादा कर्मचारी ऐसी प्रतियोगिताओं में भाग लेंगे। और उन्होंने कहा कि यह जोश और उत्साह सिर्फ हिंदी दिवस, सप्ताह, पखवाड़ा आदि तक ही सीमित न रखकर मन में यह ठान लेना चाहिए कि अपने दैनिक कामकाज में भी हिंदी का प्रयोग करते रहेंगे ।

तत्पश्चात् मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा इस केंद्र में हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित तीन हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए गए । और इस केंद्र में आयोजित दो हिंदी कार्यशालाओं के प्रतिभागियों को भी अधीक्षण अभियंता महोदय एवं केंद्र निदेशक महोदय के कर कमलों द्वारा प्रमाणपत्र प्रदान किए गए ।

आकाशवाणी : तृश्शूर-680631

आकाशवाणी, तृश्शूर में हिंदी पखवाड़ा समारोह 14 से 28 सितंबर तक मनाए गए । पखवाड़े के दौरान अधिकारियों और कर्मचारियों को अधिक से अधिक काम हिंदी में करने का अनुरोध किया गया । इसी सिलसिले में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं ।

दिनांक 28-9-2006, अपराहन 3 बजे को हिंदी समारोह का समापन कार्यक्रम संपन्न हुआ । समारोह में केंद्र अभियंता एवं कार्यालय के अधिकांश अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित थे । केंद्र अभियंता श्रीमती के. आर. लीलावती ने समारोह की अध्यक्षता की । उन्होंने अपने भाषण में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कार्यालय कामों में हिंदी के प्रयोग बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया । हिंदी में काम करने के लिए पुरस्कार योजना के अंतर्गत श्रीमती एम.ए. तंकम, अवर श्रेणी लिपिक को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए । इसके पश्चात् प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया ।

मुख्य अभियंता (पूर्वी क्षेत्र), आकाशवाणी और दूरदर्शन, कोलकाता

मुख्य अभियंता (पूर्वी क्षेत्र), आकाशवाणी और दूरदर्शन, कोलकाता के कार्यालय में दिनांक 01-09-2006 से 15-09-2006 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया । आकाशवाणी भवन के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 01-09-2006 को अपराहन 3.00 बजे मुख्य अभियंता (परियोजना) श्री राज गोपाल द्वारा हिंदी पखवाड़े का शुभ उद्घाटन किया गया । हिंदी अधिकारी श्री ब्रज बिहारी दाश ने अध्यक्ष महोदय, अधिकारियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं पखवाड़ा के बारे में विस्तृत विवरण प्रदान किया। तत्पश्चात् श्री ए. राजगोपाल, मुख्य-अभियंता (पू.क्षे.) ने कहा कि "कार्यालय में पखवाड़ा मनाया जा रहा है, यह अति प्रसन्नता की बात है । आशा है कि इसमें ज्यादा से ज्यादा कर्मचारी भाग लेंगे और इस कार्य को आगे बढ़ाने में सफल रहेंगे ।" तत्पश्चात् श्री रतन घोष दस्तिदार, निदेशक

अभियांत्रिकी ने कहा कि "हिंदी के प्रचार एवं प्रसार हेतु प्रत्येक कर्मचारी को सिर्फ़ पखवाड़ा में ही नहीं बल्कि दैनिक कार्यालयीन कार्यों में भी हिंदी के कार्यों में बढ़ावा देना जरूरी है ।" इसके बाद श्री सुजित कुमार विश्वास, उप निदेशक अभियांत्रिकी ने कहा कि "प्रत्येक कर्मचारी का कर्त्तव्य है कि वह हिंदी के कार्यों में उत्साह पूर्वक भाग लें तथा पखवाड़े में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लें एवं हिंदी के प्रति अपनी रुचि को जाग्रत बनाये रखें ।"

दूरदर्शन केंद्र : हैदराबाद

दूरदर्शन केंद्र, हैदराबाद की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में दिनांक 1-9-2006 से दिनांक 11-9-2006 तक पांच प्रतियोगिताएं रखी गई । प्रतियोगिताओं में सभी कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया । प्रत्येक प्रतियोगिता के विजेताओं को दिनांक 21-9-2006 को आयोजित हिंदी सप्ताह का समापन समारोह में पुरस्कार वितरित किए गए ।

इसके उपरान्त कार्यालय के केंद्र निदेशक, अपने भाषण में कहा कि हमें चाहिए कि हम हमारी राष्ट्र भाषा हिंदी का सम्मान करें और दैनादिन अपना कार्यालयीन कार्य में उसका प्रयोग करें । हमें वार्षिक कार्यक्रम में बताए लक्ष्यों को तो किसी तरह से पूर्ण करना पड़ता है । हिंदी को सभी लोग स्वेच्छा से अपनाएं ।

आकाशवाणी : कडपा

आकाशवाणी, कडपा में अठारवां हिंदी दिवस/पखवाड़ा 01 सितम्बर से 14 सितम्बर 2006 तक कडपा आकाशवाणी के प्रांगण में भव्य रीति के साथ मनाया गया ।

समारोह के अध्यक्ष, श्री डी. सेल्वराज, केंद्र निदेशक अपने अध्यक्षीय भाषण में यह बताया कि भारत में हिंदी के अलावा अनेक भाषाएं बोली जाती हैं । उत्तर भारत में हिंदी भाषा प्राचूर्य ज्यादा होने पर भी अनेक बोलियां बोली जाती हैं । केंद्र सरकार ने 14 सितम्बर 1949 को हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की । उसी दिन को हम हिंदी दिवस मनाते हैं । उन्होंने यह भी बताया कि हर व्यक्ति दक्षिण का हो या पूरब और पश्चिम का हो, बोलचाल की हिंदी का प्रयोग करें ताकि हिंदी बोलने में या समझने में कोई कठिनाई न हो सके ।

मुख्य अतिथि, श्री राघव रेड्डी, न्यायवादी परिषद् के अध्यक्ष ने अपने भाषण में यह बताया कि हिंदी भारत के हर नागरिक को, हर प्रांतवालों को एक साथ रहने की चेष्टा करती है । इससे भिन्नत्व में एकत्व संपन्न हो सकती है । केंद्र सरकार ने हिंदी राजभाषा के रूप में बढ़ावा देने के लिये अनेक योजनाएं खोली हैं । कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों के लिये अनेक नकद और एकमुश्त पुरस्कार की योजनाएं भी मौजूद हैं । हिंदी भाषा की वृद्धि के लिये अनेक कदम इस केंद्र में कर रहे हैं ।

आकाशवाणी : तिरूपति

14 सितंबर से 20 सितंबर, 2006 तक केंद्र में हिंदी सप्ताह मनाया गया । इस दौरान विभिन्न कार्यक्रम किए गए।

हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह 20 सितम्बर 2006 को आकाशवाणी के प्रांगण में श्री पी. शंकरय्या के प्रार्थना गीत से आरंभ हुआ । श्रीमती रंगनायकी ने सभा का स्वागत किया । बाद में समारोह की अध्यक्ष, श्रीमती बी. गीता लक्ष्मी, केंद्र अभियंता ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भारत में हिंदी के अलावा अनेक भाषाएं बोली जाती हैं । केंद्र सरकार ने 14 सितम्बर 1949 को हिंदी भाषा राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की । उसी दिन को हम हिंदी दिवस मनाते हैं। उन्होंने बोलचाल की हिंदी का प्रयोग करने की सलाह दी ताकि हिंदी बोलने में या समझने में कोई कठिनाई न हो सके ।

मुख्य अतिथि, श्री पी. करीमुल्ला खान, प्राध्यापक ने अपने भाषण में यह बताया कि हिंदी भारत के हर नागरिक को, हर प्रांतवालों को एक साथ रहने की चेष्टा करती है । इससे भिन्नत्व में एकत्व संपन्न हो सकती है । हिंदी एक अनुसंधान और संपर्क भाषा के रूप में बहुत उपयोगी होती है । उत्तर और दक्षिण, पूरब और पश्चिम को एक सूत्र में बांधने की शक्ति हिंदी राजभाषा में मौजूद है ।

दूरदर्शन केंद्र शिलचर

दूरदर्शन केंद्र शिलचर ने वर्ष 2005-2006 के अंतर्गत अपने कार्यालय में राजभाषा हिंदी के उपयोग के प्रति जो उत्साह दिखाया है, वह राजभाषा विभाग के केंद्रीय एवं प्रादेशिक अधिकारियों की दृष्टि में सराहनीय रहा है । और सबसे अधिक सराहनीय है केंद्र द्वारा सितम्बर-अक्तूबर 2006 के अंतर्गत राज़भाषा माह पालन । इस माह के दौरान दूरदर्शन के कार्यक्रम निर्माण विभाग, तकनीकी विभाग, प्रशासनिक विभाग और ट्रांसमीटर के अधिकारियों और

कर्मचारियों ने ज़िस उत्साह के साथ विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया, उसे देखकर लोग चकित रह गए कि पूरा दूरदर्शन-परिसर राज़भाषा-मय हो गया है । दिनांक 14 सितंबर से 14 अक्तूबर तक जिन अधिकारियों और कर्मचारियों ने प्रतियोगिताओं में हिस्सेदारी की उन्हें जाने-माने हिंदी सेवियों द्वारा भारी संख्या में पुरस्कार, प्रमाण-पत्र एवं शॉल देकर सम्मानित किया गया ।

आकाशवाणी : नागपुर

आकाशवाणी नागपुर में दिनांक 14-09-2006 से 28-09-2006 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन अधीक्षण अभियंता श्री मोहन सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ ।

इस बीच दि. 26-09-2006 को सुबह 11.00 बजे एक दिवसीय कार्यशाला का भी आयोजन किया गया था । ज़िसमें प्रमुख वक्ता श्री शरदचंद्र पेंढारकर ने हिंदी शुद्ध लेखन एवं उच्चारण के सही आयाम अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बताएं । इनके मार्गदर्शन का सभी कर्मचारियों ने लाभ लिया ।

हिंदी पखवाड़े का समापन दिनांक 28-09-2006 को प्रात: 11.30 बजे अधीक्षण अभियंता श्री मोहन सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ । जिसमें मुख्यं अतिथि के रूप में प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. हरभजनसिंह हंसपाल उपस्थित थे । इस अवसर पर उन्होंने अपने भाषण में कहा कि आप किसी भी प्रदेश में चले जाएं एक हिंदी ही ऐसी भाषा है जिसे सब जानते हैं और समझते हैं ।

दोनों प्रतियोगिताओं के पुरस्कार प्रमुख अतिथि के करकमलों द्वारा वितरित किए गए और मूल रूप से कार्यालयीन काम-काज अधिक से अधिक हिंदी में करने वाले कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार राशि अध्यक्ष श्री मोहन सिंह अधीक्षण अभियंता एवं श्री गुणवंत थोरात केंद्र निदेशक के हाथों प्रदान किये गये ।

आकाशवाणी : अम्बिकापुर

हिंदी पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन दिनांक 01-09-2006 को पूर्वान्ह 11.00 बजे किया गया और इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री टी. एस. सिंहदेव, पूर्व अध्यक्ष छत्तीसगढ़ वित्त आयोग ने अपने उद्बोधन में कहा कि भाषा राष्ट्र के मान सम्मान के साथ जुड़ी होती है । किसी भी देश की भाषा वहां की राष्ट्रीयता का प्रतीक होती है । हमारा देश भारत विश्व के कुछ चुने हुए देशों में से एक है जिसे विश्व में आने वाले दिनों में एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में देखा जा रहा है । कार्यालयाध्यक्ष एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के मनोनीत अध्यक्ष श्री आर.सी. अहिरवार ने कहा कि सभी अधिकारी/कर्मचारी अधिक से अधिक हिंदी में ही कार्य करने का प्रयास करें । कार्यक्रम अधिशासी (कार्यक्रम प्रमुख) श्री अमरेश्वर दुबे ने कहा कि कार्यालय द्वारा 99 प्रतिशत कार्य हिंदी में किया जा रहा है । हमारा लक्ष्य 100 प्रतिशत का है जो हम प्रयास जारी रखे हुए हैं । पखवाड़े के अंतर्गत हम कई प्रतियोगिताओं का आयोजन करते हैं और अंत में विजेता प्रतियोगियों को प्रशस्ति पत्र और नगद राशि से पुरस्कृत किया जाता है । कार्यक्रम अधिशासी श्री तपन बनर्जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यही एक मात्र भाषा है जो हम सबको एक सूत्र में बांधे रख सकती है । यही एक ऐसी भाषा है जिसे आगे बढ़ने से रोका नहीं जा सकता है । साथ ही उन्होंने कहा कि हमें गर्व होना चाहिए । चूंकि कुछ वर्षों के अंतराल में चार पांच भाषाएं ही शेष रह जाएंगी उनमें हमारी राष्ट्र भाषा भी एक है ।

आकाशवाणी : रत्नागिरी

केंद्र निदेशक आकाशवाणी रत्नागिरी के कार्यालय में दिनांक 14-9-2006 से 29-9-2006 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया था । दि. 14-9-2006 को अपरान्ह 3.30 बजे हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ सम्माननीय केंद्र अभियंता, श्री एस. एम. गोमटे के अध्यक्षता में किया गया । इस उपलक्ष्य में सम्माननीय केंद्र निदेशक श्री. मादुस्कर साहब ने कहा कि, हिंदी में कार्य करना गौरव की बात है और मैं यह मानता हूं कि जो सरकारी कार्य अंग्रेजी में किया जा रहा है उसे हिंदी में भी किया जा सकता है, आवश्यकता है केवल मनोबल बनाने की । एवं सम्माननीय केंद्र अभियंता, श्री गोगटे साहब ने अपने भाषण में कहा कि कार्यालय में ऐसे आयोजनों से अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में विस्तृत रूप से अपने विचार व्यक्त करने तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी प्रतिभा को विकसित करने का अवसर मिलता है ।

पखवाड़े के दौरान हिंदी कविता पाठ, निबंध, टिप्पण और मसौदा आलेखन, हिंदी टंकन, शुद्ध लेखन, अनुवाद

तथा हिंदी भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इसमें तृतीय श्रेणी तथा चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों ने भाग लिया।

दिनांक 29-9-2006 को अपरान्ह 3.30 बजे हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया । इस अवसर पर श्री भास्कर शेट्ये, सेवा निवृत्त न्यायाधीश, रत्नागिरी को मुख्य अतिथि ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि जैसी अपनी मातृभाषा है, वैसी अपने देश की भाषा हिंदी है एवं आम लोगों की भाषा हिंदी है । जिसे आज तक सरकारी कामकाज में स्थान मिलना चाहिए । हम सब का दायित्व है कि इसे अपने कार्यालयीन कार्य की भाषा बनाकर अपनी राजभाषा हिंदी का सम्मान करें ।

आकाशवाणी : अहमदाबाद

आकाशवाणी एवं विज्ञापन प्रसारण सेवा अहमदाबाद में दिनांक 14 सितंबर, 2006 को 'हिंदी दिवस' मनाया गया एवं उसी दिन से दिनांक 28 सितंबर, 2006 तक राजभाषा पखवाड़ा 'राजभाषा पर्व' के रूप में मनाया गया ।

दिनांक 14 सितंबर, 2006 को हिंदी दिवस एवं पखवाड़ा का उद्‌घाटन श्रीमती साधना भट्ट, केंद्र निदेशक ने किया । केंद्र निदेशक महोदया ने अपने वक्तव्य में बताया कि अब तो हिंदी को विश्वस्तरीय भाषा का दर्जा दिया जा रहा है । आप सभी पूरे वर्ष सरल हिंदी में अपना कार्य करें एवं सभी प्रतियोगिताओं में भाग ले कर इसे सफल बनाएं । श्रीमती मीनाक्षी सिंघवी, केंद्र अभियंता ने कहा कि हिंदी को औपचारिकता न दे कर वास्तविकता में अपनाया जाए ।

दिनांक 28 सितंबर को समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न हुआ ।

पुरस्कार प्रदान करते समय केंद्र निदेशक महोदय ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि कार्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़ा में अधिकांश सदस्यों ने उत्साह से हिस्सा लिया है, इसी तरह पूरे वर्ष आप लोग अपना कार्य राजभाषा में ही करके अपने उत्साह को बनाए रखें ।

आकाशवाणी : धारवाड़

आकाशवाणी धारवाड़ में दिनांक 14-9-2006 से 29-9-2006 तक हिंदी पखवाड़ा धूमधाम से मनाया गया । इस संदर्भ में पखवाड़ा भर हिंदी आशुभाषण, हिंदी वाचन, हिंदी निबंध, हिंदी पत्रलेखन, हिंदी अनुवाद तथा हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिताओं में कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

दिनांक 29-9-2006 को अपराह्न 4.00 बजे केंद्र के परिसर में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़ के हिंदी विभागाध्यक्ष डा. तेजस्वी कट्टीमनी जी ने भाषण में हिंदी भाषा सीखने की आवश्यकता तथा आज के जागतीकरण दौर में भाषाओं के महत्व, और ग्राहकों तथा जनता को सूचना देने में हिंदी भाषा की भूमिका पर विस्तृतरूप से प्रकाश डाला ।

कार्यक्रम के अध्यक्ष तथा केंद्र निदेशक डॉ चेतन एस. नायक ने अपने भाषण में कहा कि सिर्फ हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी के प्रति जागरूकता पर्याप्त नहीं है, बल्कि हमें देश भाषा, राजभाषा के प्रति सम्मान निरंतर देना है, इस संदर्भ में हिंदी दिवस के महत्व को बताते हुए उन्होंने हिंदी कविताओं को प्रस्तुत किया ।

आकाशवाणी : चण्डीगढ़

आकाशवाणी चण्डीगढ़ द्‌वारा दिनांक 14-9-06 से 28-9-06 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया ।

पखवाड़े का शुभारम्भ करते हुए डॉ. के. सी. दूबे, केंद्र निदेशक ने आकाशवाणी, चण्डीगढ़ के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को जारी अपील में सभी से हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए कहा तथा सरल और सुबोध हिंदी का प्रयोग करने पर बल दिया । इस अवसर पर महानिदेशक, आकाशवाणी की अपील भी जारी की गई । पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । हिंदी स्वयं शिक्षण प्रतियोगिता (सामान्य व चतुर्थ श्रेणी), निबंध लेखन प्रतियोगिता तथा वर्ष भर में कार्य करने की प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत पुरस्कार प्राप्त सभी विजेताओं को दिनांक 28-9-06 को आयोजित मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया ।

आकाशवाणी : नागौर

दिनांक 1-9-06 से 14-9-06 तक हिंदी पखवाड़े का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया । इस पखवाड़े में केंद्र पर हिंदी भाषा के वर्द्धन हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजना किया गया, जिसमें समस्त कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

हिंदी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह हिंदी दिवस दिनांक 14-9-06 को डा. के. आर. गोदारा, वरिष्ठ पत्रकार, राजस्थान पत्रिका के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ । इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. गोदारा ने कहा कि हिंदी राष्ट्रभाषा है और इसे अभी तक वो स्थान नहीं मिला है जो इसे मिलना चाहिए । अत: हमें इसको और समृद्ध बनाने हेतु मिल जुलकर प्रयास करना चाहिए । मुख्य अतिथि द्वारा विजित विभिन्न प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र वितरित किए गए ।

दूरदर्शन अनुरक्षण केंद्र
बी-42, सादूलगंज–बीकानेर

हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 14 सितंबर, 2006 से 28 सितंबर, 2006 के मध्य किया गया ।

इस आयोजन में कार्यालय कार्य में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग कैसे संभव हो तथा हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं व कार्यक्रमों का आयोजन किया गया ।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री प्रताप सिंह ने अपनी बात का शुभारम्भ करते हुए कहा कि वर्तमान में तक़नीकी कार्य भी बहुतायत से होने लगा है । वो दिन अब दूर नहीं है जब उच्च तकनीकी शिक्षा भी हिंदी में उपलब्ध होगी । हिंदी संगोष्ठी, पुरस्कार वितरण एवं समापन के इस सुअवसर पर दूरदर्शन अनुरक्षण केंद्र के केंद्राध्यक्ष श्री उमेश चन्द्र श्रीवास्तव ने कहा कि हम इंजीनियर अपने दैनिक कामकाज में सरल व सामान्य हिंदी शब्दों का प्रयोग कर राजभाषा और राष्ट्रभाषा हिंदी के गौरव को बढ़ाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं ।

आकाशवाणी : जबलपुर

आकाशवाणी, जबलपुर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा 14 सितंबर, 2006 से 28 सितंबर, 2006 तक हिंदी दिवस/पखवाड़ा बड़े हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया, हिंदी पखवाड़ा का उद्‌घाटन समारोह दिनांक 14-09-2006, हिंदी दिवस मुख्य समारोह के रूप में बनाया गया ।

आयोजन के अध्यक्ष पूर्व कुलपति रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, श्री जे. पी. शुक्ला ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी के प्रति हमारे कर्तव्य हैं, इसे ईमानदारीपूर्वक अपनाना चाहिए । आज के भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी स्वत: ही आगे बढ़ेगी । भाषा प्रवाहपूर्ण है, रवानगी है, तभी तो यह जीवंत भाषा है ।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई :–

दिनांक 28 सितंबर, 2006, अपराह्न 4.00 बजे समापन समारोह आयोजित किया गया, इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार, पत्रकार तथा कवि डॉ. राजकुमार सुमित्र, व मुख्य अतिथि लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र देशबंधु के संपादक श्री दीपक सुरजन थे । समारोह का उद्‌घाटन दीप प्रज्जवलन और मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण के साथ किया गया । इस अवसर पर केंद्र निदेशक श्री विमलकांत येण्डे ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यद्‌यपि कार्यालय में हिंदी में कार्य अधिकाधिक हो रहा है किंतु हमें शतप्रतिशत लक्ष्य को प्राप्त करने का गौरव हासिल करना हैं, इसके लिए सभी को सम्मिलित प्रयास करने होंगे । प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को बधाईयां दी गई, तथा वर्ष भर हिंदी में ही कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया ।

मुख्य अतिथि श्री दीपक सुरजन ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हमें हिंदी को अंतर्मन से स्वीकार करना होगा, तथा जैसा परिवार में बड़े-बुजुर्ग सदस्यों को सम्मान दिया जाता है उसी प्रकार का सम्मान-भाव राजभाषा हिंदी को देना होगा ।

समारोह के अध्यक्ष डॉ. राजकुमार सुमित्र ने भी अपने उद्‌बोधन में कहा कि हिंदी सद्‌भाव की भाषा है, यह दबाव और प्रभाव की भाषा नहीं है । हमें दूसरे प्रांतों की भाषा भी सीखनी चाहिए तथा उनके शब्दों को ग्रहण करके अपनाना चाहिए ।

प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए गए ।

आकाशवाणी : अकोला

सितंबर, 2006 में दिनांक 14-9-06 से दिनांक 28-9-06 के दौरान हिंदी में कामकाज करने तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से इस कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया ।

हिंदी दिवस एवं पखवाड़ा उद्घाटन कार्यक्रम अकोला शहर के ख्यातनाम हिंदी हास्य कवि तथा राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत अतिथि प्रो. घनश्यामजी अग्रवाल के करकमलों द्वारा किया गया । कार्यक्रम के प्रारंभ में आकाशवाणी के महानिदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री ब्रजेश्वर सिंह (आईएएस) के हिंदी दिवस उपलक्ष्यों में प्राप्त संदेश का वाचन किया गया । प्रो. अग्रवाल ने भाषण में अपने विचार में मानव जाति के संघटन में हिंदी भाषा के योगदान पर अपने विचार प्रकट किया तथा इस अवसर पर राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता में राष्ट्रपति पुरस्कृत अपनी हिंदी व्यंग रचनाएं दोहराई ।

आकाशवाणी, अकोला के केंद्र अभियंता एवं कार्यालय प्रमुख श्री रमेश घरडे ने सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों से महानिदेशक के संदेश में निहित बातों का अनुपालन कर व्यक्तिगत रूप से हिंदी के प्रसार-प्रचार के लिए समर्पित होकर कार्य करने का आह्वान किया ।

हिंदी पखवाड़ा सभारोप समारोह में डॉ. रामप्रकाश वर्मा, प्राचार्य, स्वावलंबी हाई स्कूल, अकोला एवं हिंदी साहित्यिक इनके करकमलों द्वारा आकाशवाणी केंद्र में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद राशी तथा प्रमाणपत्र से पुरस्कृत किया गया । डॉ. वर्मा ने आकाशवाणी, अकोला में किए जा रहे हिंदी कार्यों की सराहना की । उन्होंने विदेशों में हिंदी के प्रसार-प्रचार के बारे में विस्तार से बताया तथा सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्यकारों का भी इस अवसर पर स्मरण किया और उनका आकाशवाणी के प्रति अमूल्य योगदान को भी उजागर किया ।

जयपुर : विमानपत्तन

जयपुर विमानपत्तन पर दिनांक 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2006 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया । इस पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें टिप्पण-आलेखन/श्रुतलेख/टाइपिंग/प्रश्नोत्तरी/ निबंध/ कविता पाठ/आशु भाषण प्रतियोगिताएं रखी गई । इन प्रतियोगिताओं में 30 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया ।

दिनांक 14 सितंबर, 2006 को हिंदी दिवस के अवसर पर निदेशक विमानपत्तन श्री अरुण तलवाड एवं महाप्रबंधक प्रोजेक्ट श्री अनुज अग्रवाल द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर राजभाषा पखवाड़े का शुभारंभ किया गया । इस अवसर पर निदेशक विमानपत्तन ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि भारत जैसे विशाल देश में जहां अनेकता में एकता है भाषाओं के विविध आयाम है लेकिन सभी भाषाओं को हिंदी ही एकता के सूत्र में पिरोती है श्री तलवाड ने बताया कि जिस प्रकार हमने बिगत पांच-छः वर्षों में हिंदी में लगातार प्रगति की है आगे भी पूरी उम्मीद है कि यह 99% का आंकड़ा शत-प्रतिशत हो जायेगा ।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण : गोवा

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, गोवा द्वारा 14 से 28 सितंबर, 2006 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं । जिनमें ज्यादातर अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

14 सितंबर, 2006 को प्रातः 10.00 बजे हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया । उद्घाटन समारोह में प्रो. नारायण म्हाले, विभागाध्यक्ष (हिंदी), एम.ई.एस., कॉलेज, बिरला, गोवा मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी एक सरल भाषा है एवं यह कई भारतीय भाषाओं से मिलती जुलती है । इसलिए हिंदी अपनाने में हमें गर्व होना चाहिए, शर्म नहीं । श्री अनूप कुमार भावाल, कार्यवाहक विमानपत्तन निदेशक, गोवा ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी हमारे देश की भाषा है इसलिए इसका अधिकाधिक प्रयोग करके राष्ट्रीय एकता और अखंडता को मजबूत करना चाहिए । उन्होंने यह भी कहा कि जो अपनी भाषा को सम्मान देते हैं, उन्हें देश-विदेश में सभी लोग सम्मान करते हैं । उन्होंने सभी कर्मियों से अपील की कि वे पखवाड़े के दौरान विभागीय कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें और इसे पखवाड़े के बाद भी कायम रखें ।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण : मंगलूर हवाई अड्डा

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, मंगलूर हवाई अड्डा, मंगलूर में दिनांक 01-09-2006 से 14-09-2006 तक, हिंदी पखवाड़ा समारोह, विमानपत्तन निदेशक के नेतृत्व और मार्गदर्शन में मनाया गया ।

"हिंदी पखवाड़ा 2006--उद्घाटन समारोह" का आयोजन, दिनांक 01-09-06, को मंगलूर हवाई अड्डे के

सम्मेलन कक्ष में किया गया । अपने उद्घाटन भाषण में विमानपत्तन निदेशक महोदय ने हिंदी में कार्य करने के लिए अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया एवं क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशक महोदय, दक्षिणी क्षेत्र, चेन्नई द्वारा भेजी गई हिंदी दिवस संदेश सभी को पढ़कर सुनाया । तदुपरांत, हिंदी अनुवादक द्वारा हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जानेवाले सभी प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी गई ।

हिंदी पखवाड़ा 2006 के दौरान मंगलूर हवाई अड्डे के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

भारतीय जीवन बीमा निगम, उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली

भारतीय जीवन बीमा निगम के उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा जीवन भारती परिसर में हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया । 14-28 सितंबर तक हिंदी में किए जाने वाले कार्यों की अपील भी इस अवसर पर की गई तथा दिल्ली मण्डल-1 के साथ संयुक्त रूप से दो प्रतियोगिताएं आयोजित करने की जानकारी दी गई। क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय श्री अशोक शाह जी ने अपने संबोधन में राजभाषा प्रकोष्ठ को गृह मंत्रालय द्वारा शील्ड प्राप्त करने, आज का विचार संग्रह के प्रकाशन के लिए बधाई देते हुए सभी से हिंदी साफ्टवेयर का भरपूर प्रयोग करने की अपील की ताकि कार्यालय में हिंदी के काम-काज में बढ़ोतरी हो सके ।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नागपुर

14 सितंबर, 2006 को कर्मचारी राज्य बीमा निगम के उप क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार प्रकट करते हुए दैनिक भास्कर के समन्वय संपादक श्री गंगाधरराव ढोबले ने निगम कार्मिकों से अपील की कि अंग्रेजी की इस मानसिक दासता से बाहर निकलने का सभी को प्रयास करना चाहिए । उन्होंने कहा कि वे पूरे भारत की सघन यात्रा कर चुके हैं, दूर-दराज के क्षेत्रों में घूम चुके हैं आज देश में पूरब से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक कहीं भी हिंदी का विरोध नहीं है । फ़ादर कामिल बुल्के, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, डॉ. राजगोपालाचार्य, गुरूदेव रविंद्रनाथ टैगोर, आदि अहिंदी भाषी महापुरूषों का उदाहरण देते हुए श्री ढोबले ने कहा कि हिंदी के प्रयोग, प्रचार व प्रसार में अहिंदी भाषी लोगों की भूमिका कहीं अधिक महत्वपूर्ण रही है । श्री ढोबले ने इस बात पर बल दिया कि सरकारी कामकाज, सहज, सरल, तथा आम बोल चाल की भाषा में निपटाया जाना चाहिए ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में निगम के प्रभारी संयुक्त निदेशक श्री ए. एस. मीरान ने कहा कि दक्षिण भारतीय होते हुए भी वे इस बात से पूरी तरह सहमत हैं कि हिंदी ही इस विशाल देश की संपर्क भाषा हो सकती है । उनका कहना था अन्य सरकारी नीतियां और कार्यक्रमों की तरह सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन भी सरकारी कार्मिकों की ड्यूटी का एक हिस्सा है और हम सभी को अपने इस नैतिक व संवैधानिक दायित्व को पूरा करने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखनी चाहिए ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन, लोअर परेल मुंबई-400013

मंबई, क्षेत्रीय कार्यालय मंबई में हिंदी पखवाड़े के समापन्न पर हिंदी समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि राजभाषा विभाग के अनुसंधान अधिकारी श्री कुमार पाल शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भाषा का विकास के साथ गहरा संबंध है उन्होंने कहा कि जो चल दिया वो पहुँच ही गया परंतु साथ-साथ समय सीमा भी देखनी चाहिए कि कितना समय और लगेगा । अपने विचारों में उन्होंने जोड़ा कि स्वयं प्रेरित हों और हिंदी में काम करें । स्वयं प्रेरणा से विकास खुद-ब-खुद होता चला जाएगा । उन्होंने सबसे अपेक्षा की कि ऊहापोह की स्थिति से बाहर आएँ, सोचें और संघ ने हिंदी को जो राजभाषा का दर्जा दिया है उसमें काम करें और इसमें स्वयं को गौरवान्वित महसूस करें ।

क. रा. बी. निगम के अपर आयुक्त श्री एन. परसुरामन ने अपने विचारों में सभी से हिंदी में काम करने की अपील तो की ही साथ-साथ स्पष्ट रूप से कहा कि राजभाषा में कार्य करना न केवल जिम्मेदारी है बल्कि पवित्र कर्तव्य भी है । इस पवित्र कर्तव्य में उन्होंने सबको सहयोग देने के लिए कहा ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, आश्रम मार्ग, अहमदाबाद-380014

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, अहमदाबाद में गुरुवार दिनांक 14-9-2006 को अपराह्न में हिंदी दिवस समारोह बहुत ही हर्षोल्लास से मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता निगम के क्षेत्रीय निदेशक श्री ए. चोक्कलिंगम ने की। समारोह के मुख्य अतिथि हिंदी दैनिक समाचार पत्र 'राजस्थान पत्रिका' के संपादकीय प्रभारी श्री राजेंद्र सिंह नरुका थे।

मुख्य अतिथि श्री नरुका जी ने अक्षर यात्रा के नौवें अंक का विमोचन किया, साथ ही महान विभूतियों की उक्तियों एवं राजभाषा संबंधी विचारों की पट्टिकाओं का भी विमोचन किया। मुख्य अतिथि ने वर्ष 2005-06 के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने वाली रोकड़ शाखा के शाखाधिकारी श्रीमती सविता आर. चंद्र तथा अधीक्षक को राजभाषा अत: शाखा चल शील्ड अर्पित की।

श्री नरुका जी ने कहा कि एक वर्ष में आने वाला हिंदी दिवस किसी त्यौहार से कम नहीं है। उन्होंने कहा कि कोई भी भाषा बुरी नहीं होती किंतु मातृभाषा एवं अपने देश की भाषा सबसे श्रेष्ठ होती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति भावना जागृत करने की आवश्यकता है तथा भावनाओं का जितना रूपांतरण हिंदी भाषा में संभव है उतना शायद दूसरी अन्य भाषाओं में संभव नहीं है। प्रेम एवं भाईचारे को बढ़ावा देने में हिंदी का योगदान सर्वोपरि है। हिंदी जन-जन की भाषा है। विज्ञापन एवं प्रचार माध्यमों ने भी आज हिंदी को अपनाया है।

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चण्डीगढ़

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चण्डीगढ़ में 01 सितंबर, 2006 से 15 सितंबर, 2006 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया।

दिनांक 14-09-2006 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता क्षेत्रीय निदेशक श्री जी.सी. जेना ने की। चण्डीगढ़ से प्रकाशित दैनिक ट्रिब्यून के सहायक संपादक श्री अशोक मलिक समारोह में मुख्य अतिथि ने कहा कि हमारी संस्कृति की सही अभिव्यक्ति हमारी अपनी भाषा में ही संभव है। उन्होंने कहा कि हिंदी पूरे भारतीय समाज को साथ लेकर चल रही है। श्री मलिक ने बताया कि अब विश्व में चीनी भाषा से भी ज्यादा हिंदी भाषा का प्रयोग होने लगा है। श्री मलिक ने सलाह दी कि कार्यालयीन कार्य करते समय हम हिंदी के प्रचलित शब्दों का ज्यादा प्रयोग करें। उन्होंने कहा कि तकनीकी शब्दों का अनावश्यक अनुवाद करने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय भावना और जन सेवा से प्रेरित होकर जब देश के लोग अपनी भाषा को अपनाते हैं तो फिर इसकी प्रगति को कोई रोक नहीं पाता है।

श्री जेना ने कहा कि हिंदी पूरे भारत वर्ष की संपर्क भाषा है और संघ सरकार की राजभाषा भी। अत: हम सब का दायित्व बनता है कि हिंदी को श्रद्धा और सम्मान के साथ अपनाएं। श्री जेना ने कहा कि विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षणों और प्रतियोगिताओं के आयोजनों द्वारा कर्मचारियों को हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला तथा भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, पुणे

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला तथा भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, पुणे के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 14 सितंबर से 21 सितंबर, 2006 की अवधि में **हिंदी सप्ताह समारोह** का आयोजन किया गया। इस अवधि में प्रयोगशाला के स्टाफ हेतु चार प्रतियोगिताएं तथा भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के छात्रों के लिए दो प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। समारोह के प्रथम दिन 14 सितंबर, 2006 को **हिंदी दिवस** के अवसर पर प्रयोगशाला की वार्षिक राजभाषा पत्रिका **एनसीएल आलोक** का लोकार्पण संपन्न हुआ। इस पत्रिका का विमोचन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित पुणे विमानपत्तन प्राधिकरण के निदेशक कैप्टन दीपक शास्त्री एवं प्रयोगशाला के कार्यवाहक निदेशक डॉ. भास्कर कुलकर्णी के द्वारा संयुक्त रूप से संपन्न हुआ।

हिंदी सप्ताह समापन समारोह का आयोजन दिनांक 21 सितंबर, 2006 को अपराह्न 3.00 बजे प्रयोगशाला के व्याख्यान-कक्ष में किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. तुकाराम पाटील, विशेष अतिथि डॉ. के. एन. गणेश एवं प्रयोगशाला के कार्यवाहक निदेशक डॉ. भास्कर कुलकर्णी ने संयुक्त रूप से सभी विजेता स्टाफ सदस्यों एवं छात्र-छात्राओं को नकद

पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए । पुरस्कार वितरण के बाद मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए डॉ. पाटील ने राजभाषा और राष्ट्रभाषा हिंदी की व्यापकता पर प्रकाश डाला । उन्होंने कहा कि आज हिंदी केवल भारत में ही नहीं अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी अपरिहार्यता का अहसास करा चुकी है । उन्होंने आगे कहा कि हिंदी एक सशक्त और समृद्ध संपर्क भाषा के रूप में पूरे हिंदुस्तान को एकता के सूत्र में बांधे हुए है । यही एक भाषा है जिससे सभी देशवासी परस्पर संपर्क कर सकते हैं । डॉ. तुकाराम पाटील ने कहा कि वर्तमान में 135 विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन का कार्य चल रहा है । इस प्रकार हिंदी विदेशों में भारत की पहचान बना चुकी है । भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के निदेशक, डॉ. के.एन. गणेश ने अपने संबोधन में कहा कि हमारे संस्थान के लिए यह एक अच्छा अवसर उपलब्ध हुआ है जब हमारे छात्रों को हिंदी में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर मिला । हम चाहते हैं कि इस देश में विज्ञान और हिंदी साथ-साथ चले और हमें आशा है कि हमारा यह संस्थान इस दिशा में अग्रणी रहेगा ।

समापन समारोह के अंत में कार्यवाहक निदेशक, डॉ. भास्कर कुलकर्णी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं के प्रति अपना गहन समर्पण भाव प्रदर्शित करते हुए कहा कि हमें आज इस अवसर पर हिंदी को अधिक से अधिक अपने प्रयोग में लाने के लिए एक कार्य योजना बनानी चाहिए । उन्होंने कहा कि हिंदी एक विशिष्ट वैज्ञानिक भाषा है । इसके व्याकरण और इसके शब्दों की व्युत्पत्ति तथा अर्थ में एक सुंदर व्यवस्था झलकती है । उनका विचार था कि हमें हिंदी के विकास के लिए हर संभव प्रयत्न करना चाहिए ।

केंद्रीय रेशम बोर्ड भंडारा (महाराष्ट्र)

केंद्रीय रेशम बोर्ड (वस्त्र मंत्रालय : भारत सरकार) की संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति भंडारा के तत्वावधान में केंद्रीय रेशम बोर्ड के भंडारा स्थित सभी कार्यालयों में दि. 14-9-2006 से 28-9-2006 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़ा समापन का मुख्य कार्यक्रम 28-9-2006 को क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केंद्र, भंडारा में आयोजित किया गया । इस दिन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं-जैसे हिंदी शब्दावली, पत्र/परिपत्र लेखन, निबंध एवं गायन/गीत/कविता का आयोजन किया गया ।

डॉ. एस. के. माथुर, उपनिदेशक क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केंद्र एवं सदस्य सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भंडारा ने नराकास भंडारा की ओर से सेंट्रल एक्साईज विभाग, भंडारा को वर्ष 2005-06 के लिए तृतीय पुरस्कार के रूप में एक स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्तिपत्र प्रदान किया जिसे श्री एस. बी. शिंडे, सहायक आयुक्त ने ग्रहण किया । इसी प्रकार नराकास भंडारा की ओर से आयकर विभाग को भी उत्तम राजभाषा कार्यान्वयक के लिए प्रशंसा प्रशस्तिपत्र प्रदान किया गया जिसे श्री डी. पी. श्रीवास्तव, आयकर अधिकारी ने ग्रहण किया ।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून

साहित्यकार एवं प्रमुख विद्वान डॉ. पूरन चंद टंडन ने भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून में आयोजित हिंदी दिवस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में संस्थान को संबोधित करते हुए कहा कि अंग्रेजी के विरोध से हिंदी का विकास नहीं होगा, बल्कि अंग्रेजी के जानकारों के माध्यम से विश्व का ज्ञान हिंदी व अन्य भाषाओं में पहुंचना चाहिए । विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों एवं भाषा वैज्ञानिकों के मध्य एक सेतु है । संविधान में राजभाषा की अवधारणा इसी द्विभाषिकता के आधार पर की गई है । भाषा को साहित्य से ऊपर उठकर प्रयोजनमूलक बनाना होगा । हिंदी को यदि हम डॉलर की भाषा नहीं बनाएंगे तो उसका विकास नहीं होगा । शब्दावली में उदारता का पक्ष लेते हुए डॉ. टंडन का मानना था कि अंग्रेजी की ही तरह हिंदी को भी उदार और उपादेय बनाना होगा, सभी भाषाओं से शब्द लेने होंगे । भाषा व्यक्तित्व की और देश की अस्मिता की पहचान है । यदि भाषा को समाप्त कर दें तो देश व समाज स्वतः ही समाप्त हो जाएंगे । एक सर्वेक्षण के आधार पर आज के भूमंडलीकरण के युग में विश्व की कई भाषाएं समाप्त हो रही हैं और अंत में बचने वाली तीन भाषाओं में संयोग से हिंदी एक होगी ।

केंद्रीय विद्युत रसायन अनुसंधान संस्थान, कारैकुडी

दिनांक 14-09-2006 से 27-9-2006 तक के समय को बड़े उमंग, हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ हिंदी पखवाड़ा के रूप में मनाया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान

विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पखवाड़े के उद्घाटन समारोह अर्थात् दिनांक 14-9-2006 को प्रोफेसर ए.के. शुक्ल, निदेशक ने पखवाड़े का औपचारिक रूप में उद्घाटन करते हुए अपने प्रेरणात्मक अध्यक्षीय भाषण के माध्यम से लोगों को हिंदी में कामकाज करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने सभी को विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़चढ़ कर भाग लेने का भी आग्रह किया।

तिरुच्चिरापल्लि स्थित सेंट जोसफ कॉलेज के हिंदी विभागाध्यक्ष एवं रीडर डॉ. के.एस. प्रणतार्तीहरन समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने हिंदी दिवस के उद्गार भाषण में कहा कि "हिंदी के प्रयोग से देश की भौगोलिक तथा सांस्कृतिक दूरी घटी है तथा पूरे देशवासी राष्ट्रीय एकता की इस कड़ी से जुड़े हैं। यही कारण है कि पूर्व से पश्चिम तक और कश्मीर से कन्याकुमारी तक हम जहां भी जाते हैं हमें राष्ट्रभाषा हिंदी का अलख जगता हुआ मिलता है।"

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधानशाला, खड़कवासला, पुणे

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधानशाला, पुणे में 14-9-2006 को हिंदी दिवस के पूर्व 1 सितंबर, 2006 से **हिंदी पखवाड़ा** मनाया गया। इस अवधि में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं। 14 सितंबर, 2006 को **"हिंदी दिवस"** का मुख्य समारोह मनाया गया। इस अवसर पर पर्यावरण विशेषज्ञ श्री किरण वसंत पुरंदरे मुख्य अतिथि के नाते उपस्थित थे।

अनुसंधानशाला की निदेशक महोदया श्रीमती वैजयंती बेन्द्रे ने मुख्य अतिथि पर्यावरण विशेषज्ञ श्री किरण वसंत पुरंदरे जी का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। उन्होंने अपने भाषण में अनुसंधानशाला के अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने की अपील की और आगे कहा कि सभी भारतीय भाषाओं में हिंदी भाषा लोकप्रिय हो गई है इसीलिए उसे राजभाषा के रूप में हमें आगे ले जाना है।

तत्पश्चात् मुख्य अतिथि श्री पुरंदरे जी ने कहा कि हिंदी भाषा बहुत सरल और सीखने में आसान है हर राष्ट्र की अपनी-अपनी राजभाषा होती है और हमारी राजभाषा हिंदी है। जब समूचे देश में लोग राजभाषा के रूप में एक भाषा अपनाते हैं तो आपसी सद्भाव और राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत होती है।

राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान, पुणे

इस संस्थान में दिनांक 11 सितंबर से 15 सितंबर, 2006 तक हिंदी सप्ताह मनाया गया।

पांच दिन के इस **"हिंदी सप्ताह समारोह"** के दौरान दि. 11 सितंबर, 2006 को उद्घाटन समारोह पर श्री उल्हास पवार, अध्यक्ष, उर्वरीत महाराष्ट्र वैधानिक विकास महामंडल, विधान परिषद् सदस्य, पुणे ने अपने व्याख्यान में हिंदी का महत्व बताते हुए कहा कि हिंदी को व्यापक रूप से समझने का प्रयास करना चाहिए। राजभाषा की इस बढ़ती प्रगति को बनाये रखने के लिए हमें सतत् प्रयत्न करना होगा। हमारी राष्ट्रीयता की पहचान और संघ की राजभाषा हिंदी को व्यापक रूप के प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता है ताकि विश्व पटल पर इसे वह सम्मान मिल सके जिसकी यह वास्तव में अधिकारिणी है। उन्होंने प्रसन्नता से आगे यह भी कहा कि राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान, विशेषज्ञों के व्याख्यानों और ठोस परिचर्चाओं के द्वारा सरकारी संगठनों के अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिंदी में निष्पादित करने के लिए बहुत ही अच्छा कार्य कर रहा है।

हिंदी सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

लघु उद्योग सेवा संस्थान, तृश्शूर

संस्थान में 14-9-06 से 28-9-06 तक की अवधि के दौरान हिंदी पखवाड़ा 2006 का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताएं व 18-9-06 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित हुई।

हिंदी पखवाड़ा 2006 का समापन समारोह 28-9-06 के 2.00 बजे अपराहन् संस्थान के निदेशक महोदय श्री लैंबर्ट जोसफ की अध्यक्षता में सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुआ।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक महादेय श्री लैंबर्ट जोसफ ने सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर जोर दिया तथा पखवाड़े के सफल आयोजन में सहायक निदेशक (आ. अ.) श्री पी. सी. जोस (पखवाड़ा उपसमिति के अध्यक्ष) व उनकी टीम की प्रशंसा की।

देश की एकता एवं अखंडता को बनाए रखने के लिए हिंदी के योगदान के संबंध में कार्यक्रम के मुख्यातिथि-यथा-नेशनल इंश्यूरेंस कंपनी लिमिटेड, तृश्शूर के मंडल प्रबंधक श्री सुदीप कुमार ने अपने विचार व्यक्त किए । हिंदी भाषा की जानकारी व इसके प्रकाश में अपने वैयक्तिक अनुभवों का संक्षेप में वर्णन किया । इसी के अनुसरण में उनका विचार था कि हिंदी न केवल भारत की राष्ट्रभाषा है, बल्कि संघ सरकार की राजभाषा भी है । अतः इसे सीखना एवं दैनिक सरकारी कार्य में प्रयोग में लाना प्रत्येक सरकारी अधिकारी/कर्मचारी का परम कर्त्तव्य है ।

अपने संक्षिप्त संबोधन के पश्चात् पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्यातिथि महोदय ने अपने कर कमलों से पुरस्कृत कर गौरवान्वित किया ।

नालको, अनगुल, (उड़ीसा)

नेशनल एल्युमिनियम कंपनी लि. के प्रदावक एवं विद्युत संकुल, नालको नगर में दिनांक 14-09-2006 को हिंदी दिवस का आयोजन प्रशिक्षण संस्थान में अपराह्न 1600 बजे किया गया । इस अवसर पर नालको के ग्रहीत विद्युत संयंत्र के महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण) श्री एस.एस. मनुरकर, मुख्य अतिथि, प्रदावक संयंत्र के महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण) श्री अरूण कुमार शर्मा एवं उप महाप्रबंधक (मा.स.वि.), प्रशिक्षण संस्थान, श्री उमेश कुमार साहू सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे । सभा के प्रारंभ में श्री सुदर्शन तराई, प्रबंधक (राजभाषा) ने अतिथियों तथा उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया एवं अपने स्वागत भाषण में हिंदी दिवस की महत्ता तथा संविधान में हिंदी के बारे में विनिर्दिष्ट तथ्यों को उजागर किया । उन्होंने समस्त कर्मचारियों से हिंदी में कार्यालयीन कामकाज करने के लिए अपील भी किया । सम्मानित अतिथि श्री यू.सी. साहू ने अपने भाषण में हिंदी भाषा सीखने और बोलने की सुखद अनुभूति का वर्णन किया और हिंदी बोली की श्रुति मधुरता के बारे में प्रकाश डाला । सम्मानित अतिथि श्री ए. के. शर्मा ने अपने अभिभाषण में हिंदी भाषा के वैशिष्ट्य पर विस्तार से बताया । उन्होंने कहा कि हिंदी को जन-मानस तक पहुंचाने के लिए सरकार द्वारा थोपे जाने वाले आदेश को पारित करने की आवश्यकता नहीं है, हिंदी व्यापार की भाषा के रूप में सारे विश्व में फैल रही है । आज के भूमंडलीकरण के परिवेश में हिंदी का विकास जरूर बढ़ रहा है । समस्त भारतवासी हिंदी में बोलने और काम करने की कोई कठिनाई नहीं है, केवल आवश्यकता है मानसिकता की । उन्होंने उपस्थित समस्त कर्मचारियों से हिंदी में काम करने के लिए अनुरोध किया । मुख्य अतिथि श्री मनुरकर ने हिंदी भाषा एवं देवनागरी लिपि की विशेषता के बारे में बताया । संस्कृत भाषा की लिपि देवनागरी है और हिंदी की भी । अतः हिंदी सीखने के लिए कोई अड़चन पैदा नहीं होना चाहिए । हम सब हिंदी में अपने रोज के काम हिंदी में करें तो यह भारत माता के लिए असली सेवा होगी ।

महाप्रबंधक दूरसंचार कार्यालय, नासिक-422002

भारत संचार निगम लि., नासिक में वर्ष 2006 का हिंदी पखवाड़ा बड़े ही आकर्षक और सुरुचिपूर्ण ढंग से मनमाड में दिनांक 18-09-2006 को नांदगांव, मनमाड, चादवड और येवला एसडीसीए के लिए और उसी प्रकार मालेगांव में दिनांक 19-09-2006 को मालेगांव, सटाणा, कलवण और उमराणे एसडीसीए के लिए और पिपलगांव में दिनांक 20-09-2006 को पिपलगांव, निफाड, दिंडोरी, पेठ सुरगाना एसडीसीए के लिए और नासिक में दिनांक 14 सितंबर, 2006 से दिनांक 28 सितम्बर, 2006 तक नासिक, त्र्यंबकेश्वर, इगतपुरी, सिन्नर, दिंडोरी, पेठ, निफाड और सुरगाना एसडीसीए के लिए मनाया गया । इस प्रकार सम्पूर्ण नासिक दूरसंचार जिले के कार्यालयों को पखवाड़े की प्रतियोगिताओं में भाग लेने तथा प्रोत्साहन पाने का अवसर मिला ।

भारत संचार निगम लिमिटेड (भारत सरकार का उद्यम) प्रधान महाप्रबंधक दूरसंचार कार्यालय, तृश्शूर

14-9-2006 से 28-9-2006 तक तृश्शुर एस एस ए में हिंदी पखवाड़े का आयोजन समुचित रूप से किया गया । इस दौरान कर्मचारियों और उनके बच्चों के लिए निबंध लेखन, पारिभाषित शब्दावली, फार्म हिंदी में भरना, हस्तलेख और हस्ताक्षर, वर्णानुक्रम, सारलेख व समावेश,

वाचन, हिंदी में प्रश्नोत्तरी, स्मृति परीक्षा, ललित गान, कविता पाठ आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । कर्मचारियों के बच्चों के लिए निबंध लेखन, संस्कृति परीक्षा, वाचन, ललित गान, भाषण आदि प्रतियोगिताएं आयोजित किए गए और आयोजित इन सभी प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों/ अधिकारियों और उनके बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया । 19-9-2006 को उपमंडलीय कार्यालय सहित तृश्शूर एस एस ए के सभी कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 26 कर्मचारियों ने भाग लिया ।

वर्ष 2005-2006 के दौरान एस एस एल सी/ सी बी एस ई परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले इस एस एस ए के कर्मचारियों के बच्चों को नकद पुरस्कार श्री वी.पी.एस. मेनोन, म. प्र. (वि) द्वारा प्रदान किया गया । मुख्य अतिथि डा. के. पी. कुरियन ने पखवाड़े के दौरान चलाई गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को और उनके बच्चों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाणपत्र से सम्मानित किया । पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी कार्यशाला के भागीदारों को प्रमाणपत्र दिया गया ।

एनटीपीसी लिमिटेड, सिम्हाद्रि विशाखापट्टणम

एनटीपीसी लिमिटेड (भारत सरकार का उद्यम) की सिम्हाद्रि थर्मल पावर प्रोजेक्ट, विशाखापट्टणम (आं. प्र.) में 19-9-2006 को "हिंदी दिवस समारोह" मनाया गया ।

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि एवं महाप्रबंधक महोदय श्री आर. वेंकटेश्वरन ने कहा कि हिंदी हम सब के बीच की आत्मीयता एवं आत्मसम्मान का प्रतीक है । संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है और सरकारी कामकाज में राजभाषा के अमल में सामूहिक प्रयास करना अत्यंत आवश्यक है ।

इससे पहले 1-9-2006 से 14-9-2006 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह आयोजित किया गया । अपर महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण) श्री प्रदीप आर. डाहाके ने दिनांक 1-9-06 को कर्मचारियों से प्रतिज्ञा दिलाकर राजभाषा के कार्यान्वयन के प्रति हमारी निष्ठा एवं वचनबद्धता को उजागर किया । पखवाड़ा के दौरान विभागाध्यक्षों कर्मचारियों, गृहणियों तथा बच्चों के लिए हिंदी हस्ताक्षर हिंदी प्रश्नोत्तरी, निबंध एवं सुलेख प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई । परियोजना की केबल टी.वी. के माध्यम से राजभाषा प्रचार-प्रसार संबंधी वृत्तचित्र एवं चलचित्र प्रसारित किए गए ।

स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लि. शाखा विक्रय कार्यालय, लव कुश टॉवर, एक्जीविशन रोड़, पटना-800001

हिंदी पखवाड़ा का आयोजन दिनांक 14-09-2006 से 28-09-2006 तक किया गया । इस दौरान एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें 6 कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया । हिंदी अनुवाद, श्रुति लेख एवं वाक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया । विजेता कर्मचारियों को नियमानुसार पुरस्कार प्रदान किया । श्री मलय साह, सहायक महा प्रबंधक (विपणन) (कैम्प-पटना) ने घोषित विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया ।

स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड शाखा विक्रय कार्यालय, भुवनेश्वर

शाखा विक्रय कार्यालय तथा माल भण्डार, भुवनेश्वर में उपरिलिखित अवधि में बड़े हर्षोल्लास से राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया है । दि. 14-9-06 पूर्वाह्न 10 बजे हिन्दी दिवस के अवसर पर सभी कार्मिकों का स्वागत किया गया, देवी सरस्वती जी की तस्वीर पर माल्यार्पण के साथ समारोह का उद्घाटन किया गया ।

उद्घाटन सभा की अध्यक्षता करते हुए श्री एम. के. अग्रवाल, व प्र वि व शाखा प्रबंधक ने सभी कार्मिकों को संभाषित किया कि केंद्र सरकार के उपक्रम के नाते राजभाषा को पूर्ण रूप में अपनाना हम सबका नैतिक दायित्व है । सरकार द्वारा प्रदत्त लक्ष्य से हमें आगे बढ़ना है। यह आज दिन का संकल्प रहे ।

राष्ट्रभाषा के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करते हुए श्री अ. बेहेरा, स महा प्रब, परियोजना ने कहा कि अपनी भाषा ही राष्ट्र उन्नति का साधन है । हर भारतीय का राष्ट्रभाषा में बात एवं काम करना उचित है ।

दि. 16-09-06 में 'कंप्यूटर पर हिंदी टाइप' पर एक कार्यशाला आयोजित हुई, जिसमें शाखा एवं मालभण्डार के 7 कार्मिकों ने भाग लेकर हिंदी टाइप अभ्यास किया ।

स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड केंद्रीय विपणन संगठन, शाखा विक्रय कार्यालय, सी एम ओ कॉम्प्लेक्स बिल्डिंग, एम जी रोड, बोकारो स्टील सिटी-827001

दिनांक 14-09-06 से दिनांक 28-09-06 तक शाखा विक्रय कार्यालय बोकरो में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस दौरान हिंदी निबंध, हिंदी क्वीज, हिंदी अनुवाद, हिंदी वाद-विवाद एवं अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । दिनांक 14-9-06 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया । इस अवसर पर श्री अभिजीत कुमार शाखा प्रबंधक (एल पी) ने सेल अध्यक्ष की अपील को पढ़कर सुनाया । सभी कार्मिकों ने ध्यान से सुनकर उस पर काम करने की प्रतिज्ञा की । इस अवसर पर श्री अभिजीत कुमार शाखा प्रबंधक (एल पी) ने कहा कि हिंदी में कार्य करना स्वाभिमानी नागरिक का परम कर्तव्य है । उन्होंने कहा कि तकनीकी शब्दों की जानकारी तथा झिझक के कारण कर्मचारी हिंदी में काम नहीं कर पाते । इस अवसर पर श्री हरिशंकर दुर्गापाल, प्रबंधक (वि.) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि 14 सितंबर, एक ऐतिहासिक दिन है । इसी दिन 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया था ।

28 सितंबर, 2006 को हिंदी पखवाड़ा का समापन किया गया । इस अवसर पर श्री आशुतोष देव शर्मण एवं श्री आर. आर. त्रिपाठी, शाखा प्रबंधक (एफ पी) बोकारो ने सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किये ।

नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड, हैदराबाद

दिनांक 14 सितम्बर, 2006 से 13 अक्तूबर, 2006 तक 'राजभाषा माह', विभिन्न श्रेणियों के लिए हिंदी प्रतियोगिताओं, विशेष हिंदी कार्यशाला, राजभाषा संगोष्ठी, राजभाषा प्रदर्शनी, हास्य संध्या, राजभाषा समारोह आदि कार्यक्रमों के आयोजन के साथ हर्षोल्लास से मनाया गया ।

दिनांक 12-10-2006 को निगम के विभिन्न उत्पादन परियोजनाओं के साथ ही हैदराबाद और सिकंदराबाद में स्थिति विभिन्न उपक्रम, बैंकों और केंद्र सरकार के कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों की भागीदारिता से **राजभाषा कार्यान्वयन एवं प्रयोग–चुनौतियां एवं रणनीतियां** विषय पर **"राजभाषा संगोष्ठी"** का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण), राजभाषा विभाग, बेंगलूर के उप निदेशक (कार्यान्वयन), श्री विश्वनाथ झा, मुख्य अतिथि थे । अपने सम्बोधन में श्री विश्वनाथ झा ने कहा कि विवेच्य विषय बहुत समसामयिक है और अब समय आ गया है कि राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए राजभाषा से सीधे जुड़े अधिकारियों को सुनियोजित रणनीतियां बना और उन्हें कार्यान्वित करें । इस अवसर पर श्री जी. बी. जोशी, महाप्रबन्धक (कार्मिक) के साथ ही निगम के मुख्यालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण भी उपस्थित थे । इस संगोष्ठी में कुल 17 आलेख प्रस्तुत किए गए ।

दिनांक 13 अक्तूबर, 2006 को "राजभाषा समारोह" और "राजभाषा प्रदर्शनी" आयोजित की गई । निगम के अध्यक्ष सह-प्रबंध निदेशक, श्री बी. रमेश कुमार की अध्यक्षता में यह समारोह संपन्न हुआ ।

नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़

1 से 14 सितम्बर, 2006 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन 1 सितम्बर, 2006 को सम्मेलन कक्ष में श्री एम. एम. मदान, कार्यपालक निदेशक ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया । पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिता आयोजित की गई जिनमें अधिकारियों व कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । विभिन्न प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

पखवाड़े के पुरस्कार वितरण समारोह में अधिकारियों व कर्मचारियों को संबोधित करते हुए श्री एम. एम. मदान,

कार्यपालक निदेशक ने अपने उद्‌बोधन में राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए हिंदी की भूमिका पर प्रकोश डाला । उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी संस्कृति की संवाहक है । उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अपनी भाषा के महत्व को बताते हुए कहा कि हमारा यह भ्रम है कि अंग्रेजी पूरे विश्व में बोली और समझी जाती है । उन्होंने यूरोप के देशों के अपने अनुभवों को उद्‌धृम करते हुए कहा कि सभी देशों में अपनी भाषा के प्रति अटूट प्रेम एवं लगाव है । हमें भी हिंदी के प्रति अनुराग रखना चाहिए और अपने कार्यों में अधिक हिंदी का प्रयोग करना चाहिए । हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है और इसको प्रयोग में लाना अत्यंत सहज एवं सरल है ।

नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लिमिटेड
तीस्ता चरण-V जल विद्युत परियोजना, बालुटार (पूर्वी सिक्किम)

तीस्ता चरण-V जल विद्युत परियोजना, बालुटार (पूर्वी सिक्किम) में हिंदी पखवाड़े का उद्‌घाटन समारोह भाषाई सद्‌भाव व राष्ट्रीय एकता के परिवेश में दिनांक 01-09-2006 को सम्पन्न हुआ । पखवाड़े का उद्‌घाटन मुख्य अतिथि श्री एस. के. मित्तल, महाप्रबंधक, तीस्ता चरण-V जल विद्युत परियोजना, बालुटार (पूर्वी सिक्किम) ने दीप प्रज्जवलित करके किया । उसके बाद उन्होंने पखवाड़े प्रारंभ की उद्‌घोषणा की । उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्र की पहचान है । आगे उन्होंने कहा कि आपस में विचार-विनिमय के लिए हिंदी जानना बहुत जरूरी है । हम सब को हिंदी में काम करने में संकोच का अनुभव नहीं करना चाहिए बल्कि उत्साह व गर्व के साथ प्रयोग करना चाहिए । उन्होंने परियोजना में हिंदी के प्रयोग को देख कर प्रशंसा करते हुए कहा कि हिंदी का प्रयोग बहुत अच्छा चल रहा है । उन्होंने अपने ओजस्वी शब्दों में कहा कि यह पखवाड़ा हर वर्ष मनाया जाना चाहिए। इसके आयोजन से कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति चेतना जाग्रत होती है और उन्हें प्रोत्साहन मिलता है ।

नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लिमिटेड
राजभाषा विभाग क्षेत्र-II कार्यालय, बनीखेत जिला चंबा (हि.प्र.)

एन.एच.पी.सी. क्षेत्र-II कार्यालय, बनीखेत में निगम मुख्यालय से प्राप्त निदेशों के अनुपालन में हिंदी पखवाड़ा/दिवस पूरे भाषायी सद्‌भाव एवं भव्यता के साथ संपन्न हुआ । 1 सितंबर, 2006 को स्थानीय अवकाश होने के कारण पखवाड़े का शुभारंभ 2 सितंबर, 2006 को हुआ । उद्‌घाटन समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित छावनी कार्यपालक अधिकारी श्री राजहंस अवस्थी द्‌वारा दीप प्रज्जवलित करके आरंभ हुआ । तदोपरांत केंद्रीय विद्यालय के नन्हें छात्रों द्‌वारा मनमोहक सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई । इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि देश के बहुमुखी विकास के लिए हिंदी भाषा सबसे अधिक महत्वपूर्ण है और इस भाषा की उपेक्षा राष्ट्रीय त्रासदी की भांति है । इस अवसर पर राजभाषा विभाग क्षेत्र-II के प्रबंधक (राजभाषा) श्री नानक चंद ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि राजभाषा विभाग अपने स्तर पर हिंदी का विकास करने हेतु हर संभव आवश्यक प्रयास कर रहा है और इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप पिछले वर्ष की तुलना में क्षेत्र-II कार्यालय में राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक कार्य हो रहा है ।

राजभाषा विभाग की ओर से श्री शकील खान ने मुख्य अतिथि एवं उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए हिंदी पखवाड़ा मनाने एवं क्षेत्र-II कार्यालय द्‌वारा विगत वर्ष में प्राप्त उपलब्धियों एवं सफलतापूर्वक आयोजित कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी दी । इस अवसर पर क्षेत्र-II अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 'सरकारी कार्यालयों में राजभाषा की स्थिति' विषय से संबंधित भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए ।

नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लिमिटेड सैक्टर-33, फरीदाबाद-121003

निगम मुख्यालय में 1 सितम्बर, 2006 से 14 सितंबर, 2006 तक भव्य हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । इस दौरान कार्यालयीन कार्य प्रणाली को "राजभाषामय" बनाने के लिए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इन प्रतियोगिताओं में तकनीकी और गैर-तकनीकी कार्यों से जुड़े 105 कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

हिंदी दिवस के अवसर पर निदेशक (तकनीकी) महोदय के कर कमलों से नोटिंग/ड्राफ्टिंग प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत चयनित 22 प्रतिभागियों को भी पुरस्कार स्वरूप चैक प्रदान किए गए ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री एस. पी. सेन, निदेशक (तकनीकी) ने अपने संबोधन में सहज, सरल हिंदी के प्रयोग पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जर्मनी व चीन में लोग अपनी भाषा में ही बात करते हैं । उन्होंने कहा कि यदि भाषा को व्यापक बनाना है तो उसमें अंग्रेजी व दूसरी भारतीय भाषाओं के शब्द सहज रूप से अपना लिए जाने चाहिएं । किसी भी भाषा को सीखने के लिए उस भाषा के साहित्य, उपन्यास कहानियां आदि को पढ़ना जरूरी है । उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में हिंदी फिल्मों का बहुत बड़ा योगदान है । उन्होंने हिंदी दिवस की सभी को बधाई देते हुए कहा कि हमारे देश में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं और इनमें हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो ज्यादातर लोगों द्वारा समझी व बोली जाती है । हिंदी देश की एकता की मजबूत कड़ी है और इसने देश के विभिन्न वर्गों के लोगों को जोड़ा है ।

नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लिमिटेड कोमकैराप, मणिपुर-795124

हिंदी पखवाड़ा/दिवस 01 सितम्बर से 14 सितम्बर 2006 तक लोकताक पावर स्टेशन में आयोजित किया गया । 01 सितम्बर को लोकताक पावर स्टेशन के अतिथि गृह में पखवाड़े का शुभारम्भ करते हुए समारोह के मुख्य अतिथि श्री एम. लालमणि सिंह, मुख्य अभियंता ने अपने वक्तव्य में सभी से हिंदी बोलने, लिखने और सीखने का आह्वान किया । इस शुभअवसर पर उपस्थित क्षेत्र-III, कोलकाता से आए माननीय प्रमुख (मानव संसाधन) श्री एम.एस.जे. सिन्हा ने भी उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए अपने संबोधन में कहा कि हम प्रत्येक भारतवासियों को हिंदी अपनानी होगी जिससे जन-जन के विचारों का आदान-प्रदान सरल हो सके और एक दूसरे से अच्छा सम्पर्क बना रहे । यही हमारा संवैधानिक दायित्व है । श्री लूकस गुडिया, वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.सा.) द्वारा सभी का स्वागत किया गया । उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी एक सरल भाषा है । अगर हम हिंदी बोल सकते हैं तो थोड़ी मेहनत करके हिंदी लिख भी सकते हैं । अतः अपने कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने एवं प्रचार-प्रसार के लिए कदम से कदम मिलाकर हिंदी में कार्य करने का संकल्प करें और प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार पाने के हकदार बनें ।

केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड बी-12, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110016

केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड में 14-28 सितंबर, 2006 को हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । इस दौरान अधिकारियों और कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति अभिरुचि बढ़ाने के उद्देश्य से तीन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई--प्रश्नोत्तरी, निबंध और वाद-विवाद । इनमें से प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए सम्मिलित रूप से किया गया, जबकि निबंध और वाद-विवाद प्रतियोगिताएं हिंदी भाषी और हिंदीतर भाषी, दोनों वर्गों के लिए अलग-अलग आयोजित की गई ।

हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह 28 सितंबर, 2006 को आयोजित किया गया, जिसमें बोर्ड के सभी अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे । इसमें पहले वाद-विवाद प्रतियोगिता हुई तथा उसके बाद पुरस्कार वितरण हुआ । बोर्ड की अध्यक्ष श्रीमती रजनी पाटील ने सभी प्रतियोगियों को अपनी शुभकामनाएं प्रदान करते हुए विजेताओं को अपने कर-कमलों से नकद पुरस्कार प्रदान किए ।

केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, मुख्यालय, नागपुर

दिनांक 01-09-2006 से 15-09-2006 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । दिनांक 01-09-2006 को आयोजित उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता बोर्ड के निदेशक श्री वे. परमेश्वरन ने की ।

उन्होंने कहा कि "जब भाषा हमारी राजभाषा या राष्ट्रभाषा हो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। इसलिए इसका कभी भी अनादर नहीं करना चाहिए। न केवल इस माह के दौरान बल्कि वर्षभर हमें हिंदी में काम करना चाहिए। भाषा एक ऐसा साधन है जो भूत, भविष्य एवं वर्तमान को अपने साथ लेकर आगे बढ़ती है। वर्तमान सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनों को अक्षर रूप देकर भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन करती है।"

दिनांक 01-09-2006 से 14-09-2006 तक विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। दिनांक 15-09-2006 को मुख्यालय में 'हिंदी दिवस' का आयोजन किया गया। श्री सुनील दाढ़े, महालेखाकार, लेखा परीक्षा (महाराष्ट्र) कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। श्री पी.एस. खानझोड़े, वित्तीय सलाहाकार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री दाढ़े जी ने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किए ।

मुख्य नियंत्रण सुविधा, हासन एवं भोपाल तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मुख्य नियंत्रण सुविधा में सितंबर माह में हिंदी पखवाड़ा भव्य रूप से मनाया गया। इस दौरान एमसीएफ, हासन तथा एमसीएफ, भोपाल के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए संयुक्त रूप से निम्न 12 प्रतियोगिताएं आयोजित कि गईं। प्रतियोगिताओं में सभी प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

पखवाड़े के दौरान श्री एस. परमेश्वरन, उपनिदेशक, एमसीएफ-भोपाल की अध्यक्षता में दिनांक 25 एवं 26 सितंबर 2006 को एमसीएफ, भोपाल के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दो-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री सुनील सरवाही, उप निदेशक, क्षे.का.का., भोपाल ने राजभाषा नीति, नियम, अधिनियम एवं दैनंदिन कार्यों के प्रयोगार्थ पारिभाषिक शब्दावली के बारे में अत्यंत सरल शब्दों में अवगत कराया। श्री अनिल शुक्ला, प्रबंधक (रा.भा.), क्षेत्रीय कार्यालय, भारतीय स्टेट बैंक, भोपाल एवं श्री अशोक व्यास, उप प्रबंधक, केनरा बैंक, भोपाल ने "हिंदी भाषा पर अंग्रेजी शब्दों का बढ़ता प्रभाव"-विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी दी।

भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम जी. टी. रोड, कानपुर-208016

दिनांक 14-09-2006 को हिंदी पखवाड़े का शुभारम्भ कार्यवाहक अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक माननीय श्री वी. के. मिश्रा के करकमलों द्वारा अपरान्ह 16.00 बजे निगम के सभागार में दीप प्रज्जवलित कर किया गया।

हिंदी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह के अवसर पर कार्यवाहक अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय ने हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी राष्ट्र भाषा है इसे हमें प्रतिदिन अपने रोज मर्रा के कार्यों में अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। निगम में पूरे पखवाड़े के अर्न्तगत हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी निबन्ध प्रतियोगिता टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, श्रुतलेख प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिंदी कम्प्यूटर लेखन प्रतियोगिता एवं अन्य भाषा-भाषी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है।

हिंदी पखवाड़े के अर्न्तगत दिनांक 22-09-2006 को एलिम्को में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। अंत में कार्यवाहक अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय ने हिंदी पखवाड़े के समापन के अवसर पर प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले कर्मचारियों को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया तथा राजभाषा विभाग द्वारा जारी आदेशों अनुदेशों का अनुपालन तथा क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने का कारगर तरीका अपनाने का आह्वान किया।

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान 5, सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, हौज खास, नई दिल्ली-110016

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान में 1 से 15 सितम्बर 2006 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान में हिंदी

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता और हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इनमें संस्थान के अनेक अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। इस पखवाड़े का मुख्य समारोह 15 सितम्बर, 2006 को आयोजित किया गया। श्री नरेन्द्र सिंह, अवर सचिव, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। यह कार्यक्रम संस्थान के अपर निदेशक, डा. दिनेश पॉल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

समारोह का शुभारंभ करते हुए अपर निदेशक महोदय ने मुख्य अतिथि तथा सभी उपस्थितों का स्वागत किया। उन्होंने प्रेरक शब्दों में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला और संस्थान के काम काज में हो रहे हिंदी के प्रयोग का ब्यौरा देते हुए संस्थान के हिंदी कार्य की सराहना की।

मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र सिंह ने अपने भाषण में उल्लेख किया कि हिंदी को समुचित स्थान पर प्रतिष्ठित करने के लिए इसे सरल और बोधगम्य रूप में अपनाया जाना आवश्यक है ताकि प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी हिचकिचाहट के धारा प्रवाह रूप से अपने विचार प्रकट कर सके । उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि संस्थान के अधिकारी/कर्मचारी राजभाषा हिंदी से संबन्धित कार्यों में रूचि लेते हैं।

मुख्य अतिथि ने पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता और हिंदी में डिक्टेशन देने हेतु प्रोत्साहन योजना के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

पंजाब नैशनल बैंक, झारखण्ड अंचल कार्यालय, बागराय मार्केट, मेन रोड, रांची-834001

झारखण्ड अंचल कार्यालय द्वारा हिंदी माह सम्पन्न होने पर 07-10-2006 को रांची में राजभाषा समारोह एवं कवि सम्मेलन-सह-मुशायरा का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि थे महामहिम श्री सैय्यद सिब्ते रजी राज्यपाल, झारखण्ड और राज्य की प्रथम महिला श्रीमती चाँद फरहाना माननीय अतिथि थीं। हिंदी माह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ हासिल करने वाले कर्मचारियों और अधिकारियों को महामहिम राज्यपाल के कर-कमलों से पुरस्कृत किया गया।

महामहिम राज्यपाल श्री सैय्यद सिब्ते रजी ने अपने संबोधन में कहा कि भारत में संघीय व्यवस्था है और हिंदी भारत संघ की राजभाषा है। इसमें किसी प्रकार के किन्तु परन्तु की कोई गुंजाइश नहीं है। हिंदी को लागू करना हम सबका कर्त्तव्य है। उन्होंने कहा कि दूसरों को हिंदी में काम करने के लिए कहने के पहले हमें स्वयं हिंदी का प्रयोग करना चाहिए और यह सोचने, समझने, बोलने तथा लिखने आदि हर स्तर पर होना चाहिए। हिंदी भाषियों को अन्य प्रदेशों की भाषाओं को भी सीखना चाहिए तभी भारत की सामासिक संस्कृति की अवधारणा साकार हो सकेगी। क्योंकि हमारा देश समृद्ध संस्कृतियों का सामासिक स्वरूप है। यूरोपीय देशों की पहचान एवं महत्ता उनकी अपनी भाषा से होती है, वहीं भारत की पहचान और महत्ता यहां की समृद्ध संस्कृतियों से है। इसीलिए भाषा को संस्कृति से जोड़ने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा की किसी भी भाषा ने कभी भी अपने विकास के लिए किसी धर्म का सहारा नहीं लिया किन्तु धर्म ने हमेशा अपने प्रचार-प्रसार एवं विकास के लिए भाषा का सहारा लिया। हमारी राजभाषा हिंदी अपनी उत्पत्ति और विकास, हर दृष्टि से भाषिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा साम्प्रदायिक सद्भाव, समन्वय, सामंजस्य एवं राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है क्योंकि हिंदी हमारी जंग-ए-आजादी की भाषा रही है। उन्होंने कहा कि हम राजभाषा का सम्मान कर सिर्फ हिंदी का ही सम्मान नहीं करते, बल्कि हिंदी के माध्यम से उस त्याग, बलिदान, इंकलाब और कुर्बानी का सम्मान करते हैं जो हिंदी ने अपने विकास-क्रम में देखे-सहे हैं तथा स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देश को जोड़ने में जो अहम् भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि इसीलिए गाँधी जी ने "हरिजन" पत्रिका के संपादकीय में घोषणा की थी कि "दुनिया वालों से कह दो कि गाँधी अंगरेजी भूल गया है"।

विजया बैंक, प्रधान कार्यालय, 41/2, एम.जी. रोड, बैंगलूर-560001

दिनांक 14-09-2006 को विजया बैंक प्रधान कार्यालय द्वारा हिंदी दिवस धूम-धाम से मनाया गया । बैंक

के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री प्रकाश पी. मल्या जी ने दीप जलाकर समारोह का शुभारंभ किया । अपने संदर्भोचित अध्यक्षीय भाषण में श्री मल्या जी ने कहा कि साथियों व ग्राहकों के बीच मैत्रीभाव बढ़ाने में भाषा समर्थ होती है । स्वतंत्रता आंदोलन में खड़ी बोली की भूमिका की याद दिलाते हुए उन्होंने यह भी कहा कि व्यवहार, व्यवसाय, कारोबार से जुड़े बैंकरों को राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी-भाषा प्रयोग को दैनंदिन काम-काज में लाना आवश्यक है । श्री मल्या जी ने प्रसन्नता व्यक्त की कि हमारे देश में पनपी और पल्लवित हिंदी आंतरिक कामकाज में तथा ग्राहकों के बीच संवाद और संप्रेषण की भाषा बन चुकी है ।

बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री वल्लियप्पन ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी/अंग्रेजी के अवलंबन के बिना अपने बल पर लोकप्रिय भाषा बनी है। उन्होंने हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में बैंक में हुई प्रगति पर खुशी जाहिर की । उन्होंने यह भी कहा कि देश के आचार-विचार के प्रति हमारी निष्ठा अटल और अटूट रहना है और हिन्दी का साथ नहीं छोड़ना चाहिए ।

केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, विपिन खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

दिनांक 14-09-2006 को हिंदी दिवस समारोह का अयोजन किया गया । समारोह के मुख्य अतिथि साहित्य जगत के स्तंभ प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, लखनऊ विश्वविद्यालय थे। समारोह की अध्यक्षता बैंक के महाप्रबंधक श्री पी. कृष्ण राव ने की ।

केनरा बैंक में हिंदी के प्रयोग की सराहना करते हुए प्रो. दीक्षित ने कहा कि हिंदी प्रशासन एवं व्यापार की भाषा के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने हिंदी को पूरे देश की एक मात्र संपर्क भाषा बताते हुए इस बात पर जोर दिया कि इसे हर क्षेत्र में चाहे बैंकिंग हो, उद्योग हो, साहित्य हो अथवा कंप्यूटर हिंदी को सरलता के साथ अपनाया जाना चाहिए । अपनी विदेश यात्रा के अनुभवों को बताते हुए प्रो. दीक्षित ने बताया कि विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी के अध्ययन के प्रति लोगों की रुचि बढ़ रही है, यह इस बात का संकेत है कि हिंदी राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अंतर्राष्ट्रीय भाषा का स्वरूप ले रही है ।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में बोलते हुए महाप्रबंधक श्री पी. कृष्ण राव ने कहा कि हमारा अंचल "क" क्षेत्र की हृदय स्थली में स्थित है अतः हमारा नैतिक दायित्व है कि हम यहां के ग्राहकों की भाषा में ही बैंकिंग सेवा प्रदान करने का हर संभव प्रयास करें । केनरा बैंक द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की जानकारी देते हुए महाप्रबंधक श्री राव ने बैंक कर्मचारियों से अपील की कि वे अपने आंतरिक कामकाज में हिंदी को अपनाए ।

केनरा बैंक, क्षेत्रीय कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय ई-1, झंडेवालान एक्सटेंशन, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055

केनरा बैंक स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय गुड़गांव के नए परिसर में 15 अगस्त, 2006 को ध्वजारोहण के साथ हिंदी मास का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर गुड़गांव स्थित सभी शाखाओं के उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों ने हिंदी में सर्वाधिक उपयोग बढ़ाने का प्रण किया। इस अवसर पर महाविद्यालय प्रभारी श्री एस. लक्षमणन तथा वरिष्ठ प्रबंधक एवं संकाय प्रभारी राजभाषा कक्ष श्री एस.के. तुली ने भी अपने उद्गार में बैंक द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में उठाये गए कदमों की चर्चा करते हुए सभी शाखाओं में तथा प्रशिक्षण महाविद्यालय में हिंदी का उपयोग बढ़ाने के लिए संकल्प दोहराया । 15 अगस्त से 16 सितम्बर, 2006 तक हिंदी मास बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । अभी फिलहाल महाविद्यालय झंडेवालान नई दिल्ली में स्थित है। प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रत्येक सप्ताह कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पहले 2 सप्ताह राजभाषा नीति पर विचार गोष्ठियां आयोजित की गईं तथा राजभाषा नीति ज्ञान प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम चलाया गया । तीसरे सप्ताह में हिंदी समाचार वाचन प्रतियोगिता तथा हिंदी के महानुभावों के चित्र पहचान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । चौथे तथा अंतिम सप्ताह में प्रशिक्षार्थियों के लिए हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । 16 सितम्बर, 2006 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया । प्रशिक्षार्थियों द्वारा राजभाषा चिंतन किया गया। पुरस्कारों का वितरण किया गया तथा प्रशिक्षार्थियों द्वारा एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

विजया बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, विजया टावर्स, एल. एच. एच. रोड, मंगलूर

क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर के सभागृह में 14 सितंबर 2006 को हिंदी दिवस मनाया गया । समारोह का शुभारंभ श्रीमती प्रतिभा ए. शेट्टी व पार्टी के वंदना से हुआ । डॉ. (श्रीमती) स्मिता चिपलूणकर, सेवा निवृत्त प्राध्यापिका एवं हिंदी लेखिका ने परंपरागत रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया । अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि हमें हिंदी भाषा सीखनी है तो उसे बोलचाल में प्रयोग करना है, व्याकरण में संभावित त्रुटि के भय से हिचकना नहीं चाहिए। सरल हिंदी तथा विविध उदाहरण देकर अपने भाषण से सभा को भाव विभोर कर दिया ।

समारोह में अध्यक्षीय भाषण के दौरान क्षे. प्र. श्री जी. वी. के शेट्टी ने बताया कि हिंदी मात्र राजभाषा ही नहीं वह तो भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में लाने में सहायक भाषा भी है। इसलिए रोजमर्रा के काम में हिंदी का प्रयोग करना जरूरी है। राजभाषा अधिकारी श्रीमती एस. माया ने वर्ष 2005-06 के राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों का रिपोर्ट सभा में प्रस्तुत किया । समारोह पर हिंदी दिवस समारोह के सिलसिले में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को क्षे. प्र. ने पुरस्कार वितरित किये।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अम्बाला छावनी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अंबाला छावनी के तत्वाधान में सामूहिक राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसमें अंबाला के विभिन्न बैंकों, बीएसएनएल, पोस्टल आदि कार्यालयों ने भाग लिया । इसके अंतर्गत दिनांक 18-9-2006 को संयुक्त बनाम एकल परिवार विषय पर वाक प्रतियोगिता, दिनांक 19-9-06 को सामान्य ज्ञान हिंदी प्रतियोगिता एवं दिनांक 20-9-06 को विनम्रता एवं ग्राहक विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । दिनांक 26-9-06 को रेलवे क्लब, अंबाला छावनी में सांस्कृतिक कार्यक्रम, कवि सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया । इसमें उत्तर रेलवे भारत स्काउट एवं गाइड तथा बीएसएनएल के कलाकारों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कवि सम्मेलन में आमंत्रित कवियों में सर्व श्री माधव कौशिक, योगेंद्र मुदगिल, खेमचंद शर्मा, प्रचंड, अशोक कुमार राठी एवं अशोक कुमार पांडेय ने अपनी उत्कृष्ट काव्य रचनाओं को प्रस्तुत किया । इसके बाद श्रीमती रश्मि टंडन, अध्यक्ष, उत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन, अम्बाला छावनी ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नगद पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए। मंडल रेल प्रबंधक ने मंडल की त्रैमासिक पत्रिका 'हिमदर्शन' का भी विमोचन किया । इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय एवं बीएसएनएल कार्यालय द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी भी लगाई गई ।

भारत डायनामिक्स लिमिटेड, कंचनबाग, हैदराबाद

हिंदी पक्षोत्सव-2006 का समापन दिनांक 26-9-2006 को हुआ । समापन-समारोह के अवसर पर उद्यम के प्रभारी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक [निदेशक (तकनीकी कमाडोर (नि.)] पी. के. सामंता, वि.से.मे., ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डॉ. रेखा शर्मा, लेखिका, कवयित्री, तथा अध्यक्ष हिंदी विभाग, विवेक वर्धिनी महाविद्यालय विशेष अतिथि ने अपने भाषण में यह कहा "हमको यह ध्यान में रखना चाहिए कि हिंदी दिवस के दिन ही इसे मनाये तथा बाद में भूल जाएं ऐसा न करते हुए बीडीएल में जिस तरह से आज तक हिंदी राजभाषा के कार्यान्वयन में अविस्मरणीय कार्य करते रहे हैं। हिंदी की सेवा को अपना कर्तव्य समझ कर कार्य किया। उसी तरह सभी को समर्पण भाव तथा निष्ठा से कार्य करते रहना चाहिए ।"

हिंदी प्रतियोगिताओं के 63 सफल प्रतिभागियों को निदेशक (तकनीकी) महोदय द्वारा पुरस्कृत किया गया पुरस्कार में बहुमूल्य पुस्तकें तथा स्मृति-चिह्न दिए गए। जिन लोगों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में निर्णायक, संयोजक आदि भूमिकाएं निभायीं उन्हें पुरस्कृत किया गया । ■

संगोष्ठी/सम्मेलन

परमाणु ऊर्जा विभाग परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय पश्चिमी क्षेत्र ए एम डी काम्प्लेक्स, प्रताप नगर से. V विस्तार बम्बाला सांगानेर, जयपुर

हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी

परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र में दिनांक 21 व 22 सितंबर 2006 को "विकासशील भारत में परमाणु ऊर्जा संसाधन एवं पर्यावरण की चुनौतियां" विषय पर एक अखिल भारतीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय के विभिन्न क्षेत्रों से वैज्ञानिक अधिकारियों ने भाग लिया। संगोष्ठी में निम्नलिखित उपविषयों पर कुल 36 आलेखों का प्रस्तुतिकरण किया गया।

1. प्राकृतिक संसाधन।
2. खनिज अन्वेषण प्रबंधन व चुनौतियां।
3. खनिज अन्वेषण में उपकरणन तथा विश्लेषण तकनीकें।
4. परमाणु खनिज एवं खनिजीकरण।

श्री आर. एस. गोयल, उप-महानिदेशक, भारतीय भू-सर्वेक्षण द्वारा वैज्ञानिक संगोष्ठी में प्रस्तुत किए जा रहे वैज्ञानिक आलेखों के सारांशों की पुस्तिका का विमोचन किया गया । स्वागत समारोह का संचालन श्री सी.एस.के. जैन, वैज्ञानिक अधिकारी-एफ द्वारा किया गया।

सारांश पुस्तिका के विमोचन के पश्चात् श्री विजय प्रकाश सक्सेना, अपर निदेशक, प.ख.नि. द्वारा अध्यक्षीय भाषण दिया गया अध्यक्षीय भाषण के पश्चात् अपर निदेशक महोदय ने अपना आधार व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपर निदेशक महोदय के आधार व्याख्यान के पश्चात् श्री आर. एस. गोयल, उप-महानिदेशक, भारतीय भू-सर्वेक्षण ने अपना आधार व्याख्यान प्रस्तुत किया।

उद्घाटन समारोह के उपरोक्त कार्यक्रमों के प्रथम तकनीकी सत्र प्रारंभ हुआ जिसमें 1. प्राकृतिक संसाधन एवं 2. खनिज अन्वेषण प्रबंधन व चुनौतियां विषयों पर कुल 7 आलेखों का प्रस्तुतिकरण किया गया।

द्वितीय तकनीकी सत्र दिनांक 21-9-2006 को तकनीकी सत्र में 1. खनिज अन्वेषण में उपकरणन तथा विश्लेषण तकनीकें एवं 2. पर्यावरण संरक्षण विषयों पर कुल 4 आलेख प्रस्तुत किए गए। तृतीय तकनीकी सत्र में उपरोक्त विषयों से संबंधित कुल 6 आलेख प्रस्तुत किए गए। इस प्रकार संगोष्ठी के प्रथम दिन कुल 18 आलेखों का प्रस्तुतिकरण किया गया।

वैज्ञानिक संगोष्ठी के दूसरे दिन प्रातः 10.00 बजे क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय भू-जल बोर्ड ने अपना आधार व्याख्यान प्रस्तुत किया इसके बाद चायपान के पश्चात् वैज्ञानिक संगोष्ठी के द्वितीय दिवस का प्रथम तकनीकी सत्र प्रारंभ किया गया यह तकनीकी सत्र परमाणु खनिज एवं खनिजीकरण विषय पर आधारित था। इस सत्र में कुल 9 आलेखों का प्रस्तुतिकरण किया गया।

द्वितीय तकनीकी सत्र आयोजित हुआ इस सत्र में भी उपरोक्त विषय पर आलेख प्रस्तुत किए गए। इस सत्र में कुल 5 आलेख प्रस्तुत किए गए।

समान विषय पर तृतीय तकनीकी सत्र आयोजित किया गया इस सत्र में कुल 4 आलेख प्रस्तुत किए ।

दूसरे दिन के तृतीय तकनीकी सत्र के पश्चात् कार्यक्रम का समापन समारोह आयोजित हुआ जिसमें समीक्षा करने के लिए सर्वप्रथम श्री विजय प्रकाश सक्सेना, अपर निदेशक महोदय को आमंत्रित किया गया। अपर निदेशक महोदय ने सर्वप्रथम पश्चिमी क्षेत्र के नवनिर्मित भवन में प्रथम बार आयोजित की गई इस वैज्ञानिक संगोष्ठी की सुव्यवस्था एवं

कुशल संचालन के लिए वैज्ञानिक संगोष्ठी से संबंधित सभी आयोजन समितियों को बधाई दी तत्पश्चात् उन्होंने संगोष्ठी में प्रस्तुत किय गए आलेखों की समीक्षा की तथा वैज्ञानिक अधिकारियों की संबंधित संबंधित जिज्ञासाओं का समाधान प्रस्तुत किया।

हिंदुस्तान पेपर कारपोरेशन लि० 75 सी, पार्क स्ट्रीट, कोलकाता-700016

1 सितम्बर, 2006 को 'राजभाषा माह' का शुभारम्भ एवं कोलकाता महानगर के सार्वजनिक उद्यमों, उपक्रमों और स्वायत्तशासी संस्थाओं के राजभाषा अधिकारियों हेतु एक सम्मेलन भारतीय भाषा परिषद के सभागार में आयोजित किया गया। ''हिंदी तो राष्ट्रभाषा है और पूरे भारत के लोग इसे बोलें एवं समझे तो बहुत सी समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है।'' ये विचार थे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं बांग्ला के प्रसिद्ध कवि व लेखक श्री सुनील गंगोपाध्याय के। विशिष्ट अतिथि के रूप में दिल्ली से पधारे उड़िया साहित्य के कवि एवं लेखक श्री देवदास छोटराय, आई.ए.एस, सचिव, भारत सरकार, गृह मंत्रालय ने कहा कि ''आज कम्प्यूटर के क्षेत्र में हिंदी का तेजी से विकास हो रहा है।'' कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे निगम के अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक श्री रजी फिलिप ने कहा कि ''हिंदी आदेश नहीं मन से बढ़ती है इसके प्रचार-प्रसार के लिए किसी को बाध्य नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे प्रेरित करना चाहिए।'' इस अवसर पर डॉ. राम विनोद सिंह, श्री दिनेश कुमार बडेरा, श्री अशोक कुमार भाटिया एवं सैयद महफूज हसन रिजवी 'पुण्डरीक' आदि अतिथियों ने भी अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन एवं निगम के कार्मिकों द्वारा सरस्वती वन्दना से हुआ तत्पश्चात् श्री आई. के. माथुर, प्रबन्धक (मा. सं. एवं का सेवा) व प्रभारी राजभाषा ने मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों का परिचय पढ़ा तथा निगम में लागू प्रोत्साहन योजनाओं हेतु पुरस्कार राशियों की घोषणा भी की।

अपने स्वागत भाषण में श्री जगदीश बोरा ने सभी राजभाषा अधिकारियों से आग्रह किया कि "अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें एवं हिंदीतर भाषियों को कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करें ताकि हर दिवस हिंदी दिवस बन जाए।"

बैंक आफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, राजभाषा विभाग, जीवन भारती लेवल-5, टॉवर-1, 124, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-110001

दिनांक 8-12-2006 को आंचलिक कार्यालय के सभाकक्ष में अंचल की समस्त शाखाओं/विभागों के उप महाप्रबंधक/सहायक महाप्रबंधकों हेतु 'राजभाषा संगोष्ठी' का आयोजन किया था । उक्त संगोष्ठी में उपस्थित उप महाप्रबंधक/सहायक महाप्रबंधकों को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निदेशक (नीति एवं कार्यन्वयन) श्री बृजमोहन सिंह नेगी ने वरिष्ठ कार्यपालकों को भारत सरकार की राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी अपेक्षाओं, नीति एवं सांविधिक अपेक्षाओं के अनुपालन को सुनिश्चित करने बाबत् सूचित किया। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दिल्ली) के उपनिदेशक श्री प्रेम सिंह ने वार्षिक कार्यक्रम 2006-07 एवं नोटिंग व टिप्पण से अवगत कराया था। संगोष्ठी के उपरांत उप महाप्रबंधक/सहायक महाप्रबंधकों के बीच 'हिंदी टिप्पण एवं नोटिंग प्रतियोगिता' का आयोजन भी किया गया था।

'राजभाषा संगोष्ठी' के अवसर पर नई दिल्ली अंचल द्वारा तैयार एव पुस्तिका 'वरिष्ठ कार्यापालकों हेतु हिंदी में अभिव्यक्तियां एवं बैंकिंग शब्दावली' का विमोचन भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निदेशक (नीति एवं कार्यान्वयन) के कर-कमलों द्वारा किया गया।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग सी.जी.ओ. कंप्लेक्स, पोंकुलम विलयानी पोस्ट तिरुवनन्तपुरम-695522

केरल हिंदी प्रचार सभा द्वारा आयोजित 15-9-2006 को राजभाषा प्रदर्शनी का उदधान श्रीमान एम. विजयकुमार, माननीय मंत्री, खेलकूद व युवकार्यों और पत्तन केरल ने किया, श्री एस. सुब्बा राव, निदेशक के. एल. जी. डी. सी. ने अपने मुख्य भाषण में भारतीय सर्वेक्षण विभाग में मुख्यत: तकनीकी कार्यों में हिंदी के कार्य का प्रतिपादन करते हुए कहा कि निजि कंपनियों ने जैसे जनसामान्य तक पहुंचने के लिए विज्ञापनों में हिंदी का सहारा लिया है, हमें भी इस तीसरी आंख को प्राप्त करना है हिंदी को आदर सहित साध्य की भाषा बनानी है अपने कार्यों और कर्तव्यों के प्रति वचनबद्ध रहना है।

पुरस्कार

मंगलूर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

प्रतिष्ठित इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा स्थापित राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार से मंगलूर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति सम्मानित की गई। हिंदी दिवस, अर्थात् 14 सितंबर, 2006 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में माननीय केंद्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल के कर कमलों से श्री बी. सांबमूर्ति, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, कार्पोरेशन बैंक एवं अध्यक्ष, मंगलूर नराकास ने यह पुरस्कार प्राप्त किया तथा प्रशस्ति पत्र समिति के सदस्य सचिव डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल, मुख्य प्रबंधक, कार्पोरेशन बैंक द्वारा प्राप्त किया गया ।

यह पुरस्कार राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सर्वोच्च पुरस्कार है। वर्ष 2004-05 हेतु ग क्षेत्र में अपने उत्कृष्ट निष्पादन हेतु मंगलूर नराकास को यह पुरस्कार प्रदान किया गया। वर्ष 1986 में समिति के गठन से लेकर कार्पोरेशन बैंक, प्रधान कार्यालय समिति का संयोजक है। समिति के 74 सदस्य हैं जिन में सार्वजनिक क्षेत्र के 26 बैंक, 29 केंद्र सरकार के कार्यालय तथा 10 केंद्र सरकार के उपक्रम शामिल हैं। मंगलूर नराकास हर वर्ष भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय पुरस्कार हासिल करती आई है। अब समिति ने राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार हासिल किया है। पूरे भारत में 250 से अधिक नराकास गठित हैं।

केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, मुख्यालय, नागपुर

केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, मुख्यालय, नागपुर को नागपुर स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों की श्रेणी में "श्रम किरण" गृह पत्रिका के उत्कृष्ट प्रकाशन पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नागपुर द्वारा प्रथम पुरस्कार तथा नागपुर में स्थित केंद्रीय कार्यालयों की श्रेणी में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

बोर्ड के माननीय निदेशक श्री वे. परमेश्वरन को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नागपुर के अध्यक्ष एवं भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण कार्यालय, नागपुर के उप महा निदेशक डॉ. के. एस. मिश्र के करकमलों द्वारा 30-08-2006 को राष्ट्रीय प्रत्यक्षकर अकादमी के ऑडिटोरियम में पुरस्कार के रूप में दो शील्ड एवं प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

भारतीय प्रसारण निगम आकाशवाणी: नागपुर

अखिल आकाशवाणी राजभाषा सम्मान-2006

आकाशवाणी नागपुर के लिये यह गौरव की बात है कि जहाँ उसे वर्ष 2005-06 के लिये नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति नागपुर की ओर से अधिकतम शासकीय कामकाज राजभाषा हिंदी में किए जाने के उपलक्ष्य में "प्रोत्साहन पुरस्कार" से सम्मानित किया गया है वही श्री रज्जब उमर कार्यक्रम अधिकारी तथा प्रभारी हिंदी अधिकारी का शासकीय कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने के उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिये "अखिल आकाशवाणी राजभाषा सम्मान-2006" से सम्मानित किया गया है। श्री रज्जब उमर को यह सम्मान 12 अक्तूबर, 2006 को आकाशवाणी महानिदेशालय नई दिल्ली के सभागृह में मुख्य कार्यकारी तथा महानिदेशक श्री ब्रजेश्वर सिंह के करकमलों द्वारा सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय और प्रसार भारती के उच्च अधिकारियों के समक्ष प्रदान किया गया।

श्री रज्जब उमर, कार्यक्रम अधिकारी के रूप में अपना उत्तरदायित्व निभाते हुये न केवल आदान एवं संवितरण अधिकारी का अतिरिक्त कार्यभार संभाला अपितु

प्रभारी हिंदी अधिकारी की जिम्मेदारियाँ भी बखूबी निभाई हैं। दिसंबर 2005 में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा आकाशवाणी नागपुर के निरीक्षण से संबंधित प्रश्नावली तैयार करने आदि कामों में विशेष उल्लेखनीय योगदान रहा है। इस कार्य में उन्हें महानिदेशालय में राजभाषा के संयुक्त निदेशक श्री सु. प्र. चौबे का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों और हिंदी कार्यशाला के नियमित आयोजनों में विशेष भूमिका रही है।

बैंक ऑफ बड़ौदा

यूरोप के विद्यार्थियों ने किया हिंदी का उद्घोष

यूरोप के विभिन्न देशों में आयोजित हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता के भारत भ्रमण पर आए विजेता विद्यार्थियों ने बैंक ऑफ बड़ौदा एवं अक्षरम् संस्था के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'साहित्यकारों एवं भाषाविदों के साथ संवाद' कार्यक्रम में धाराप्रवाह रूप में अपने विचार व्यक्त किए और भारत के प्रख्यात हिंदी साहित्यकारों एवं भाषाविदों से सीख भी ली। इस कार्यक्रम में रोमानिया, हंगरी, रूस, क्रोएशिया, एवं यू. के. के विभिन्न क्षेत्रों के विद्यार्थियों को सर्वश्री कन्हैया लाल नन्दन, श्री नरेन्द्र कोहली, डॉ. हरीश नवल, डॉ. प्रेम जनमेजय, डॉ. कमल कुमार, डॉ. लक्ष्मीकांत वाजपेयी, अनिल जोशी के साथ ही भाषाविद् डॉ. विमलेश कांति वर्मा, प्रो. जगन्नाथन, डॉ. धीरा वर्मा, डॉ. राजेश कुमार आदि ने उन्हें हिंदी भाषा के वर्तमान स्वरूप एवं भावी चुनौतियों से अवगत कराया तथा उनकी जिज्ञासाओं का भी समाधान किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में बैंक ऑफ बड़ौदा के उप महाप्रबंधक श्री ओ. एस. पिल्लै एवं वरिष्ठ प्रबंधक डॉ. जवाहर कर्नावट ने विद्यार्थियों तथा साहित्यकारों का स्वागत किया तथा बैंक में राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी।

इस कार्यक्रम में सुश्री ऐमोके तौके एवं सुश्री विओलेता चिबुक (रोमानिया), सुश्री अद्रैआ रौजावौल्जी (हंगरी), सुश्री तत्याना कपिलोवा एवं सुश्री बरकाया माया (रूस), सुश्री वान्या उर्लिचिच (क्रोएशिया) तथा वरूण राज शर्मा (यू. के.) ने अपनी हिंदी अध्ययन के प्रति अपनी रूचि को रेखांकित करते हुए काव्य पाठ भी किया।

आकाशवाणी पुणे

राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

आकाशवाणी पुणे में 14 सितंबर 2006 से 28 सितंबर 2006 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े का समापन 28 सितंबर, 2006 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मियों के केंद्र निदेशक श्री. शरद भोसले द्वारा प्रमाण-पत्र और नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। साथ ही उन कर्मियों को भी प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान किए गए जिन्होंने वर्ष भर हिंदी में उत्कृष्ट एवं सर्वाधिक कार्य किया।

भारतीय प्रसारण निगम, समाचार सेवा प्रभाग, आकाशवाणी, नई दिल्ली

राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन 28-9-2006 को दोपहर 3.00 बजे आकाशवाणी भवन के कांफ्रेंस हाल में महानिदेशक (समाचार) की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस समारोह का शुभारम्भ हिंदी अधिकारी के स्वागत भाषण से किया गया। अपने स्वागत भाषण में हिंदी अधिकारी ने महानिदेशक (स) महोदय व समारोह के मुख्य अतिथि व वरिष्ठ पत्रकार श्री कीर्ति अग्रवाल सहित उपस्थित अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि आकाशवाणी का हिंदी भाषा के साथ अटूट संबंध है। समाचार सेवा प्रभाग हिंदी समाचारों व समाचार आधारित अन्य कार्यक्रमों के माध्यम द्वारा जनमानस से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा हिंदी पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और उसमें बहुत साथियों ने पूरे उत्साह से भाग लिया।

अपर महानिदेशक (प्र.) श्री देवेन्द्र मलिक ने पखवाड़े के दौरान आयोजित सभी कार्यक्रमों के विषय में रिपोर्ट

प्रस्तुत किया । श्री मलिक ने कहा कि इस प्रभाग में सभी हिंदी में काम करने की रुचि रखते हैं इस का परिणाम है कि आज अधिकतर परिपत्र, ज्ञापन, कार्यालय आदेश इत्यादि हिंदी में भी जारी किए जा रह हैं । साथ ही श्री मलिक ने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के बारे में बताया कि इस वर्ष अधिकांश प्रतियोगिताएं तीन वर्गों में यानि हिंदी भाषी/अहिंदी भाषी/वर्ग 'घ' में आयोजित की गई और इसमें सभी वर्गों ने उत्साह से प्रतियोगिताओं में भाग लिया । श्री मलिक ने कहा कि प्रभाग का नूतन प्रयास "समाचार भारती" गृह पत्रिका में महानिदेशक (स) ने पत्रिका की सामग्री चयन में भी रुचि दिखाई व समय-समय पर मार्गनिर्देशन भी दिया । श्री मलिक ने यह भी बताया इस वर्ष समाचार सेवा प्रभाग ने 5000 सरल सुगम शब्दों का संकलन किया है जिनका प्रयोग प्रादेशिक समाचार इकाइयां हिंदी समाचार बुलेटिनों के प्रसारण में करेंगी । गृह पत्रिका "समाचार भारती" के प्रथम प्रति का विमोचन मुख्य अतिथि श्री कीर्ति अग्रवाल वरिष्ठ पत्रकार ने किया । इस अवसर पर मुख्यअतिथि ने तत्कालीन गृहमंत्री व प्रथम सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री सरदार वल्लभ भाई पटेल के साथ बातचीत के उन अंशों को सभी उपस्थित जनों के समक्ष रखा जब श्री पटेल ने उन्हें यह कहा था कि समाचार किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं होते । इसीलिए समाचारों की भाषा सांस्कृतिक व साहित्यिक नहीं होनी चाहिए । समाचार खास व आम दोनों तरह के लोगों के लिए होते हैं इसलिए सरल, सुबोध व सुगम भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि समाचारों की ग्राह्यता हो ।

इसके पश्चात् महानिदेशक ने सफल प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया । पुरस्कृत अधिकारी/कर्मचारी अत्यंत ही उत्साहित थे क्योंकि उन्हें ये पुरस्कार महानिदेशक प्रदान कर रहे थे । इसके पश्चात् महानिदेशक महोदय ने उपस्थित सभाजनों को संबोधित करते हुए कहा कि आकाशवाणी शब्द आकाश व वाणी के समावेश से सृजित हुआ है । वाणी 'शब्द' है और आकाश 'अंतरिक्ष' । शब्द की उत्पत्ति आकाशीय है, शब्द नाद है शब्द ब्रह्म है । यही कारण है कि आकाश व वाणी का अटूट संबंध है । वाणी किसी भी भाषा की अभिव्यक्ति है । अभिव्यक्ति किसी भी समाज की प्रगति व गतिशीलता का परिचायक है । राष्ट्रभाषा हिंदी अभिव्यक्ति है देवनागरी लिपि के शब्दों की । हिंदी आकाश में चमकते हुए सूर्य के समान शाश्वत् है, ओजस्वी है, प्रखर है । हिंदी एक संगीतमय भाषा है तभी तो भारत की संत परम्परा के कबीर, रहीम, मीरा, सूरदास सभी ने अपने अनमोल वचनों व विचारधारा को हिंदी भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति दी । जिससे आज तक भारतीय जनमानस स्वयं को धन्य मानता है ।

केनरा बैंक राजभाषा कक्ष, अंचल कार्यालय, राँची

आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन

रांची स्थित स्थानीय बैंकों, वित्तीय संस्थानों के लिए राजभाषा कार्यक्रम मेकान लि. के प्रेक्षागृह में केनरा बैंक द्वारा आयोजित किया गया । कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था समाज की सेवा के साथ-साथ राजभाषा का विकास करना, इसके लिए आशुभाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था जिसमें मेकान लिमिटेड, बीएसएनएल, यूको बैंक एसबीआई के कर्मचारियों ने भाग लिया ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केनरा बैंक के उपमहाप्रबंधक आर. आर. शर्मा थे । प्रतियोगिता के निर्णायक पी. के. हलदल सहायक प्रबंधक केनरा बैंक, डा. एस. ओ. झा सहायक निदेशक, उपनिदेशक वेद प्रकाश गौर और मेकान के निर्देशक मिथिलेश कुमार देशमुख थे । इसमें प्रथम स्थान श्री अनिल कु. सिंह (बीएसएनएल), द्वितीय स्थान श्री मारुत नंदन सिंह (सीपीएमसी), तृतीय स्थान श्री एन. के. झा (देना बैंक) तथा सांत्वना पुरुस्कार सुश्री निक्की राज (मेकान) व श्री कृष्ण नंदन प्रसाद (बीएसएनएल), को प्राप्त हुआ जिन्हें दिनांक 18-08-2006 के नरकाल बैठक में केनरा बैंक की तरफ से नकद पुरुस्कार दिया गया । ■

प्रशिक्षण

नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लि. मुख्यालय फरीदाबाद

निगम मुख्यालय में एक माह के अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम

निगम में राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति तथा राजभाषा कार्यान्वयन में अधिक से अधिक कार्मिकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से राजभाषा प्रशिक्षण कार्यक्रमों/कार्यशालाओं आदि का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है । इसी अनुक्रम में निगम मुख्यालय के विभिन्न विभागों में कार्यरत राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण एवं मानव संसाधन विकास विभाग के सहयोग एवं केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, भारत सरकार के सौजन्य से दिनांक 31 जुलाई से 30 अगस्त, 2006 तक एक माह का अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री उपेन्द्र चोपड़ा महा प्रबंधक (मानव संसाधन, कारपोरेट संचार व राजभाषा) ने किया । इस अवसर पर केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के निदेशक डॉ. विचार दास एवं उप निदेशेक डॉ. कुसुम अग्रवाल भी उपस्थित थे ।

कार्यक्रम के उद्घाटन (31-7-2006) के अवसर पर सर्वप्रथम प्रबंधक-प्रभारी (राजभाषा), डॉ. राजबीर सिंह ने उपस्थित सभी वरिष्ठ अधिकारियों व प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि हम निगम में राजभाषा हिंदी के समग्र विकास के लिए कृत संकल्प हैं तथा हिंदी के महान साहित्यकार, कलम के सिपाही मुंशी प्रेम चंद जी की 125वीं जयंती के दिन इस कार्यक्रम का शुभारंभ एक सुखद संयोग है । इस अवसर पर निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, डॉ. विचार दास जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि अंनुवाद एक महत्वपूर्ण विधा है, अतः अच्छे अनुवाद के लिए स्रोत भाषा व लक्ष्य भाषा पर समान अधिकार होना चाहिए तथा विश्लेषण की क्षमता होनी चाहिए । महा प्रबंधक (मानव संसाधन, कारपोरेट संचार व राजभाषा) व अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति, श्री उपेंद्र चोपड़ा जी ने प्रतिभागियों से केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के प्रबुद्ध व्याख्याताओं द्वारा दिए जाने वाले ज्ञान को मनोयोग से ग्रहण करने का आह्वान किया । उन्होंने प्रशिक्षण के दौरान विभागों में प्रयोग में लाए जा रहे विभिन्न अंग्रेजी प्रारूपों के अनुवाद का अभ्यास करने और उसे संकलित रूप में प्रकाशित कराने का भी सुझाव दिया । उनके सुझाव के अनुरूप विभिन्न विभागों में प्रयोग में लाए जा रहे मानक प्रारूपों और प्रपत्रों को द्विभाषी रूप में मुद्रित कराकर उसकी प्रति सभी प्रतिभागियों को प्रदान की गई ।

प्रशिक्षण के दौरान केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो से आए विभिन्न सुविज्ञ अधिकारियों द्वारा प्रतिभागियों को राजभाषा नियम अधिनियम, अनुवाद के सिद्धांत व प्रक्रिया, हिंदी अंग्रेजी अनुवाद की समस्याएं, वर्तनी का मानकीकरण, पारिभाषिक/प्रशासनिक शब्दावली आदि विषयों पर विस्तार से जानकारी दी गई, संबंधित विषय का अभ्यास कराया गया तथा समापन से पूर्व प्रमाण-पत्र परीक्षा भी ली गई ।

इस प्रशिक्षण के समापन का आयोजन दिनांक 30-8-2006 को किया गया । इस अवसर पर सर्वप्रथम प्रबंधक-प्रभारी (राजभाषा) डॉ. राजबीर सिंह ने सभी उपस्थित वरिष्ठ अधिकारियों एवं प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया । समापन समारोह कार्यक्रम की अगली कड़ी के रूप में महा प्रबंधक (मानव संसाधन, कारपोरेट संचार व राजभाषा), श्री उपेन्द्र चोपड़ा महोदय के कर कमलों से "मानक प्रारूप व प्रपत्र" पुस्तिका का विमोचन किया गया तथा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र के साथ-साथ संदर्भ सामग्री के तौर पर प्रशासनिक शब्दावली तथा अंग्रेजी-हिंदी तथा हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश प्रदान किए गए ।

इस अवसर पर केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के अधिकारियों सहित महा प्रबंधक (प्रशिक्षण एवं मानव संसाधन) एवं महा प्रबंधक (मानव संसाधन, कारपोरेट संचार व राजभाषा) ने उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रशिक्षण का उद्देश्य मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि करना है । प्रशिक्षण या ज्ञान का कभी समापन नहीं होता । यह तो मात्र एक पड़ाव है । आप सबको इस प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान का उपयोग करते हुए अपने-अपने स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में तत्पर रहना है, जिससे हमारा निगम राजभाषा के क्षेत्र में नई-नई उपलब्धियां प्राप्त करने में समर्थ हो सके । इसके साथ ही अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ । ■

आदेश-अनुदेश

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, लोकनायक भवन, खान मार्केट, नई दिल्ली-110003 का दिनांक 26 दिसंबर, 2006 का का.ज्ञा. सं. 11014/22/2005-रा.भा. (प.)

कार्यालय ज्ञापन

विषय : सरकारी कार्यालयों के पुस्तकालयों में हिंदी पुस्तकों की खरीद ।

राजभाषा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष हिंदी की स्तरीय पुस्तकों की एक सूची तैयार की जाती है ताकि केंद्र सरकार के कार्यालय/बैंक/उपक्रम आदि अपने पुस्तकालयों के लिए पुस्तकों की खरीद कर सके । इसी क्रम में "चयनित हिंदी पुस्तकों की सूची-2006" तैयार कर ली गई है, जो राजभाषा के पोर्टल rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है । कृपया सूची पोर्टल से डाउन लोड कर लें । सूची को पोर्टल पर उपलब्ध करवा दिया गया है इसलिए इसकी प्रिंटेड प्रतियां विभाग द्वारा कार्यालयों को अलग से उपलब्ध नहीं कराई जाएगी ।

2. सभी मंत्रालय/विभाग कृपया राजभाषा विभाग द्वारा जारी पुस्तक सूची में से अपने-अपने पुस्तकालयों तथा अपने संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि के लिए हिंदी पुस्तकों की खरीद हेतु निर्देश जारी करें ।

ह.

बी.सी. मंडल,

निदेशक (अनुसंधान)

पाठकों के पत्र

राजभाषा भारती (जुलाई-सितंबर, 2005) अंक में अमरेंद्र कुमार मिश्र का "आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और उनका रचनात्मक संसार" तथा ईश्वरचंद्र मिश्र के निबंध "अनुवाद और भाषाओं का व्यतिरेकी अध्ययन" शोधकर्त्ताओं के लिए अच्छी सामग्री है । फिर हास-परिहास शीर्षक के अंतर्गत मदन गुप्ता का "क्यों हो रिटायर" वरीय पाठकों के लिए काफी मनुहारी है ।

–प्रधान संपादक,
नई मशाल, प्रमुख स्वतंत्र हिंदी साप्ताहिक, मंगल बाजार, मुंगेर-811201

राजभाषा भारती अंक 112 का संपादकीय राजभाषा कार्मिकों के साथ-साथ पाठकों के लिए भी काफी प्रेरणादायक है । पत्रिका "चिंतन", "साहित्यिक", "विश्व हिंदी", "दर्शन", 'पर्यावरण" तथा "विविध" आदि पाँच स्तंभों में विभाजित है जिनमें उन विषयों के विशेषज्ञ के खोजपूर्ण और ज्ञानवर्द्धक लेख दिए गए हैं । साथ ही "राजभाषा संबंधी गतिविधियां" को दर्शाया गया है । ऐसी उपादेय सामग्री से युक्त पत्रिका को यदि गागर में सागर कह दिया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी ।

–गजानंद गुप्त मंत्री,
राष्ट्रभाषा प्रचार परिषद, 19-3-946, शमशीरगँज, हैदराबाद-500053

राजभाषा भारती अंक 113 भारतीयता, भारतीय एकात्य चेतना की सशक्त संवाहक राष्ट्रवाणी, "राजभाषा" हिंदी की सार्थक प्रतियां हैं–"राजभाषा भारती" जो गहन गंभीर विषयों की अभिभावक है । आप जैसे गुणी, गुणज्ञ संपादक के संपोषण में पत्रिका का व्यतिरेक अनूठा बना है ।

साधुवाद स्वीकारें ।

–र. शौरिराजन,
नया न.-24, 41-स्ट्रीट, 8-सैक्टर, के.के. नगर, चेन्नै-600078

राजभाषा भारती राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन तथा संबंधित सभी गतिविधियों में सकारात्मक भूमिका निभा रही है । डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना का लेख "उच्च शिक्षा में हिंदी माध्यम" एक अच्छा चिंतन है । डॉ. राजेन्द्र प्रताप सिंह के लेख "राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का राष्ट्रभाषा दर्शन" में गांधी जी के हिंदी-प्रेम को सौदाहरण बताया गया है ।

पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों को हमारी बधाइयां और ढेर सारी शुभकामनाएं ।

–रवींद्र प्रसाद सिंह,
सहायक महाप्रबंधक (हिंदी), इंडस्ट्रियल बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड,
कार्यालय जनपथ शाखा, आई.डी.बी.आई. हाउस, जनपथ, भुवनेश्वर-751022 (ओडिशा)

राजभाषा भारती (जनवरी-मार्च, 2006) ''भारतीय राष्ट्रीय अखण्डता : भाषाई समन्वय'' तथा ''प्रयोजन मूलक हिंदी'' दोनों लेख ज्ञानवर्द्धक और रोचक हैं ।

-मनोहर धरफले,
173, साकेत नगर, इंदौर, मध्य प्रदेश-452018

राजभाषा भारती (जनवरी-मार्च, 2006) में देश के विभिन्न भागों में राजभाषा संबंधी गतिविधियों की महत्वपूर्ण जानकारी सहित चिंतन, साहित्य तथा पर्यावरण से संबंधित आलेख पठनीय एवं संग्रहणीय बनाते हैं ।

-विजय प्रकाश बेरी,
हिंदी प्रचारक (पत्रिका), सी-21/30, पिशाचमोचन, वाराणसी-221010

राजभाषा भारती (जनवरी-मार्च, 2006) अंक में प्रकाशित सारी सामग्री पठनीय है और उपादेय भी है । कुशल संपादन के लिए अभिनंदन ।

-के.जी. बालकृष्णन पिल्लै,
सदस्य केंद्रीय समिति, गीता भवन, पेरूर कटा, तिरुवनंतपुरम-695005

राजभाषा भारती (जुलाई-सितंबर, 2005) का अंक काफी ज्ञानवर्द्धक तथा उपादेय है । इसमें ''मुंशी प्रेमचंद-कलम का सिपाही'' और ''आचार्य रामचंद्र शुक्ल तथा उनका रचना संसार''—ये दो लेख पढ़कर ऐसा प्रतीत हुआ जैसे राजभाषा के रचना और विकास के विविध पहलुओं पर इनकी कलम सिरमौर गुरुवर्य स्तर की अति श्रेष्ठतम कलम कहलाएगी ।

धन्यवाद ।

-हरिश्चन्द्र सागरमल अग्रवाल,
शिवकृपा भवन, वानखडे नगर,
डाबकी रोड, पोस्ट अकोला (विदर्भ), महाराष्ट्र-444002

राजभाषा भारती 112 अंक (जनवरी-मार्च, 2006) में प्रकाशित सभी रचनाएँ सराहनीय हैं । इसमें डॉ. देवेंद्र उपाध्याय-अनुवाद ''सांस्कृतिक और भाषिक विविधता की अनुभूति'' एवं सुश्री सरला तलवार ''विचारों की दुनिया'' बहुत अच्छी लगी । पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल व उनके सहयोगी बधाई के पात्र हैं ।

पत्रिका के लिए मेरी शुभकामनाएं ।

-डी.के. माथुर,
कल्याण अधिकारी/राजभाषा कक्ष, भारतीय लेखा तथा परीक्षा विभाग,
महालेखाकार (लेखा व हक), राजस्थान-302005

MGIPRRND—354 HA/2007—4000

बैंक ऑफ इंडिया द्वारा दिनांक 08-12-2006 को आयोजित 'राजभाषा संगोष्ठी' में राजभाषा विभाग के निदेशक (नीति एवं कार्यान्वयन) श्री बृजमोहन सिंह नेगी एवं महाप्रबंधक श्री हरजीत सिंह भाटिया राजभाषा विभाग, नई दिल्ली अंचल द्वारा तैयार पुस्तिका 'वरिष्ठ कार्यपालकों हेतु हिंदी में अभिव्यक्तियां एवं बैंकिंग शब्दावली' का विमोचन करते हुए ।

महानिदेशालय, भा.ति.सी. पुलिस द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला के "प्रमाणपत्र वितरण समारोह" के मुख्य अतिथि श्री प्रमोद अस्थाना, भा.पु.से., उप महानिरीक्षक (प्रशासन) हिंदी कार्यशाला के प्रशिक्षणार्थी को प्रमाणपत्र एवं सहायक साहित्य प्रदान करते हुए ।

पं. सं. 3246/77
आई एस एम एन 0970-9398

राजभाषा हिंदी स्लोगन

01. राजभाषा हिंदी का मत करो मात्र शृंगार ।
इसको बनाओ कार्यालय में प्रतिदिन का व्यवहार ।।

02. राजभाषा हिंदी में करना हर हस्ताक्षर ।
उत्तरदायित्व अपना निभाओ जी भर कर ।।

03. राजभाषा पखवाड़े से आगे हम चलें।
मास वर्ष से होते हुए राजभाषा जीवन की मंज़िल तक चलें ।।

04. अंग्रेजी की अमावस्या का दूर करो अंधकार ।
हिंदी की पूर्णिमा का लाओ तुम प्रकाश ।।

05. राजभाषा हिंदी में करते रहो हर काम ।
फल निश्चय ही मिलेगा होगा खूब नाम ।।

06. हिंदी पथ पर चलते रहना ।
यात्रा यह पूरी करके रहना ।।

07. हिंदी से तुम कर लो प्रीत ।
इसे बना लो तुम अपना मीत ।।

08. हिंदी है भारत की वाणी ।
हिंदी में काम करने की हमने ठानी ।।

09. जब तक सूरज चांद रहेगा ।
जग में हिंदी का नाम रहेगा ।।

10. सहज सरल लिपि देवनागरी ।
हर देश भक्त को यह है प्यारी ।।

11. हिंदी दिवस हर वर्ष याद दिलाता ।
बनाए रखना सदा हिंदी से नाता ।।

12. जितना अधिक करोगे हिंदी में काम ।
उतना ही चमकेगा जग में तुम्हारा नाम ।।

13. हिंदी हमारी माता है ।
जन्म भर का नाता है ।।

14. जो हिंदी को अपनाएगा ।
वह देश भक्त कहलाएगा ।।

15. हिंदी में हर पत्र लिखेंगे ।
संविधान की लाज रखेंगे ।।

16. हिंदी हमें जान से प्यारी ।
देवनागरी सबसे न्यारी ।।

17. महके हिंदी की फुलवारी ।
सदा रहे इसकी हरियाली ।।

18. ढाई आखर "हिंदी" के ।
पढ़े सो ज्ञानी होय ।।

19. जिनकी सूरत से नहीं मिलती किसी की सूरत ।
हम सारे जहां में हिंदी की तस्वीर लिए फिरते हैं ।।

20. मेरा भारत देश महान ।
हिंदी से है इसकी शान ।।

21. प्रज्वलित रखो हिंदी का चिराग ।
हे देशवासी तू अब तो जाग ।।

22. निखर जाएगा भारत का चित्र ।
हिंदी को गर बना लो मित्र ।।

23. भारत मां के भाल की बिंदी ।
जन जन की भाषा है हिंदी ।।

24. कीजिए हिंदी में शत प्रतिशत पत्राचार ।
मिलेगी हर शील्ड पाओगे हर पुरस्कार ।।

25. राजभाषा हिंदी का जलाएं दीप ।
यही कामना करता आज मैं दिलीप ।।

26. राजभाषा हिंदी को नहीं चाहिए मात्र सम्मान ।
कार्यालय के हर काम में दीजिए इसे स्थान ।।

27. कथनी करनी का दूर करो अब अंतर ।
हिंदी में ही कलम को चलाते रहो निरंतर ।।

28. राजभाषा हिंदी में काम करना हो हर भारतवासी का संकल्प ।
संविधान में यह प्रावधान हो नहीं हो कोई विकल्प ।।

29. हिंदी का बने हर देशवासी भक्त ।
इच्छा हो तो मिल ही जाएगा वक्त ।।

30. राजभाषा से है शान हमारी ।
हिंदी में है जान हमारी ।।

दलीप भाटिया, अणुशक्ति (कोटा-राजस्थान)

भारत सरकार, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 के लिए गजराज सिंह, उप संपादक द्वारा प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली-110064 द्वारा मुद्रित ।